१. राजस्थानी भाग १
२. राजस्थानी भाग २
३. राजस्थानी कहावतां भाग १
४. राजस्थानी कहावतां भाग २

राजस्थानी साहित्य परिषद्,
४, जगमोहन मल्लिक लेन,
कळकत्तो

सबड़का

साहित्य परिषद् रा पोथा

: प्रकाशण :

१. राजस्थानी भाग १
२. राजस्थानी भाग २
३. राजस्थानी कहावतां भाग १
४. राजस्थानी कहावतां भाग २

राजस्थानी साहित्य परिषद्,
४, जगमोहन मल्लिक लेन,
कळकत्तो

खबड़का

साहित्य परिषद् रा बीजा
: प्रकासण :

1. राजस्थानी भाग १
2. राजस्थानी भाग २
3. राजस्थानी कहावतां भाग १
4. राजस्थानी कहावतां भाग २

राजस्थानी साहित्य परिषद्,
४, जगमोहन मल्लिक लेन,
कळकत्तो

खड़का

प्रकाशक
राजस्थानी साहित्य परिषद,
४ जगमोहन मल्लिक लेन,
कलकत्तो

पैलीवार एक हजार

मोल तीन रुपिया

मुद्रक
श्री साधना प्रेस,
रतनगढ़ (राजस्थान)

प्रकासकीय

आज सूं कोई पच्चीस बरसां पैली राजस्थानी भासा अर साहित्य रै प्रचार-प्रसार खातर राजस्थानी साहित्य परिषद री कलकत्तै में थापना हुयी। आ परिषद 'राजस्थानी' ग्रन्थमाळा तथा 'राजस्थानी कहावतां' रा दो-दो भाग परिषद प्रकासित करया।

बिचाळै-बीच गतिसीलता कम पड़गी। अबार सारसै दिनां जद भारत रा नामी सोध-विद्वान श्री अगरचन्दजी नाहटा कलकत्तै पधारया तो सेठ श्री मोहनलालजी दूगड़ री अध्यक्षता में परिषद री एक सभा हुयी।

राजस्थानी साहित्य री परिचय देवते श्री नाहटजी जोरदार सबदां में अपील करी कै जे आपां राजस्थान री संस्कृति नै कायम राखणी चावां हां, तो आपां री सगळां सूं पैलो फरज है कै आपां मायड़भासा राजस्थानी नै अपणावां। जिकी तई राजस्थानी भारत री चोखी मानीती भासावां री गिणती में नई आसी मायड़ भासा रा रैंमी मुख सूं सांस नई ले सकसी।

श्री अगरचन्दजी बतायो कै आधुनिक राजस्थानी ग्रन्थां रो तेजी सूं निरमाण हुय रयो है, अर जरूरत इण बात री है कै श्रेष्ठ ग्रन्थां नै बेगै सूं बेगा प्रकास में लाया जावै ताकि लेखकां री कलम रै काट नई लागै, अर बै मां-राजस्थानी रै भंडार नै बराबर भरता रैवै। जरूरत आ भी है कै पाठक आं ग्रन्थां नै आपरा खुदरा समझ'र अपणावै, खरीदै अर पढै।

नाहटेजी रै मातरा सूं श्री डूंगरसी घणा प्रभावित हुया अर उणी वगत बां राजस्थानी ग्रंथां रै प्रकासण साह ५०००) प्रदान करया अर भविष्य में भी पूरो सहयोग देवण रो आश्वासन दियो।

श्री श्रीलाल नथमलजी जोशी रो ग्रन्थ 'सबड़का' इण रकम सूं प्रकासित हुयण आळो पैली क्रिती है। 'सबड़का' खासतौर सूं हास्यरस री पोथी है। हास्यरस रो हाल हिन्दी में भी अभाव है, इण कारण परिषद नैं इण बात रो पूरो भरोसो है कै जोशीजी री आ रचना राजस्थानी समाज तो घणैं चाव अर कोड सूं पढ़सी ई, पण राजस्थानी सूं नैड़ी बीजी भासावां, (हिन्दी, गुजराती, पंजाबी, आदि), बोलणियां लोकां नैं भी दाय आसी।

'सबड़का' पछै एक और सोवणी पोथी पाठकां री सेवा में परिषद हाजर करसी— "इक्कैवाळो" जिण मे प्रसिद्ध साहित्यकार श्री मुरलीधरजी व्यास री लेखणी सूं कोरयोड़ी काळजो छूवणी रचनावां है।

परिषद रो उद्देश्य राजस्थानी भासा रो प्रचार मात्र है, इणी कारण प्रकासणां रो मोल कम-सूं-कम राख्यो गयो है। आसा है कै राजस्थानी पाठक आं प्रकासणां रो घणो आदर करसी अर बीजी पोथ्यां प्रकासित करण साह परिषद नैं प्रोत्साहित करसी।

भंवरलाल नाहटो
मंत्री,
राजस्थानी साहित्य परिषद
कलकत्तो

प्रस्तावना

अंगरेजी मे जिण नै 'स्कैच' कैवे, उणी नै हिन्दी में 'रेखा-चित्र', अर राजस्थानी में 'रेखाचित्तर' कैवे। साहित मे रेखाचित्तर लिखण आळा आपरै ध्यान सांनी रै जीवण रै केई अंग रो वरणन उणी तरीकै सू करै जियां चितारो आपरै चितराम नै चितारै। रेखाचित्तर रो विसै कोई भी होणो सकै है। इण में केई मिनख, लुगाई, जिनावर, पंखेरु, रूंख, हवेली, गांव अथवा सैर रो वरणन करयो जा सकै है। रेखाचित्तर में सबदां सूं इसो चित्तर मांड्यो जावै कै पढार रै सामनै, बाचते पाण वरणित विसै री मूरती साकार हुजावै। लिखार आपरै थोड़े-सै वरणन में विसै रो इसो जबरो परभाव न्हांखे कै बीनै सहजो ई बिसरयो नई जावै। लिखार थारै परगट ना करो, पण विसै खातर उण री सुवयोड़ी सहानुभूति भी पढारां मे थथई हुय ई जावै।

रेखाचित्तर रो विसै असली भी हू सकै, अर कल्पित भी हू सकै। रेखाचित्तर-कार आपरै विसै नै देख'र चावै तो उण रो आज ई वरणन कर सकै, अर चावै तो दो-च्यार बरस ठैर'र कर सकै है। रेखाचित्तर मांडण मे सफळ बो हो'ज लिखार हू सकै जिको आपरै च्यारू-मेर री जिंदगाणी आंख्यां उघाड़'र देखै, जिको खूब

... नपाण करै, घर दारां, माइं, माळी मांय रै लोकां
संपर्क में आवै। उण में विशेषता करण सारू कुणो घर सावं
मामूली भी हुवणी चाईजै। पारखी पीढ़ यूं सिरा रै कारणे से
बणाव, घर हिवड़ै में हूंस नहीं उठै, वो धारा रेखाचित्र कोई नीं
लिख सकै। पण रेखा चित्रै में कोरो है घणो बड़ाई-बुराई नहीं
करणी चाईजै, इण सूं रेखाचित्र रो फूटरापो पूरो हुजावै।

रेखाचित्र छोटो है होणो चाईजै। लिखार में चाईजै के
कम सूं कम सबदां में काम में लावै। वां सबदां सूं वो पाठकां रै
रो इसो चितराम खींचै के जे कोई विणां नै देखण रो मौको पड़ै, तो
झट ओळखीज जावै।

रेखाचित्र रो इतिहास घणो जूनो कोनी। हिन्दी में तो आ
काल री चीज है पण अंगरेजी में भी घणी पुराणी कोनी।
अंगरेजी में ए जी. गार्डिनर घणा सोवणा रेखाचित्र मांड्या, इत्ता
सोवणा, कै पढ़ार पढ़ीरता रैवता। अंगरेजी रा पढ़ार वांरै रेखा-
चितरां मायं सट्ट् हा। ब्याक्‍ मेर लोक उणां री बात करता।
गार्डिनर रै चितरां रो असर हिरदै में हूंवतो। इणी भांत रूस रा
लिखार तुर्गनेव हा। वांरी लेखणी सूं भी अनूठा चितराम उतरया।
वांरो परभाव रूस रै लोकां मायं इसो पड़यो कै वां आपरी मोकळी
कुरीत्यां त्याग दी। अमरीकी लिखार वाशिंग्टन इरविंग अर प्रेसन भी इण
खेतर में मोकळो नांव कमायो।

भारत में रेखाचित्र लिखारां में श्री के. एस.
वेंकटरमनी अर के. ईश्वरदत्त रा नांव अंगरेजी मे लिखण

दास रै चितरां वई घणा सांवा। चतुर्वेदीजी तो फेर भी आपरै चितरां नैं घटनावां रै बरणन सूं रोचक बणाया है, पण बीजां इण बात रो बौत कम ध्यान राख्यो है।

श्री जोशीजी री लिखणी सूं मंड्योड़ा चितार आपरी रोचकता अर सुन्दरता में इत्ता सांगोपांग है कै दूजा हिन्दी रा लिखार बांरी होड नई कर सकै। हिन्दी रै एक मानीतै विदवान रो कैवणो है कै "मक्खण-सा" री जोड़ रो रेखाचित्तर हिन्दी में है इज कोनी। एक बीजै विदवान री राय में "गुलछर्रामल" राजस्थानी री 'प्रतिनिधि' रचना है। एक राजस्थानी विद्वान "फर्रामल" नैं राजस्थानी साहित री 'अमर कृति' कैय'र बखाणी है। वास्तव में "सबड़का" रा रेखाचित्तर एक एकै सूं सवाया है।

श्री जोशी रा रेखाचित्तर एक इसो सुवाद अर रस देवै जिण सूं एकै-सागै कविता, कांणी, लेख अर संस्मरण रो आणंद आवै। सरसता आरै चितरां री खास विसेसता है। जागा-जागा हंसी री लकोर खंच्योड़ी है। लैण-लैण में भांत-भांत रै रस रा सबड़का भरया पड़या है। पढतां ई पैलो पढार मुळकै, फेर सबड़कै रो सुवाद आयां फाट'र हंसै। "बाबूजी" रेखाचित्तर में बाबू आर्थ साब री रोस रो बरणन करतो बैठा लिख्यो है– "कदेई-कदेई जानकीदासजी रै मूंकयणै आयै साब अमूज'र भुंभळावण लाग जावै, जद रीस में कैवै– 'डंकी' (गधो), तो बाबूजी कैवै–'यस, सर' (हां, साब)। साब कैवै– 'मंकी' (बांदरो), तो बाबूजी कैवै– 'यस, सर'(हां साब)!"

इण तरै लिखार जागा-जागा हंसी रो फुंवारो छुडाय'र विसै

सायं आपरी मांयली सहानुभूति भी जरूर देखाळै।

रेखाचितरां रा नांव भी गुदगुदी उपजावै जिसा है, जिणां नै सुणतांई आधो पड़धो साको तो मंड जावै, जियां– फरांमल, गुलछर्रामल, फदड़पंच, रँडयो, रूसाणियां अचारजजी आदि।

श्री जोशीजी रै रेखा चितरां मे किसै नै थोड़ा-सा सब्दां में साकार करण री विसेसता है। जियां चितरकार थोडी-सी आडी-अँवळी लकीरां खेंच'र आपरो चित्तर त्यार करै, उणी तरै जोशीजी रै रेखाचितरां मे थोड़ा-सा'क सब्द ई किसै नै लाय'र सामो ऊभाण दै। "गुलछर्रामल" रै सरु मे लिख्यो है– "मलराइज धोती, मदरास मील रो कोट, पगां मे देसी पगरखी, कदेई-कदेई मोजा भी, माथै ऊपर टीपाटीप केसरिया पाग, खांधै ऊपर गमछो, जिको जूता अर मूंडो दोनूं पूंछण नै आडो आवै, कद सरासरी, डौल-डौल गठीलो, अखाड़े मे कुस्ती सूं त्यार हुयोड़ो हुवै जिसो, मूंछ्यां फिड़कावरी, चैरै ऊपर मुळक- अ है गुलछर्रामलजी ··· ।" लिखार रै इण वरणन रै आधार मायं हजारूं मिनखां मे भी गुलछर्रामलजी छाना नईं रैवै, अर बानै जाणन आळा पढतां ई पिछाण लेवै कै गुलछर्रामलजी कुण है।

"सबड़का" री उत्कृष्टता री एक कारण है लिखार री राजस्थानी भासा मायं अनोखो इधकार। श्री जोशीजी राजस्थानी रा मानीता गद्य-लिखार है। आप आछा कांणीकार, अर राजस्थानी भासा रै पैलड़ै उपन्यास "आभै पटकी" रा लिखार है। रेखा चितरां में तो भासा री प्रौढ़ता अर प्रांजळता और भी निखरगी है।

बड़ै लोकां रा चित्तर उतारण आळा तो घणा ई लिखार है,

घर विध री

आज सूं कोई चवदै बरसां पैली जद प्रो० नरोत्तमदास जी स्वामी राजस्थानी साहित्य पीठ री साप्ताहिक बैठक श्री गुणप्रकाशक सज्जनालय, बीकानेर, में बुलाया करता, बठै हूं भी राजस्थानी री रचनावां सुणाया करतो । वां रचनावां में एक रचना ही 'फर्रामल', जिकी स्वामीजी रै दाय आयी अर बां 'फर्रामल' नैं जोधपुर सूं छपणियै, भाई श्रीमन्तकुमारजी व्यास रै "मारवाड़ी" छापै नै भेज दियो । श्रीमन्तजी सूं मिल्यां मालम पड़ी कै 'फर्रामल' बानै घणो आछो लाग्यो, अर बां कंयो, कित्ता ई लोक 'फर्रामल' माथै मरै है । श्रीमन्तजी मनै इणी तरै रा और चितराम लिखण री सला दी।

बीकानेर } नरोत्तमदास स्वामी
२७ जून, १९६० ई० } चन्द्रदान चारण

घर विध री

आज सूं कोई चवदै बरसां पैली जद प्रो० नरोत्तमदास जी स्वामी राजस्थानी साहित्य पीठ री साप्ताहिक बैठक श्री गुणप्रकाशक सज्जनालय, बीकानेर, में बुलाया करता, बठै हूं भी राजस्थानी री रचनावां सुणाया करतो । आं रचनावां मे एक रचना ही 'फर्रामल', जिकी स्वामीजी रै दाय आयी अर वां 'फर्रामल' नै जोधपुर सूं छपणियै, भाई श्रीमन्तकुमारजी व्यास रै "मारवाड़ी" छापै नै भेज दियो । श्रीमन्तजी सूं मिल्या मालम पड़ी कै 'फर्रामल' वांनै घणो आछो लाग्यो, अर वां कैयो, कित्ता ई लोक 'फर्रामल' मायै लट्टू है । श्रीमन्तजी मनैं इणी तरै रा और चितराम लिखण री सला दी ।

म्हारी लिगावट री आ एक कमजोरी है कै जे हूं सादो नितराम पोळागूं, तो ई बी में हंसी-मसखरी री पुट आवण सूं नईं रोक सकूं। इण री कारण ओ है कै बाळपणै सूं ई जद मनैं उदबुद्दी जिनस्या माथै हंसो आंवतो, तो रुकतो कोनी। चौथी किलास री बात मनैं याद है। एक छोरो हंसावण सारू बात छेड़'र आप इण तरै हंसतो वंध हुयग्यो जाणैं खटको वंध कर दियो हुवै, पण म्हारी मसीन चालू हुयगी। मास्टरजी सरू करचा वेंत लगावणा। पण वेंतां सूं जद हंसै जोर पकड़ लियो, तो दयाल गुरूजी वेंत छेड़ मेल दी, अर मनैं छूट दी– 'तूं एक वार धाप'र हंसलै।'

दसवीं किलास मे म्हारो एक साथी भूगोल रै घंटै में मूंढो भींच'र सिघ गूजांवतो। (साथी रो नाव वताऊँ कोनी, अवै सेठ हुयग्यो, सायद रीसाणो हुजावै।) सिघ गरजाय'र आप इसो भोळो वण'र वैठतो जाणै गरजण आळो कोई वीजो है। इण सूं म्हारो हंसो सरू हुय जांवतो। हूं रोकतो, पूरी कोसीस कर-कर, पण आखर ढंग इसो लागतो कै अवै फटाकै दई हंसो 'फट' फाटसी। निरी वार तो मास्टरजी रै डर सूं वारै निकळ जांवतो, पण कदेई-कदेई सीट माथै फटाको

वोल जांवतो ।

या कमजोरी हाल म्हारै मे बिसी ई है । हंसो सरू हुयां पछै वीनै रोकणो हात री बात कोनी । एक वार एक वौत वडे अफसर आगै खासा चवड़ै हंसो आयग्यो, अर वी पूछ लियो— 'हंसो कांय रो आवै है ?' जे सादा चितराम विगड्या है तो इण अैव रै कारण, जे व्यंग में रोचकता आयी है तो इण आदत रै कारण ।

इण आदत नै टाळ'र, चितराम री शिक्षा जे कठै सू ई मिली है, तो म्हारा पूजनीक माजी श्रीमती केसर बाई सूं । राजस्थानी भासा मायं आपरो सागीडो इधकार है । जद केई रै डौळियै रो वखाण करसी, तो नैणां आगै इसो चित्तर मेल देसी जिसो कैमरै अथवा कळाकार री कूंचो सूं नई उतरै । जदपी आपरा रेखा-चित्तर, हाल री घडी जवानी ई है, छप्या कोनी, पण वांनै सुणन रो मनै सदेई सौभाग रैयो । इण कारण जे केई भी चित्तर मे कठैई रोचकता आयी है, तो वा पूज माता जी सूं पायोडी शिक्षा रै परताप ।

जद प्रो० नरोत्तमदासजी बीकानेर सूं बदळी मायं

रा माजी श्रीमती केसर बाई

, पो वदी १ सं० १९५८, बीकानेर

पूजनीक माजी रै
पावन हातां में
घणैं मान
भेट

★

लेखक रा माजी

जलम. पो बद

पूजनीक माजी रै
पावन हाता में
घणां मान
मेट

★

सवड़का

-:सूची:-

फर्रामल

हूं वींनै मोकळा दिनां सूं ग्रोळखतो हो, ग्रर नांव ई सुण्यो– फर्रामल । मन मे विचार करयो कै इसो उदबुदो नांव कदेई सुण्यो तो कोनी, पण दुनिया घणी ई बडी है, ग्रर नांव ई मोकळा है । केई ग्रादमी रो नांव राम, ग्रथवा किसन सुणनै कदेई ग्रै भाव को उठ्यानी कै ग्रो ग्रादमी मरजादा परसोतम ग्रथवा सोळै कळा रो ग्रवतार है'क नीं, पण काई ठा क्यूं, ईरो नाव सुण'र म्हारी ग्रा जाणन री मनस्या हुयी कै ग्रो ग्रादमी साचेई फर्रामल यानी गप्पी-वाज तो को है नीक ।

ग्रेक दिन भाये संजोग सागो हुयग्यो । साथलां मांय सूं ग्रेक नै फर्रामल कैयो– "हूं तनै डाक्टर ग्रचारज रै बंगलै मे गुमास्तो रखाय देसूं, टैम घणो को हुवै नी– खाली सिंझ्या री सात सूं रात री इग्यारै बजी ताणी है । पण भई देख, काम जी तोड़नै करणो पड़ैला । महनो भी तो रुपियां सौ रो है । फेंबं कीनं है सौ रुपिया !"

४६९६

फर्नामन्न– थारै घरे माव री मोटर लेयनै आऊं आज तो हूं, अन नूं बंगलो जाण जावै जद काल सूं थारी माईकल माथै आपेई आवोकरे ।

हूं – भई, म्हारै माईकल तो है ई कोनी ।

फर्ना० – अरे, आछो मोन करयो ! थारो तीन महनां रो रुजगार तो हूं तनै म्हारै कनै सू आगूंच देसूं । अेक तो आलीम्यान माईकल ले लिये, अर भई देख, थारी आ ड्रैस (गाभा) ठीक कोनी । हूं रुपिया देऊ जिका में तीन मागीड़ा सूट करा लिये ।

हूं– इत्तो कराया पछै फेर मनै काई चाईजै ?

इत्ती वात हुया पछै बी दिन तो म्हे आप-आपरै काम गया । दूसरै दिन जद वो मिल्यो, तो मैं कयो– "उस्ताद ! रात तो हू निरो अडीक्यो, पण थारा तो पता ई नई ?

फर्ना०– रात तो इसो अळूझ्यो काम धंधै में कै दो वजी सोवण नै वेळा मिली ।

हूं– तो अबै आज आवणो मोटर लेयनै ?

फर्ना०– हूं टैम को देसकूं नी, आसूं जद आपेई आ जासूं ।

थोड़ा दिनां पछै वो मिल्यो तो झट बोल्यो ई– "मैं थारै नांव सूं साव नै अरजी देयदी । तनै हूं म्हारो छोटो

भाई समझमें थारे मानर इत्ती जान सड़ाऊं हूं। पन
तीन दिन ताणी काम री जांच (ट्रायल) करावं
पड़सी।

हूं– आं तीन दिनां रा पइसा तो मिलसी'क?

फर्रा०– ना, ना, आं तीन दिनां री फूटी कौडी ई
मिलैनी।

हूं– काम री पारख कुण करसी?

फर्रा० पारख! पारख हूं करसूं और कुण करसी।

हूं– तो अठै म्हारै दफ्तर में ई करलें।

फर्रा०– नईं, नईं, अठै नईं, साब रै बंगलै में होसी।

हूं– पारख करती वेळा म्हारो काई पख तो लेसी
नईं?

फर्रा०– पख लेऊं कोनी सागी बाप रो ई, तूं कि
चकारी में है! पण अबार जे तूं पूछै तो हूं तनै दुनि
भर री बातां बता सकूं हूं। म्हारै सूं कोई विद्या छा
कोनी।

थोड़ा दिनां पछै फर्रामल मिल्यो तो बोल्यो– "का–
री पारख तीन दिन नईं, पन्द्रै दिनां ताणी होसी।"

सदेई-सदेई फर्रामल रै सागी दळियै सूं जीव अमूझण
लागग्यो। इण कारण मैं बात आडी घालनै पूछ्यो– डाक्टर

अचारज रै सूं पैली तूं कठै काम करतो हो ?" उथळो मिल्यो–"छव बरसां तई हूं मम्बाई में टाइप री मसीनां री कम्पनी में बडो अपसर हो, वठै आवड्यो कोनी, जद ई भूखै बीकानेर सूं माथो लगावणो पड़ै है।"

हूं– अठै है तो थारै आराम ई ?

फर्रा०– आराम काई नव चूला री राग है ? ऊगियैं–आथणियैं री तो टा ई को पडै नी। भाभरकै पांच वजी आऊं दफ्तर, जिकै री रात री तीन-तीन वज जावै– अठै ई रोटी, अर अठै ई वाटी !

हूं– तो तू बंगलै री दिपटी कणैं काढै ?

फर्रा०– बंगलै री दिपटी कणैं काढूं ? आ ई तो थारै में थाप'र करग है। हाल तई थऊ-बेटी रा नवगण गीत। गुण, मेमसाब री हाजरी दिलोज्यान सूं भरूं हूं। थम इणं में ई समझ जा। अर मेमसाब भी म्हारै माथै रीझ्योड़ी है। जे कणैं ई साब रै बंगलै काम करण नै नईं जाऊं, तो दूजो मापेई राटको गार देवै। बौत रंगबाज लुगाई है। अर देख, मेमसाब री हाजरी सनै भी जी तोड़'र भरणी पड़सी।

हूं– काई तो मेमसाब री हाजरी डाक्टर ई भरतो होसी ?

फर्रा– डाक्टर नै बापड़ै नै मरण नै ई वेळा कोनी, को थोरी हाजरी भरै ?

फर्रामल रो मूढो एक दिन उतरयोड़ो हो । मैं पूछयो- "आज कांई होग्यो ?" फर्रामल फीसग्यो । मैं धीरज बंधायी तो वोल्यो- "म्हारी तो कठै ई, हड़मानगढ वा चूरू, कोसीस करनै वदळी करवाय देवै, तो न्याल करै।"
हूं- वदळी हुयां पछै तूं डाक्टर साव रै बंगलै री दिपटी कुण काढसी ?
फर्रा०- वीरो सोच ई ना कर । बारै मइनां में जे अेक दिन अठै आयग्यो, तो सगळा कागद फण्ण-फण्ण फंक देसूं ; दूजै सूं इत्तो काम हुवै कोनी दो वरसां मे ई ।

अेक दिन हूं तो म्हारै दफ्तर में काम करतो हो, अर फर्रामल खायो-खायो, सास उठयोड़ो आयो, जाणै कोस अेक रो दौड़ लगायी हुवै । बोल्यो- "लै भई, हूं तनै बधाई दूं ।"
हूं- कांई वात री ?
फर्रा०- हैनफैन मनै आवै कोनी, वधाई मानलै म्हारी ।
हूं- थारी अकल तो ठिकाणै है'क ?
फर्रा०- हत्यारी ! आंधै रै आगै रोयनै नैण गमावणा है । देख, हूं तो जाऊं हूं जोधपुर, पी. अेम. ओ. रो पी. अे. वण'र, अर अठै म्हारी जागा दिराऊं हूं तनै । बोल, किसा'क रंग देखाळया, कर सकै है कोई होड म्हारी ?

हूं– थारा तो नकसा इज न्यारा है ।

फर्रा०– थोथी बातां सूं हूं राजी को हुवूनी । चाल मामली दुकान, ग्रर तू पी ग्रे हुयो जिकै री वधाई में मिठाई खुवा ।

हूं– ग्ररे भला माणस ! तैं मनै हाल तई कोई लिख्योड़ो हुकम तो देखाळ्यो ई कोनी, ग्रर पैली मीठो मागण लागग्यो ? साची बात तो आ है कै मनै तूं कैवै जिकै में काई गोळ लागै है ।

फर्रा०– ग्रेक बात कैयदे, मीठो खुवासी'क नई ?

हूं– बिना हुकम देखे किया खुवाऊं ?

फर्रा०– म्हारी बात री कोई गनद ई कोनी ?

हूं– जचै ज्यूं समभ ।

फर्रा०– तो थारै लारै नोकरी-धोकरी को है नी । तू हवनाक मूंडो धोवै है ।

इत्तो कैय'र फर्रामल रीसाणो-सो'क हुयनै हुरग्यो । जा पाई मिलै तो सदैई है, पण बोलै चदेई कोनी । इनै पगगावो भी हुयो कै ग्रेक रपटी री पाव लिखड़ो मई जीवणा ते पी से री नोकरी हाल सू गमाय दी, पण ग्रेब बाई हुवै ? सोच-ओसवार रैगा ई हा ।

फरीमल री मूंढो एक दिन उतरयोड़ो हो। मैं पूछ्यो- "आज कांई होग्यो ?" फरीमल फीमग्यो। मैं धीरज बंधायो तो बोल्यो- "म्हारी तो कठै ई, हड़मानगढ़ सा पूरू, कोमीस करनै बदळी करवाय देवै, तो न्याल करै।"

हूं- बदळी हुयां पछै तूं डाक्टर साब रै बंगलै री दिसी करणै काढसी ?

फरी०- वींरो सोच ई ना कर। बारै महनां में जे अेक दिन अठै आयग्यो, तो सगळा कागद फण्ण-फण्ण फेंक देसूं; दूजै सूं इत्तो काम हुवै कोनी दो बरसां में ई।

अेक दिन हूं तो म्हारै दपतर में काम करतो हो, अर फरीमल खाथो-खाथो, सास उठ्योड़ो आयो, जाणै कोस अेक री दौड़ लगायी हुवै। बोल्यो- "लै भई, हूं तनै बधाई दूं।"

हूं- कांई बात री ?

फरी०- हैनफेन मनै आवै कोनी, बधाई मानलै म्हारी।

हूं- थारी अकल तो ठिकाणै है'क ?

फरी०- हत्यारी ! आंधै रै आगै रोयनै

देस, हूं तो जाऊं हूं

बण'र, अर अठै

किसा'क रंग

"अरे क्यूं फालतू गैलायां करै, तनै कुण भोळायो हो तगादो, अै तो घरे बैठां भाड़ो देवण आळा है।" रमतियै नै रीस आयगी। तौर बदळनै बाप सूं बोल्यो— काकाजी! थे म्हारी बौत कन्सल्ट (इन्सल्ट रै बदळै) करदो। थे किसा सदेई अखी रैंमो, थानै मौ बरम पूग्यां तो ओ काम मनै ई सांभणो पडसी!

माथै ऊपर बंगला पट्टा छटायोडा राखतो। दाढ़ी आपेई कर लेंवतो। एक दिन पाछणो सफा मोंडो हो। आप सोच्यो— ईं नै कठैई चलायनै तो देखा। लिलाड सूं ऊपर, माथै रै, पाछणो चलाय'र देख्यो। पाछणो ई मसखरो हो, भट चालग्यो, अर रमतियै रै माथै मे चूलो कढग्यो।

छोरी जे भणी-गुणी हुवै तो भी ब्याव सोरो नईं हुवै; पण छोरो किसोई हुवो, जिण मे रमतियो तो मसबन पढ्यो-लिख्यो हो, फेर बीनण्या रा कांई घाटा? जद परणीजण सारू सासरै जावण लाग्यो तद भायेला भांत-भांत री सल्ला दी, जिकी बो हिरदै मे ढूकली। बईर हुवण लाग्यो तो मां भी कैयो— देख रमतू! तूं दोलै घणो है। सासरै मे जे लपर-चपर करैलो तो लोग टट्टा गिणैला। बिना बतळायै मतईं बोलणो। सासरै मे दो बार दसऊआ

''अरे वयू फालतू गैलायां करै, तनै कुण भोळायो हो तगादो, श्रै तो घरे बैठां भाड़ो देवण श्राळा है।'' रमतियै नै रीस श्रायगी। तीर बदळनै बाप सूं बोल्यो– काकाजी! थे म्हारी बौत कन्मल्ट (इन्सल्ट रै बदळै) करदी। थे किसा मदेई श्रखी रैंमो, थानै मौ वरस पूग्यां तो श्रो काम मनै ई साभणो पडसी!

माथै ऊपर बंगला पट्टा छंटायोडा राखतो। दाडी श्रापेई कर लेंवतो। एक दिन पाछणो सफा मोळो हो। श्राप सोच्यो– ई नै कठैई चलायनै तो देखां। लिलाड सूं ऊपर, माथै रै, पाछणो चलाय'र देख्यो। पाछणो ई मसखरो हो, भट चालग्यो, श्रर रमतियै रै माथै में चूलो कढग्यो।

छोरी जे भणी-गुणी हुवै तो भी ब्याव सोरो नईं हूकै; पण छोरो किसोई हुवो, जिण में रमतियो तो श्रलबत पढ्यो-लिख्यो हो, फेर बीनण्या रा काईं घाटा? जद परणीजण सारू सासरै जावण लाग्यो तद भायेलां भांत-भांत री सल्ला दी, जिकी बीं हिरदै में टूकली। बईर हुवण लाग्यो तो मां भी कैयो– देख रमतू! तूं बोलै घणो है। सासरै में जे लपर-चपर करैलो तो लोग टक्का गिणैला। बिना बतळाये नईं बोलणो। सासरै में दो वार बतळायां

श्राछो माजनो भदरावै- हुयो तो है पास, पण स
उथळा इण तरै देवै, जाणै फैल होग्यो हुवै ।

भाएलै घणो ई जोर देयनै कैयो- "नईं सा, श्र
श्राछी तरै पास हुयो है, म्हे दोनूं साथै ई पढां हां। म्
किलास भर मे ई कोई छोरो फैल को हुयोनी।" पण
वात माथै सासू नैं रत्तीभर भी भरोसो नईं हुयो, कार
जे कवरसाब पास हुया हुंवता तो पक्कायत कैय देंवता-
"हूं पास हूं।"

परणीज'र जद पाछा घरे श्राया तो श्राप भाएलां नै
गोठ दी, कारण जान मे तो गिणती रा श्रादमी गया हा।
भाएला घणा तमासा करया, श्रर रमतियै नै उठ बंदर,
वैठ वंदर वणायो। फेर भाएलां सुभ कामना परगट करी-
"भगवान तनै बेटो देवै छव मइना रै माय-मांय।" "तो एक
गोठ फेर।" रमतियो वोल्यो ! जद भाएला खड़खड़ हंसण
लाग्या तो रमतियै नै ठा पडी कै श्रा सुभ कामना नईं
मसखरी है, श्रर वो मसखरै री ठोडी झाल'र मचकावण
लागग्यो।

भाएला पूछ्यो- तूं भाभी रै दाय तो श्रायग्यो'क वा
तनै सफा इल्लू रो ढकणो समझै है ?

"वाह, वा तो म्हारै सूं मौत राजी है, हरेक

ध्यान में।"

"मन्नत काई इण ध्यान गो ?"

"मन्नत ? अठै सू पाछी आपरै घोरै जावण लागी जद गुरु सोची, अर हू भी घणो ई सोयो। इण सू बेसी और काई मन्नत होसी ?"

मापला री शुभ कामना सू बेटो भी हुयो। गोठ्यां उटी। छोरो आठ-दस महीना रो हुयो जद 'मा-मा' हेलो करण लागग्यो। छोरै रो आ बोली बाप नै घणी सोवणी लागी इण कारण आप भी छोरै री मा नै, छोरै रै देखादेख, 'मा-मा' कैवण लागग्यो।

आप एक इसकूल में मास्टर हुयग्यो, पण छोरा नटखट घणा– मास्टरजी रै घटै में मनचायी हो-हा करै, जासूसी उपन्यास बांचै, कबूतर दई गटरगू-गटरगू करै, सिंघ गरजावै, आपस में वायवाय लडै, खुरस्या ऊंधी करै; मेज्या मार्थ बैठै, दवाता लडावै अर सूनी किलास मे हुवणिया सगळा कौतक करै, जद कै मास्टरजी कुरसी मार्थ विराजमान है। सरु-सरु में मास्टरजी रौब जमावण री चेस्टा करी, श्रेक-दो छोरै रै पासळी श्राळो ढुख चेप दियो अर माईत भट ओळभो लेय नै आयग्या। दो-तीन टोगड़ छोरा तो एक दिन मास्टरजी री धोती खैंच नांखी

आद्धो माजनो भदरावै- हुयो तो है पास, पण सवालां रा उथळा दूण तरै देवै, जाणै फैल होग्यो हुवै।

भाएलै घणो ई जोर देयनै कंयो- "नई सा, औ तो आद्धो तरै पास हुयो है, म्हे दोनूं मायै ई पढां हां। म्हारी किलास भर मे ई कोई छोरो फैल को हुयोनी।" पण इण बात माथै सासू नै रत्ती भर भी भरोसो नई हुयो, कारण, जे कंवरसाब पास हुया हुवता तो पक्कायत कंय देवता- "हूं पास हूं।"

परणीज'र जद पाछा घरे आया तो आप भाएलां नै गोठ दी, कारण जान में तो गिणती रा आदमी गया हा। भाएलां घणा तमासा करघा, अर रमतियै नै उठ बंदर, बैठ बंदर बणायो। फेर भाएला सुभ कामना परगट करी- "भगवान तनै बेटो देवै छव महनां रै माय-मांय।" "तो एक गोठ फेर।" रमतियो बोल्यो। जद भाएला खड़खड़ हंसण लाग्या तो रमतियै नै ठा पड़ी कै आ सुभ कामना नईं, मसखरी है, अर वो मसखरै री ठोडी झाल'र मचकावण लागग्यो।

भाएलां पूछ्यो- तूं भाभी रै दाय तो आयग्यो'क वा तनै सफा इल्लू री ढकणो समझै है ?

"वाह, वा तो म्हारै सूं बौत राजी है, हरेक

बात में।"

"सबूत कांई इण बात रो ?"

"सबूत ? अठै सू थाछी आपरै पीरै जावण लागी जद खूब रोयी. अर हूं भी घणो ई रोयो। इण सू वेसी और काई सबूत होसी ?"

भाएला री सुभ कामना सू बेटो भी हुयो। गोठ्यां उडी। छोरो आठ-दस महना रो हुयो जद 'मा-मा' हेलो करण लागग्यो। छोरै री आ बोली बाप नै घणी सोवणी लागी इण कारण आप भी छोरै री मा नै, छोरै रै देखादेख, 'मा-मा' कैवण लागग्यो।

आप एक इसकूल मे मास्टर हुयग्यो, पण छोरा नटखट घणा– मास्टरजी रै घटै मे मनचायी हो-हा करै, जासूसी उपन्यास बांचै, कबूतर दई गटरगू-गटरगू करै, सिंघ गरजावै, आपस में बाथबाथ लड़ै, खुरस्या ऊंधी करै, मेज्या माथै बैठै, दवाता लडावै अर सूनी किलास मे हुवणियां सगळा कोतक करै, जद कै मास्टरजी खुरसी माथै बिराजमान है। सरू-सरू मे मास्टरजी रौब जमावण री चेस्टा करी, एक-दो छोरै रै पासळी थाळो हुय चेप दियो अर मार्ईत भट थोळभो लेय नै आयग्या। दो-तीन टोगड़ छोरा तो एक दिन मास्टरजी री धोती खैच नाखी

अर एक अकल नै एक दिन काम चौड़ग्यो । अबै मास्टरां देगै जीवड़ा बगू फालतू गाना सूं का तोड़ै, पढ़ै तो पढ़ो, नईं पढ़ै तो थारै आप रो कांई लियो ।

गरमी री छुट्यां में आप देग्यो सासरै रो चक्कर काढलूं । बैठग्या रेल में, अर आयग्यो टीटी । टिगट माग्यो तो आप बोल्या– 'हू तो गर्दई बिना टिगट जाऊं, आज तईं कैण ई म्हारै कनै तो टिगट मांग्यो कोनी ।'' ''आज तईं में आप रेल सू बिना टिगट रो मोकळो फायदो उठाय लियो, आज हूं चारज करलू तो कांई आंट है ?'' टीटी ऊपरलै मिठास सू कैयो । भट रमतियो फुरचो– ''नईं, साब ! हू तो आज पैलडी वार ई बिना टिगट आयो हूँ ।''

टीटी बोल्यो– ''आज चारज होजासी तो फेर बिना टिगट रो नांव नईं लेसो, इण कारण आज तो चारज हुवणो ई ठीक है ।'' रमतियै दूजी चाल फंकी– ''हूं तो मुरलीमनोहर बाबू नैं पूछ'र चढ्यो हूँ, बिना पूछे थोड़ो ई आयग्यो ।'' टीटी मुळक'र पूछ्यो– किसो मुरलीमनोहर ?'' रमतियो तड़ाक बोल्यो– ''किसो-किसो, मुरलीमनोहरजी टीटी ।'' टीटी बोल्यो– ''बस माफ करो, पइसा काढो, मुरलीमनोहर तो म्हारो ई नाव है अर मैं थांरी सिकल अवार पैलडी वार देखी है ।''

गुलछर्रा मल

मगरादज धोती, मदराम मील रो कोट, पगां में देसी पगरखी, कदेई-कदेई मोजा भी, माथै ऊपर टीपा-टीप बेनग्या पाघ, गाँधै ऊपर गमछो, जिको जूना श्रर मूंछो दोनूं पूछण नैं श्राडो श्रावै, कद मरामरी, डीलडौल गठीलो, श्रगाडै मे बुग्ती सू त्यार हुयोडो हुवै जिमो, मूछ्यां किडकावरी, चैरै ऊपर मुळक– श्रै है गुलछर्रामलजी, जैंपर रै एक कारखानै मे फिटर।

माच वोलण री श्रापरै सौगन है। जे कोई इणां री वात मान'र वीरै माफक काम कर लेवै तो पक्कायत कूवै मे पडै। इमा मिनख सैर मे गिणती रा लाधै इण कारण छाना नईं रैवै। घणो नईं तो श्राधो जैंपर श्रापनै श्राछी तरै श्रोळखै। जैंपर क्यूं, श्रजमेर-जोधपुर मे भी श्रापरी कीरती फैल्योडी है, इण कारण श्रापरै चकमै मे कोई भूल्यो-भटक्यो भलेई श्राय जावो, श्रौर तो सगळा ऊजळा राम-राम राखै।

श्राप सायद सोचता हुवोला कै इमा गुलछर्रामलजी कोई चोर है'क, धाड़ेती है, का कोई लड़ाई-खोरिया है'क

टपळीज जावै। इण तरै आप दडाघंट कूड बोलता जावै, पण मन मे सावधान– भई भगवान करै तो दिन ऊगते ई माफी माग्योडी है, अबै तो कूड बोलूं जित्ती ई म्हारी है।

वदेई-मींक सेर नै सवा सेर मिल जावै जणै दाळ गळै नई। जद मिरकण नै जागा नई लाधै, अर आप देसै-आज नो मिट्टी कोजी पलीत हुयी, हो जिमो चवडै आयग्यो, पसमो उघड़्यो, इसी हालत मे, जे कोई डील में निमळो होसी तो आप हातापाई कर लेसी, पण, जे देरासी कै हातापाई करघा मामलो चूरमो कर नाखसी, तो आप जोर-जोर सूं वकरण लाग जासी– "बस-बस, मनै थारै सूं वात ई को करणी नी, थारै सू वात करै जिको कम असल रो हुवै। थारै भवै हूं मरग्यो, अर म्हारै भवै सामलो मरग्यो।" जे कोई कँय देवै– "देखो माळीजी, काल फेर इया ई भेळा वैठमो, इत्ती वात वधावो मतीना," तो आपनै छिन चढ जावै–'जे हू ईं सूं वोल जाऊ तो मे माळण रा को चूंग्यानी, म्हारी मां राड मनै फिरती लायी।'

गळै री सोन-वगस (साउंड-बॉक्स) इत्ती जोरदार है कै केई घंटा ताणी वरावर सागी ऊंचै सुर मे वकवो-करसी, छाती में पौच भी है– तमास्त-हमास्त रो तो पाच-दस मिट में ई गळो वैठ जावै।

कारखानै रा आदमी दुपारै री छुट्टी में बारलै घां नीचै बैठ जावै । आप अठै नित नवी खबरां लावै । एक दिन आप धरन्योनी गुणावण लाग्या: "भंवर बाई साब रो ब्याव हुयो जद हूं अन्नदाता रै मैलात में बीजळी रो इनचारज हो। म्हारो काम देखो अप-टू-डेट कै बारै सूं वडा-वडा अंजीनियर आया जिका फिटन देख'र दंग रैयग्या । वाटसन साब अन्नदाता नै पूछ्यो– "आपरै मैलात में बीजळी रो अंजीनियर कुण है, हूं मिलणो चाऊं हूं।" अन्नदाता पूछ्यो– "क्यूं, कोई कसर रैयगी ?" वाटसन साब कैयो– "नईं, नईं, आपरै अठै तो रतन रेत में रगदोळीजता हुसी, आप कित्तो तिरणखा देवो वींनै ? अन्नदाता आंख लाल करनै बोल्या– "वाटसन साब ! थानै माफी मागणी पड़सी । म्हारै राज में रतन रेत में रुळ सकै ? हूं पारखू भंवरी हूं । म्हाराज कंवर रै बराबर इण अंजीनियर री कदर करूं । जीमूं जद जीवणै पासी म्हाराज कंवर, अर डावै पासी अंजीनियर रो थाळ लागै ।" हूं अन्नदाता रै लारै ई ऊभो हो । म्हारै खांधै माथै हात धरनै अन्नदाता बोल्या- "ओ है म्हारो अंजीनियर ! रैवै सादी सल्ला मे है, अंगरेजी भण्योड़ो भी कोनी, पण काम रै कारण वालो लागै ।"

आ वात सुण'र म्होता चिनराम रा हुवे ज्यूं रैयग्या मन मे सोचो हुसी– ओ किसो'क भागवान है जिको अन्दाता रै मानीजै । म्हे ई जे इसा हुंवता तो किसो'क !

सगळां नै टकटकी बांधे बैठ्या देख'र गुलछर्रामल फुरण्या फूलाई, आम्या रा मटका कर्‌या, पाघडी रो पेच संवार्‌यो, अर च्यारां कानी निजर घूमाई भई म्हारी वात आनै किसो'क लागै है, सगळा रै धाटोघांट उतरगी का केई रै मळ रैयग्यो । जद देख्यो कै सगळा बोला-बोला बैठ्या है, जणै फेर चूडी चढाई– "अन्दाता तो अठै तई कैयो कै ओ तो गुल्लो (अन्दाता मनै गुल्लो ई कैवता) रीसाणो हुवणो को जाणै नी, पण जे कदास ओ रूठ जावै तो मनै ई रै पगा में पाघ न्हाख'र मनावणो पड़ै । जित्ता ई वाइसराय आया, कोई म्हारै मैलात री बडाई करतो को धाप्योनी, पण इयै रो सेवरो गुल्लै रै माथै है ।" फेर कैयो अन्दाता– 'वाटमन साब ! लार्ड लिनलियगो तो ई नै विलायत लेजावण रा नौरा काढ्या, पण मैं हाता-जोडी कर-कराय'र नीठ अठै राख्यो । जे ओ अंगरेजी पढ्योडो हुंवतो तो कीनैं ठा कित्ता आविस्कार करतो, अर दुनिया रा कित्ता अंजीनियर इण रै पगां में नाक रगड़ता । पण, सोनै में सुगन कठै पड़ी है" कैय'र अन्दाता

टेडो गाग लियो ।

पाधो मिन्ट ठैर'र– "पसवाई में तो थे मगरा
रीजो, मई म्हानै पडगी जिकी बाढ़ में ई वड़गी, पण
में सम्पत कोनी कोडी रो ई । अर जे कोई गमके कै हूं
सीगमारको हूं, तो म्हारै गामनै आवै । थे तो किसै हेत
री मूळी हो, काल गरी, अर आज भूनणी हुयगी । म्हारै
लालर तो विलायत झुरतो हो, पण करमा में तो लिख्यो
हो टकै-टकै रै मिनग्ना मूं माथो लगावणो, जणै अठै
कारखानै मे पड़्यो दिन काटू । पण फेर भी मिस्त्री ऊपर,
फोरमेन ऊपर, टरमा तो आपां रा ई रैवै । कीरी मजाल
है कै वन्दै नै होट रो पटकारो ई देय दै । जे एक कैवंतो
रम सुणाऊं, मुरगी टंट करदूं ।"

इयां कैय'र फेर गुलछर्रामल च्यारूं खानी निजर
फेंकी । मन मे राजी हुयो कै आज तो सागीड़ो मजमो
जमायो– सगळा होट सीड़े बैठ्या है, जद जची कै ओर
द्वाव बधाऊं– 'अर म्हारै काम में नुक्स काढणियो जे केई
रांड जण्यो है तो म्हारै सामनै आवै ।"

इत्ती सुणी'र का खूणै मांय सूं एक कारीगर उठ्यो-
"ओ रे ओ गूंग साड ! कीनै सुणावै है तूं ? निसरमो
धो ! तनै कोई नई जाणै जिकै रै आगै पड़छाव लगा,

हूं तो थारी रग-रग जाणूं हूँ। 'अन्नदाता रै मैलात में बीजळी रो इनचारज हो।' कदेई थारो बाप ई हुयो इनचारज ? मैलात में पग ई धरयो याद आवै ? थारै जिसा सैकड़ूं लूनाड़ा फिरै। विलायत आळा तनै भुरता हा ? जीवतै नै ई ? जाट री बेटी, काकोजी नाव ! आज तो हू टाळो राखूं, फेर जे गाळ-गुपत सुणली तो म्हारै जिसो कोई भूंडो को है नी। इसी करूंलो कै कुत्ता ई नीर को खामी नी। काल तई तो कुळी री नोकरी खातर अरजी लिए गुड़िया खोतरतो हो, आज फिटर हुयग्यो जणै अबै फाटण लागग्यो। फाटै आपेई, पाव री हाटी मे मेर कठै सू मावै ?"

गुल्लै रो माथो सूनो हुयग्यो– धू-धू करण लागग्यो। काळजो फड़क-फड़क करण लागग्यो, मूंडै री हवा उडगी। सोच्यो– खायो-पीज्यो खराब हुयग्यो, सगळी बाना माथै पाणी फिरग्यो। पण चुप रैऊ कोनी खागी बाप भाग जावै तो ई। बोल्यो– "देख, बडो समझ'र थारो कायदो राखू, जे दूजो कोई बिच मे बोल जावै तो थप्पड़ री दैय'र मूडो भुंवाय दूं। तनै टा नी, टिकाणो नी, पर हू साईं री भुवा, थोथो पटड़पच हुयोड़ो रैवै ! जे तू म्हारै सूं बोलग्यो तो तनै थारै नेम धरम री सोगन है, पर जे हू बोल जाऊ

ठंडो सांस लियो ।

आधो मिन्ट ठैर'र– "चलवांई में तो थे सगळा भींजो, भई म्हांनै घड़गी जिकी वाड़ में ई बड़गी, पण था मे लख्खण कोनी कौडी रो ई । अर जे कोई समझै कै हूं तीसमारको हूं, तो म्हारै सामनै आवै । थे तो किसै खेत री मूळी हो, काल मरी, अर आज भूतणी हुयगी । म्हारै खातर तो विलायत झुरतो हो, पण करमां में तो लिख्यो हो टकै-टकै रै मिनखा सूं माथो लगावणो, जणै अठै कारखानै मे पड़यो दिन काटूं । पण फेर भी मिस्त्री ऊपर, फोरमैन ऊपर, ठस्सा तो आपा रा ई रैवै । कीरी मजाल है कै बन्दै नै होट रो फटकारो ई देय दै । जे एक कैवै तो दस सुणाऊं, मुरगी टैंट करदूं ।"

इयां कैय'र फेर गुलछर्रामल च्यारूं खानी निजर फेंकी । मन मे राजी हुयो कै आज तो सागीड़ो मजमो जमायो– सगळा होट सीड़े बैठ्या है, जद जची कै और हाव बधाऊं– 'अर म्हारै काम में नुक्स काढणियो जे केई रांड जण्यो है तो म्हारै सामनै आवै ।"

इत्ती सुणी'र बा गूणै मांय सूं एक कारीगर उठ्यो– "ओ रे ओ गूंग सांड ! कीनै सुणावै है तूं ? निसरमो गयो ! तनै कोई नईं जाणै जिकै रै आगै पड़दाय लगा;

ï नो थारी रग-रग जाणूं हूँ। 'अन्दाता रै मैलात मे बीजळी रो इनचारज हो।' कदेई थारो वाप ई हुयो इनचारज ? मैलात मे पग ई धरचो याद आवै ? थारै जिसा गैवड़ लूनाडा फिरै। विलायत आळा मनै भुरता हा ? जीयनै नै ई ? जाट री बेटी, काकोजी नाव ! आज तो हूं टाळो राखू, फेर जे गाळ-गुपत गुणनी तो म्हारै जिमो कोई भू डो नी है नी। इगी कम्नी कै कुत्ता ई गीर को खासी नी। काल तई तो कुळी री नोकरी गानर अरजी लिए गुड़िया खोतरतो हो, आज फिटर हुयग्यो जणै अबै फाटण लागग्यो। फाटै आपेई, पाव री हाडी में सेर कठै सू मावै ?"

गुन्लै रो माथो सूनो हुयग्यो— घू-घू करण लागग्यो। काळजो फड़क-फड़क करण लागग्यो, मूंढै री हुवा उडगी। सोच्यो— कात्यो-पीज्यो कपास हुयग्यो, सगळी बाता माथै पाणी फिरग्यो। पण चुप रैऊ कोनी मागी बाप आय जावै तो ई। बोल्यो— "देख, बडो ममझ'र थारो कायदो राखू, जे दूजो कोई विच मे बोल जावै तो थप्पड री देय'र मूंढो भुंवाय दूं। तनै ठा नी, ठिकाणो नी, अर हूं लाडै री भुआ, थोथो फदड़पंच ...

तो

मक्खणसा

मक्खण-सा री ऊमर अवार कोई इकताळीस-बयाळीस हुवैली, पण वातां हाल तई टाबरां आळी करै । रंग तो रामजी रै घर सू काळो ई वाती आयो, पण डील रा पूरा है– ऊंठ सू थोड-सा'क नीचा रैवै । पगरखी रो अजूणो करचोड़ो ई समभो । व्याव-मावै में माथै ऊपर बोदो-सोदो पेचो बंधाय लेसी, कोट नवो पैरसी, पण कोट रै माय गंजी का कमीज को हुवैनी । धोती पैरगी घुग्राऊ, पण बांधै इसी ढीली ढवळ जाणै अवार खुली, घड़ी नै खुली । मनै तो घणी वार ओ डर लागै कै कणी ई रस्तै वैवते मक्खणसा री धोती धरती पड जासी अर मक्खणसा नागा होजासी । पण हाल तई तो, माईता रै भाग सू, धोती पड़ती-पड़ती बचै है ।

गाभा पैर-पैराय'र आप असली पसा री कांठो, अर घरै मोत्यां री पोतरी पैरै । मैं गणा है तो मक्खणसा रा बाप रा, पण दीसै है माग'र लायोडा ।

मक्खणसा रै पट्टा छंटावण री तो सौगन ई है, पण विना एढै संवार भी करावै नई । एक रै सारै भद्दर हुवै

पूछपो—

"किती'क पूछयां गायी आज ?"

"काई गायी, जीव गोरो कोनी जिको भायी होती आज तो।"

"तो ई कांई तो गायी हुसी ?"

"गायी काई, अं ई पचास रै मांय-मांय गायी हुसी।"

मक्खणसा रै साव रै वेटै रो व्याव हुयो, मक्खणसा नै भी जान लेयग्या। साव मक्खणसा नै डेरै में राखै, जीमण नै साथै नई लेजावै, पण मक्खणसा खातर दस आदम्या रो कांसो पुरसाय'र मगाय लेवै। एक दिन मांढै रो आदमी डेरै में आय'र साव सू बोल्यो— "कसूर माफ हुवै तो अरदास करूं।"

"फरमावो सा, काई हुकम है" साव कैयो।

मांढी सँकतो-सँकतो बोल्यो— "डेरै मे लारै आदमी तो एक रैवै, अर आप कांसो मंगावो दस रो, बाकी रा नव जणां नै तो देख्या ई कोनी।"

साव बोल्यो— "अच्छ्या, आज आप एक ई कांसो ना भेज्या।"

"ओ हो, आप तो रीस कररली।" मांढी गिड-गिड़ायो।

गाव कँयो– "नईं, नईं, रीम कोनी, आप वेफिकर रैवो।"

मक्खणमा नै मात्र आज जीमणनै मायँ चालण रो कँय दियो। मक्खणमा नमा-पता लेय'र त्यार हुयग्या। सगळा जीमणनै गया, मक्खणमा ई गया। और लोग तो थोडी ताळ मे जीम-जीम'र उठग्या, पण मक्खणमा हाल आधा ई धाप्या नईं। जामफळ आळो पूछै– "क्यूं दो देय दूं?" जद मक्खणमा कँवै– "हा, दस ई दिया, नईं तो श्रेठा पड जावैला।" चक्की आळो पूछै–"क्यू एक तो देय दूं?" मक्खणमा कँवै– "वस एक-दो सू बेसी ना दिया, हू धाप्योडो हूं।" लाडू आळो पूछै– "लाडू?" मक्खणमा कँवै–"थारो तो मन राखणो पडसी देय दो च्यार लाडू।"

जद मक्खणसा भात-भात रा खटका देखाळचा, तो जानी-मानी सगळा घेरो घालनै ऊभग्या। पैली आळो माडी मक्खणमा रै सांव कनै आयो, वोल्यो– "मक्खणसा खातर तो आपनै वीस जणा रो कासो मंगावणो चाईजतो हो, दस रो मंगाय'र तो आप लाई वामण रो फालतू पेट रोस्यो।

तीन सेर मीठै री होड—

अेक मजूर केई सूं सवा सेर मीठो खावण री होड करी। सवा सेर मीठो सामलै सू खायीज्यो नईं जद दूणा

पड्गा भिगग्या । मजूर रो हाव वधग्यो, मक्खणसा रै भिटग्यो— दो सेर मीठै री होड मे ! लोकां समझायो— 'अरे, दो सेर तो मक्खणसा उडाय जासी।' मजूर डरग्यो। गेंचाताणी कर-कराय'र तीन सेर मार्थ होड पूगी— खाली मीठो, सार्थे चरको नई। जे मक्खणसा जीतै तो दो रपिया इनाम, जे हारै, तो मिठाई रै मोल सूं दूणो चटीड़!

खीरमोवन-जामफळ रो एक-एक ठूगो आयग्यो-अर मक्खणसा हात साफ करणो सरू कर्यो। दो सेर उडायो जित्तै तो आपनै डकार ई को आयी नी। पण, मक्खणसा मोथा जीमाकिया है, जीमण री अटकळ जाणै नई। दो सेर मीठो खायो जित्तै अढाई-ती। सेर पाणी पेट में ऊंधाय लियो जिकै सूं पेट तणीज'र नगारो हुवै ज्यूं हुयग्यो। अबै आप घबराया— "अरे! जीत्यां सूं तो आसी खाली दो छिलका, अर जे हारग्यो तो पन्द्रै कळदार खुस जासी।" मीठै रो भाव उण दिनां अढाई रुपिया सेर रो हो।

पण हाल तई मक्खणसा एड्यां रै ताण बैठ्या जीमता हा। अबै पालखी मारणी याद आयी, कोट रा बटण खोल्या, अर बी दिन सजोग सूं पजामो पैर्योड़ो हो जिण रो नाडो ढीलो कर्यो। अबै मक्खणसा फेर थोड़ा ससवां हुयग्या। मीठै रो टूंगो मक्खणसा सूं आयो मेल्योड़ो

हो, कै म्हनै मीठो दीसतो रैवै तो पाणी चढ जावै । मक्खणसा पूछ्यो– "थनै किनो'क रैयो है ?" मक्खणसा पाणी तो ल्याय दियो, पण दिखाणा दिखावण सारू मैं बैठो– "बाजी मारली, थोड़ो ई है थनै तो ।" घर में फेर ल्याय पीगणोवन पुग्ग दिया ।

हीर करण वाळो मजूर घड़ी-घड़ी वार कैवै– "देख, उलटी ना कर दिए । जे करदी, तो पइसा खिप जावैला ।" मक्खणसा नैं उलटी करावण सारू ई मजूर घड़ी-घड़ी वार उलटी रो नाव लेवतो हो । मक्खणसा रो हाल तो बराबर थावै, पण माय स् जीव घबरावै । उबकी थावती-थावती रैय जावै । एक बार तो थोड़-मी'क गुचळकी थाय ई गयी, पण मक्खणसा री थप्पोड़ी दाड़ी घठै काम देयगी । मूंढै आडो हाथ देय'र मक्खणसा गुचळकी नैं दाड़ी में रमायदी । मजूर हाथा सो फरमा, पण मक्खणसा ऊपर रो ऊपर उड़ाय दियो ।

दो सेर खायो जित्तै तो बूटी रा मसा सागीड़ा उग्या; पण अबै नकसा फीका पड़ण लागग्या । पसीनै रा वाळा वैवै, डील भोवाभोव हुयग्यो । मीठो खांवते-खांवते कित्ती ई वार मक्खणसा हात में पाणी लियो कै फेर तो केई सूं मरतो-जीवतो होड करूं नईं, पण तो ई मजूर नै

जायदाद आपरै नांव करवायलो। चलाक लूंकड़ी कागलै नैं धुर बगाय'र ज्यूं रोटी लेयगी, उणी तरै मक्खणसा कनै किती ई लूंकड़ियां ढूकै, अर सगळचां आपरै भाग मारू कांई-न-कांई पावै, खाली नईं जावै।

एक डाकोत कैयो– "मक्खणसा! थांरै आगै डागा, रामपुरिया सैं पाणी भरै। थांरी पगथळी री ई होड नईं कर सकै। धरम-पुन में थांरै जिसो जीव राजा-म्हाराजावां रो ई कोनी।"

अरे वाह् रे डाकोत! तनै मक्खणसा नूईं री नूईं रजाई काढ'र देयदी। आप सियाळै में गूदड़ो आधो बिछायो अर आधो ओढ्यो।

मक्खणसा रै घर में धान-चून जोवो तो ऊंदरा पड़ी करता लाधसी। बऊ जे धान लावण री कैमी तो दस वार कैयां भी सुणाई हुवै नईं; पण जे आप धान लावता हुसी, घर मारग में बडाई करणियो सामी-मोड़ो मिल जासी तो आधो-पड़धो धान दड़ाछट बांट देसी।

आखी दुनिया मक्खणसा री दातारी रो ढंको पीटै, पण घर आळा कैवै– "तूं दरियै बापरो है, थांरै में कौड़ी रा ई गऊर कोनी, थळी थारी दातारी भूंडी लागै!" औ बोल मक्खणसा सूं भावै पण कांकर भलैं जद कै सगळा लोग

सारी सफाई करता, सो सागैली। इण कारण पर पड़ै
सूं मक्खणसा री कमती बणै। जे कोई घर माळो चांनी
पीस देती तो आ मोरिड़यै पड़ै री चोट सूं निकळ
जाती। ड्यां सू सारो नईं छूटै। मक्खणसा बड़बड़ाट
करता घर सू निकळगी, जिकै रा थोड़-सीक दूर जावतां
ई जोर-जोर सू गाळ्यां काढण लाग जाती। जे कोई थाना
पीयणियो हुंकारा देवण लाग जाती, तो आप मूंडूं
रोवण लाग जाती, अर साथेई भागूं लाती।

आप नोकरी करै– जमादारी। एक रात आपरो
पोरो कोयलां सारूं हो। तीन माणस आया, दो तो
आपनै बातां में लगाय लिया, अर तीसरो कोयला पार
करतो रैयो। मक्खणसा इसी जमादारी करै। पण फेर
भी आपनै रात री डिपटी में राखणा पड़ै। जे दिन री
डिपटी में राखै तो लोग इणां रो उदबुदो रंगढंग देख'र
"हाळ्डो! हाळ्डो!" हाका करण लाग जावै। मक्खणसा
रा तमासा देखण सारू मोकळा माणस मेळा हुय जावै।
इण तरै मेळो मंडायोड़ो अफसरां नैं पोसावै नईं, अर
मक्खणसा री रोटी भी खोसी चावै नईं, इण कारण
रात री डिपटी देय'र मक्खणसा नै धिकावै।

जे कदास मक्खणसा दिन रा' कारखानै पासी आय

जावै, ग्रर मजूर, ग्रापस में मन्ना करे'र, 'हाऊड़ो-हाऊड़ो' नई धवै, तो भी ग्रापनैं मुवावै नई। मजूरा नैं चुप देख'र मक्खणमा एक दिन कैय ई दियो– ग्राज मगळा ग्रणबोल है, जाणैं माईन मरग्या हुवै।

लैण-दैण–

मक्खणमा रुपिया धीरै, धीरै बाई, दुनिया नैं लूटै! ग्रानो रुपियो ब्याज कमावै! पण इणा रा संस्कार पोचू है– ब्याज तो इणा नैं देवै ई कुण, मूळ पाछो चूकायदै इसो भलो माणस भी इणा रै ढूकै नई। पण है मक्खणसा ग्रलवेला। ग्रबार ई थे जे एक ग्रानै रुपियै रो लोभ देवो, तो भट थांनै रुपिया उधार देय देसी। राम दिरावै तो पाछा दिया, नई तो चक्कन्दा कर जाया। मक्खणसा ऊंतावळा बोल'र तगादो भी नई करै, ग्रर धीरै कैया रुपिया पाछा देय देवै इसा मिनख पड्या कठै है?

ग्राप हैंसाब पाई-पाई रो मूंडै राखै, चूक छदाम री पड सकै नई। जे मक्खणसा खुद केई कनै सूं रुपियो-टक्को उधार लेसी, तो पाछो तो देय देसी, पण देसी रुळा-रुळाय'र।

सागीड़ा तिराक

खेजड़ै री ऊंची डाळ सूं, ग्रांख्या मीच'र, ग्राप

गाती। मक्खणसा मदेई गावणो गुणन नैं जांवता। एक दिन उणा री मां भी गयी। सेठां मां नै पूछ्यो– "तनैं किसो गावणैं मे ठा पडै है जिको आयी है गुणन नैं?" मा, ठ्या ई, नम सूं हुंकारै रो लटको कर दियो। सेठां पूछ्यो– "आ काई गावै है बताव?" हाकै रै कारण मा नैं सुणीज्यो– "कित्ता जणा करै है गावणो?" मां जीवणैं हात री पांचूं आंगळ्या देखाळदी-भई पांच जणा है– "अेक तो गावण आळो, दूजो तबलै आळो, तीजो पेटी आळो, चौथो सारंगी आळो, अर पाचवी गावण आळी री मा।" वी बगत भगतण पचम रै सुरा में अळाप लेवती ही। माजी री पांच आंगळ्यां देख'र सेठां सोच्यो– डोकरी समझै दीसै। सेठ राजी हुया, मुनीमजी कनै सूं झट पांच रुपिया रो लोट इनाम दिराय दियो।

माजी तो रुपिया लेय'र मैफल रै अधविच में ई घरे टुरग्या। जद छोटो-सो'क मक्खणियो घरे गयो तो माँ अडधड़ायो– देख, तूं तो नित-हमेस रात री एक-एक-दो-दो बजाय'र आवै, पण ठोकै भाग रैवै, हूं तो आज ई गयी जिकै मे रुपिया पांच इनाम रा लिआयी।

मक्खणसा सोच्यो– काल वात। आप ई सेठां री जाजम ऊपर बैठ'र लोगां रै देखादेख नस रा लटका

करण लागग्या । सेठाँ री निजर वठीनै पड़ी, पूछ्यो- "अरे मक्खणिया, इत्ता लटका करै, तूं किसो समझै है बताव, आ कांई गावै है ?" मक्खणसा बोल्या ई- "थूं, समझूं वयूं कोनी, मनै तो सगणी ठा पड़ै है । आ गावै है..." इयां कैय'र दोनूं हाताँ री दसूं आँगळ्यां, दस रुपिया भेवण खातर सेठाँ रै सामी करदी । सेठाँ रो सभाव कांई अकरो हो । नोकर नै हुकम दियो- ईं मक्खणियै नै बाँध'र घोड़ाँ रै ठाण कनै गुड़काय दे । सदेई-सदेई अठै जाजम ऊपर बराबर आय'र बैठ जावै, अर गैला लटका करबोकरै, सऊर कोनी धूड खावण रो ई ।

मक्खणसा थोड़ी ताळ ठाण री हवा खाय'र घरै आया । मन में विचार कर्‌यो- आ भगतणकी नईं आवती तो ना तो गावणो हुवतो, ना हूं लटका करतो, अर ना ठाण कनै गुड़कायीजतो । काल ईं राँड रो कोई लूंबो-भूंबो तोड़'र लाऊं जणै जीव सोरो हुवै ।

सियाळै री रात ही । मक्खणसा भगतण रै पसवाडनै पाटै माथै चदरो छीदो कर'र बैठग्या- भई आ इत्ती नाचै-कूदै है, कणै-न-कणै तो कोई लूंबो पड़ ई जासी ।

भगतण नैं जोराम इती जोरदार, कै रुमाल आलो गार हुयग्यो, पण हाल तईं नाक मूं पाणी पड़ै । मौको

घुद्दा लगाय दो, मक्खणसा रै रीस नैंड़ी ई को श्र
श्राप बराबर मुळकता रैसी । हां, श्रा जरूर है कै
कैसो— 'काना रै नूगा री बिडग्या ढीली' हुयगी, तो श्र
लूग झट सभाळ लेसी । जे कनै ऊभा दस श्रादमी बार
वारी दस वार कैसी, तो श्राप दस वार संभाळ लेसी। जे
एक श्रादमी दस वार कैसी, तो ई पाच-सात वार तो
संभाळ ई लेसी ।

जद इयां मस्त हाती दई मक्खणसा झूम झूम'र
चालै, तो गळ्या रा कुत्ता भुसण लाग जावै। पण हाती
लारै कुत्ता घणा ई भुसै। फरक इत्तो है कै साचेई हाती रै
कुत्ता बटकी को भरैनी, श्रर मक्खणसा रै निरी वार घट्टर
काढ लेवै। पैलड़ै गे डक श्राछो हुवै जित्तै दूजो त्यार!
एक दिन तो सागी कुत्तो, मक्खणसा नै, एक गळी में
श्रावते श्रर जांवते, दो वार खायग्यो !

गण कच्चो—

जे कोई कच्ची छाती श्राळो श्रंधारै में मक्खणसा नै
... एक देखलै तो काळजो गिरै छोड़दै, पण श्रचम्बो तो
है कै मक्खणसा रो श्राप रो गण कच्चो है। जद-कदेई
रा सूनवाड़ मांय सूं एकलो जावणो पड़ै तो कैई-न-कैई

केर-बोट्टी-देजड़े-जाळ में पक्कायत कोई-न-कोई भूत-भूतणी दीस जावै । मक्खणसा कैवै — "जे दूसरै आदमी नै दीख जावै तो छाती फाट'र मर जावै । म्रो तो हूं हो जणै पैली दाकल करदी जिणसूं भूत रो बस को चाल्योनी ।" कदेई-कदेई मक्खणसा नै दो-तीन भूत मेळा ई दीस जावै, तद मक्खणसा री दाकल देवण री हीमत नईं पड़ै अर इणां नै ताव चढ जावै, दो-च्यार दिन घर में सूता रैवै । फेर भी लोग इणांरी भूत-पलीत री वात रो भरोसो नईं करै ।

एक वार मिन्द्या रा आप तळाव सूं न्हाय'र घरे आंवता हा । मागै एक म्हाराज दूध रो गूणियो लियां चालता हा । म्हाराज भूत-राईस-डाकण-स्यारी रा भाटा तो लगावता हा, पण मक्खणसा नैं साचेई भूत दीसै, आ वात नईं मानता ।

आज मक्खणसा नै साचेई भूत दीस्यो ! मक्खणसा भाग्या, इसा भाग्या जाणै कोई पदया लाग्योड़ा हुवै । म्हाराज रै माथे में इण रो अरथ रत्ती-भर भी नईं आयो । मोड़-गीं'क ताळ नैं रोयी रो चक्कर काट'र मक्खणसा म्हाराज रै कनै भर सैंपूर चाल सूं निकळ्या । म्हाराज

घुद्दा लगाय दो, मक्खणसा रै रीस नैड़ी ई को ग्रडंनी
श्राप वरावर मुळकता रैसी। हां, श्रा जरूर है कै थे थे
कैसो– 'काना रै लूगां री त्रिड़यां ढीली' हुयगी, तो श्रा
लूग झट सभाळ लेसी। जे कनै ऊभा दस श्रादमी वारी-
वारी दस वार कैसी, तो श्राप दस वार संभाळ लेसी। जे
एक श्रादमी दस वार कैमी, तो ई पाच-सात वार तो
संभाळ ई लेसी।

जद इया मस्त हाती दई मक्खणसा भूम भूम'र
चालै, तो गळ्या रा कुत्ता भुसण लाग जावै। पण हाती
लारै कुत्ता घणा ई भुसै। फरक इत्तो है कै साचेई हाती रै
कुत्ता वटकी को भरैनी, ग्रर मक्खणसा रै निरी वार पन्नर
काढ लेवै। पैलड़ै रो डंक ग्राछो हुवै जित्तै दूजो त्यार!
एक दिन तो सागी कुत्तो, मक्खणसा नै, एक गळी में
श्रावते श्रर जांवते, दो वार खायग्यो।

गण कच्चो–

जे कोई कच्ची छाती श्राळो श्रंधारै में मक्खणसा नै
एकाएक देखलै तो काळजो गिरै छोड़दै, पण श्रचम्बो तो
श्रो है कै मक्खणसा रो श्राप रो गण कच्चो है। जद-कदेई
रात रा सूनवाड़ माय सूं एकलो जावणो पड़ै तो केई-न-केई

फेन-चोटी-दैजड़े-जाळ मे पक्कायत कोई-न-कोई भूत-भूतणी दीख जावै । मक्खणसा कंवै – "जे दूसरै आदमी नै दीख जावै तो छाती फाट'र मर जावै । श्रो तो हूं हो जणै पैली दाकल्न करदो जिणसूं भूत रो बस को चाल्योनी ।" कदेई-कदेई मक्खणसा नै दो-तीन भूत भेळा ई दीस जावै, तद मक्खणसा री दाकल देवण री हीमत नईं पडै अर इणा नै ताव चढ जावै, दो-च्यार दिन घर में सूता रैवै । फेर भी लोग इणांरी भूत-पलीत री बात रो भरोसो नईं करै ।

एक वार मिस्या रा श्राप तळाव सूं न्हाय'र घरे श्रांवता हा । सागै एक म्हाराज दूध री गूणियो लियां चालता हा । म्हाराज भूत-खईस-डाकरण-स्यारी रा झाड़ा तो लगावता हा, पण मक्खणसा नैं साचेई भूत दीसै, श्रा बात नईं मानता ।

श्राज मक्खणसा नै साचेई भूत दीस्यो ! मक्खणसा भाग्या, इसा भाग्या जाणै कोई पइयां लाग्योड़ा हुवै । म्हाराज रै माथे मे इण री श्ररथ रत्ती-भर भी नईं श्रायो । थोड़-सीं'क ताळ नै रोयी रो चक्कर काट'र मक्खणसा म्हाराज रै कनै कर सैंपूर चाल सूं निकळ्या । म्हाराज

देख्यो– पाल गो माभेई डाक में भाजो है– म्हाराज देख बागै गया, जिगं मक्खणसा पेट दड़बड़-दड़बड़ करता, मागोड़ा हागोड़ा, पगगाड़ कर निकल्या। म्हाराज बोल्यो– पाल गो मक्खणसा में माभेई भूत बड़ग्यो दीसै, पर म्हारे कनै दूध है इण कारण म्हारै बार-बार भूत आवै है, जे मक्खणसा हूं भूत री पेट में पायग्यो तो भी दूध बारै पाडो पाणी ?

भाड़ागर म्हाराज च्यार सेर दूध धरती माता नै पाय दियो।

मक्खणसा नैं तीन दिन ताव आयो, म्हाराज नै पांच दिन !

गवैया मक्खणसा अंगरेजी समर्झै—

मक्खणसा गवइया चोखा है, पण ज्यूं कैयो कूंभार गधै नईं चढ़ै, उणी तरै मक्खणसा भी कैयां सूं गावै नईं। मक्खणसा रो कंठ मीठो है, राग री मोड़ भी जाणै, पण गावै है 'खड़ छंद'। खड़ छन्द में भी आप तुकान्त रो ध्यान राखै। नमूनै खातर—

!!भजन बिना रे, बीती जाती है उमरिया।
नित नहीं नेम नहीं, सन्तों से प्रेम नहीं,

"हूं किसो अंगरेजी पढ्योड़ो थोड़ो ई हूं। इत्तो तो हिंदी री उकत सूं समझग्यो। पण म्हारो गावणो जे मनै दाय नईं आवतो, तो म्हारै सामनै देख'र वा हंसती क्यूं वास्तै ?"

सोळवों सोनो–

मक्खणसा काळा है, कोजा है, डरोक है, घणा है, पण चोर-जार कोनी, इण कारण बडा-बडा रा री जिनानी डोढ्या जिणा मे चिड़ी रो जायो भी नईं सकै, मक्खणसा खातर खुल्यां है। वठै जे सोनो ई पगां पड़्यो हुसी तो आप उण नै धूड बराबर समझसी पारकी चीज नै पारकी अर आपरी नै आपरी समझै इण कारण मक्खणसा मक्खणसा हुंवते थकां भी सोळवं सोनो है।

डाकण

वात घणा बरसा री है जद कै एक गुंभारियै में एक
करी तेला-लूणी री हाट लगाये गुजराण करती ही ।
रणीजते ई विधवा हुयगी । मासू-सुसरा समै साथै सरग
धारया । मां-बाप कीरा अखो रवै ?

एक दिन, जद आ विधवा हुयी, सैर में ब्रूको फूट्यो-
रे ! इसी कैर री मौत तो आज तई को सुणीनी । वा
टी-सी'क विधवा वरसा रा वार सैवती आज बूढी
तेकरी हुय'र 'माजी' वजण लागगी । माजी वजै तो ब्रूवै
। पडो, ग्रौस्या आया थान-म्हानै ई लोग बूढा बावा
(अथवा बूढी माजी) कैवण लाग जासी, पण अफसोस री
यात तो आ हुयी कै लोग माजी नै 'डाकण-डाकण' कैवण
लागग्या । आ दुनिया केई रो लारो भालै ई नई, जे भाल
लेवै, उणनै, नई हुवै तो ई, डाकण बणाय'र रैवै । घर-
घार आळी भी म्हारै ध्यान मे सुणाया है जिणा नै लोगा
डाकण कैवणो सरू करयो, मर मवै वै सरबालै डाकण
परपीजगी । आ माजी तो लायरा बुढ मे एकली ही ।
तन रो गाभो दण रो बैरी हो, इण हालत में जे दुनिया

क्यूं घलावै है, पण तो ई, वाळ री कूटयोड़ी होकरी, थुथकारो घाल देवती, अर दो-तीन दिनां में टाबर ठीक भी हुय जावतो।

कोई-कोई माईत घणी ग्रकड़ाई लगावता— 'तूं डाकण है, घाल म्हारै टाबर नै थुथकारो।' ग्रवै थुथकारो घलावणो किसो सैज काम हो। माईत हाका करता— 'देखो, रांड डाकण लोगां रै टाबरां नै भखै। सैकड़ मरज्यां करली तो ई थुथकारो को घालैनी। थारै बाप रो काई धन लागै है थुथकारो घालण में?' ग्रै हाका सुण'र गळी में राणों-राण माणसां भेळो हुय जावतो। वां में मायद ई कोई इसो हुंवतो जिको माजी नै डाकण नईं समझतो।

जे कदेई कोई लुगाई ग्रापरै टाबर नै गोदी लियां जावती, ग्रर सामनै माजी मिल जावता, फेर देखो मजा— मा ग्रापरै टाबर नै झट गाभै सूं ढकती, ग्रर भीत लागी ग्रपूठी फुर जावती। पण टाबर ऊपर मां इत्तो हक क्यूं जमावै? नानी रो भी तो हक हुवै— माजी तो टाबर री मा री मा सूं भी वडा हुंवता। एक छोटो-सो'क फूटरो टाबर उणां रै सनकर निकळै; ग्रर माया माजी सूं लुकावै; इण नै माजी घोर ग्रपमाण मानता ग्रर बदळै में टाबर री

मां नैं गाळ्यां काढणी मह् कर देवता ।

इण तरै छोटा टावर माजी नैं देसणानै भी नईं मिलता । जद कदेई कोई भूल्यो-भटक्यो अणजाण मिनख आपरै टावर नैं माजी रै हाटड़ै खानी लिग्रांवतो, तो माजी उण नैं सादै ढंग सू नईं देखता । वैग्यानिक ज्यूं जिनसां रो सूक्ष्म अनवेक्षण करै, उणी तरियां माजी आपरा दोनूं ऊंडा नैण टावर रै डील में गडोय देवता ।

दुकानदार माखीचूस हुवै, पण माजी टावर नैं पतासो-भुजिया देवता, माथै रै हात फेरता, बुक्को लेवता। पण माजी रा संस्कार किण देख्या ? टावर रो माईत जद दस पांवडा दूरतो तो माजी रा पाडोसी उण माईत नैं बताय देवता कै माजी कुण है ! कोई-सो'क ई इसो हुवतो जिको पाड़ोस्यां री सीख री परवा नईं करतो; अर तो सगळा थुथकारो घलावण नैं पाछा आवता । माजी गाळ्यां काढता, पाड़ोसी मोफत में तमासा देखता— यां दिनां बीकानेर मे बोलतो बाईसकोप नईं हो ।

एक दिन अठै तईं नौबत आयगी कै माजी थुथकारो नईं घालण मायं राफा अड़ग्या । मामलो इत्तो वधग्यो कै कचेड़ी जावणो पड़्यो । जज साब डाकण-स्यारी में भरोसो नईं करता इण कारण थुथकारो घलावणियै नै भीत

देखाळ'र फटकार लगायी– थे लोक एक ग्रनाथ डोकरी नै संतावो, थानै सरम को ग्रावैनी ?

टावर रै बाप हात जोड़'र ग्ररज करी– "जज साव ! हूं ग्राप री गोरी गाय हूं, ग्राप माजी कनै सू थुयकारो घलवाय दो।" जज साव मानग्या, वोल्या– "माजी ! थारो कांई लियो ? ग्रै कंवै है तो घाल दो थुयकारो। हूं कंऊ हू। वडै रो वडपण घटै थोडो ई है।" माजी कायदो रास दियो– 'थू-थू' करघो, जद माईत वोल्यो– "सा, हाल तई थूक टावर माथै पड़घो कोनी।"

सगळा मिनग्व, जज साव समेत, हैराण हुयग्या जद माजी साचाणी थुयको न्हाख्यो तो टावर ग्रापरी ग्रांग्यां उघाड़दी।

जचं ग्रा है कै का तो मोवो ई इसो पीवतो कै माजी रै थुयको घालतां ई टावर ठीक हुय जावता, ग्रर नईं जद, जे ग्राज रै तरकदार जुग मे तरक सू सोचा, तो माजी रै थूक में पञ्चायत इसी कोई तासीर हुवैली जिण सू टावरा रा कस्ट कटता हा, पण साची बात किसी है, ई रो बेरो मनै ग्रजू तई कोनी।

मनै सायळ चेतै है कै एक दिन माजी जद म्हारै नानाणै रै घर सानो मांवता हा, तो हूं, ग्रर म्हारी स्व० बैन

गवरा बाई, म्हे दोनूं गळी में रमता हा ! म्हे दोनूं वां दिनां टाबर ई हा । म्हां सुण राख्यो हो कै म्रा डाकण है ग्रर टाबरा री काळजो काढ लेवै । इण कारण ज्यूं ई माजी म्रांवता दीस्या, तो म्हारी वैन चिरळायी– 'डाकण म्रावै !!!' ग्रर म्हे दोनूं पांख्यां लगाय'र घर में उडग्या। डोकरी घर ग्रागै ऊभ'र निरी ताळ तई गाळ्यां काढी– "डाकण थारी मां, डाकण थारी नानी, डाकण थारी दादी ।"

माजी रा हाका सुण'र नानोजी घर माय सूं बारै निकळया ग्रर माजी री सिकायत कान देय'र सुणी। हूं ग्रर म्हारी वैन, म्हे दोनूं, पथरनां रै हेटै बड़'र लुकग्या, ग्रर काळजा करता हा फड़क ! फड़क !! नानोजी म्हां दोनां नै पथरना मांय सूं काढ लेयग्या । म्हा दोना नै समझायाः– "थे डरो ना, माजी थानै काई को कैवैनी, ग्रै तो थांरा लाड करसी ।" म्हे नानैजी री सगळी वाता सोळै ग्राना साची जाणता, पण ग्राज जीव में थावस को ग्रायोनी । इतै में माजी ग्राप घर में पधारग्या । माजी रै सामनै म्हा दोनां नै बैठाण'र नानैजी कैयो– "ग्रै थांरा ई दोईता-दोईती है ।" माजी रै काळजै में ठंडी लीक पड़गी, इसी लीक, कै हजार रुपिया दियां भी नई पड़ै जिसी ।

आज पैलड़ी वार माजी आपरी ऊमर में सुण्यो– 'अै थांरा है।" माजी रै नैणां में जळ छळकग्यो। बोल्या– "मेघराजजी ! सलदाद है थांरी छाती नै। दुनिया मनै डाकण कैवै, अर थां गुलाब-सा टाबर निधड़क हुय'र म्हारै आगै लाय'र मेल दिया।"

माजी म्हारै माथा ऊपर जद हात फेरण लाग्या, तो म्हां देख्यो– माजी अबै म्हांनै न्यारी, अर नानैजी रै आज काईं जचगी जिको बोला-बोला ऊभा है ! माजी म्हांनै अेक-अेक राणी छाप पइसो देय'र जद टुरघा, घर मूं वारै निकळग्या, तद मैं हात-पग हिलाय'र संभाळघा जणै ठा पड़ी– हां, हूं तो हाल जीवतो ई।

माजी देयग्या जिको पइसो इत्ता वरस तो म्हारै कनै साभ'र राख्योड़ो पड्यो हो। लारलै साल एक टाबर नै चाख लागगी जद एक लुगायी तीन दिनां खातर लेजावण री कैय'र गयी ही, जिकी आज पाछी आवै।

छैलजी

छैलजी रो 'छैलो' नाव पिंडत रो कढायोड़ो नई हो,
पण इणां रो रंग-ढंग देखनै लोग "छैलो-छैलो" कैवण
लागग्या। बुगले री जात गाभा, ऊपर सूं गैरी लील
मुट्ठी में मावै जिसो मलमल रो चोळो, अर धोती री पो
माखण जिसो। मुखमल रै पट्टै री पगरखी, जिकी सा
भर पैरयां बाद भी इसी दीसती जाणै आज ई मोलायं
है। मूंछ्यां काळी भंवर, बटदार। केस कुदरत सूं तं
सीधा हा, पण आंटा केस छैलजी नैं आछा लागता, इ
कारण केसां में बळ घाल'र उणां नैं जमावण तईं घटा
सवा घंटा, सरदार लोगां दाईं, पाटी बांध्योड़ी राखता।

टाबर हा जद सू घर रै काम-काज में तो म
लागतो, पण पढण मे अकल काम नईं देंवती। दूध रै
हांड्यां चिलकायोड़ी राखता, बिलोवणो कर लेंवता, मां
बाप रा पग दाबता, तेल मालस करता, अर उणां सू
घणी-घणी आसीस लेंवता।

फेर भी माईत इणां'नै सफा ठोठ राख्या नईं
चांवता। पोसाळ घाल्या– लिखमा मारजा री, दो पइसा
भर लूण-मिरच्यां री पूड़ी दुपारै सातर सागै देयनैं।

मारजा पैंलड़ी संख्या एक रो ग्रांक (१) पाटी में घाल दियो। छैलजी ऊंधो एको लिख'र मारजा कनै लेयग्या। मारजा बोलण में कांई मधरा घणा हा। बोल्या– "ग्रो कांई बाप रो माथो लिख्यो है ?" छैलजी लोगां नै गाळ्यां काढणी तो टाबरपणैं मे ई सीखग्या हा, पण ग्राप कोई री गाळ-गुपत नईं सुणता। मारजा री गाळ माथै रीस तो इसी ग्रायी कै मारजा रो मिगिायो मोम ना खूं। पण ग्रो काम दूर्यं सू परवार हो। छैलजी रै हात मे बिना चौखट री पाटी ही, जिकी सूं खैंच'र चेपी मारजा रै पुटपड़ा में, फेर धूक मुठ्या मे घर पार! मारजा रो माथो खुलग्यो। लोयी रा बाळा बैयग्या। छोरा पकड़ण मारू लारै भाग्या जित्तै तो छैलजी कठै रा कठै ई तैतीमा मनायग्या।

उण रै बाद छैलजी कोई भी पोमाळ रो मूंडो नईं देख्यो।

छैलजी मोटियार हुया तो भाईतां एको-घोड़ो दिराय दियो। छैलजी रै एकं-घोड़ै री बरू बात करणी! घोड़ै माथै हात फेरो, तो हेटै निसळै। एको करै घमघमाट, पळपळाट। माड़ो ग्रादमी उणां रै एकै मे बटण री हीमत नईं करतो। भाड़ो भी छैलजी दूजा दिखै सवायो-डेढो

संवता । घोड़ै रै टाग में घेवरू ऊंची-ऊंची राखता। टाग री मगमली रेग रोजीनै दागता, जिण सूं टाग ऊंचो राख रेवतो नै जे मोती भी पड़ग्यो हुवै तो झट लाध जावतो । घोड़ै नै दाणो भरपूर देवता । उण दिनां बीकानेर मे सेठ लोग तीन-तड़ां रो जीमण भी खूब करता, पर जीमण में ऊबरियोड़ो खारै घी अर खांड रो सीरो मांय-बारै एक रुपियै रो आठ सेर बिकतो । छैलजी रो घोड़ो सीरै सूं छकयोड़ो रैवतो ।

छैलजी घुड़दौड़ भी करता, एक-दो कोस री नईं, लांबी, दस-बारै कोस री । छैलजी रा वडा भाई बकता-अरे, कठैई चोट-फेट आय जासी, अथवा घोड़ै नै बाल लाग जासी । पण छैलजी मघजी नै मनाय'र राजी कर लेवता । छैलजी री दौड़ रा समंचार सुण'र सइकड़ूं लोग भेळा हुवता, एक सागीडो मेळो मंडतो, अर दुकानदार आपरी दुकान्यां लगांवता । छैलजी आपरी ऊमर मे मोकळी वार दौड़ लगायी, पण जीत सदा इणां रै सागड़ै रैवती । लोक-सभा री सदस्य चुणीज्यां पछै ज्यूं घर में मोकळी वधायां आवै, इणी तरै री बधाया घुड़दौड़ री जीत माथै छैलजी रै घरे आंवती, अर जीत सूं दूणा पइसा भाएलां री गोठ्यां मे खरच हुय जांवता ।

छैलजी जद नीनघटा में जीमण जांवता तो सीरो दांतां सू चावता नईं। सीरै री गोळी वणायी, भर गळै सूं हेटै गुड़कायी। जद सीरो पाछो आवणो सरू हुवतो' तो पतळी दाळ रो सबड़को लेय'र फेर गुड़कावण री मसीन चालू। इण रै वाद सीरो-चावळ सगाय'र जीमता। छैलजी री सीरै री खुराक तो चोखी ही, पण घर में दाळ-रोटी साधारण मिनख जित्ती ई जीमता।

आज भी जद छैलजी रो जिकर चालै, तो संगळिया निमकारो न्हाख'र कैवै— "छैलै जिसा मिनख कठै पड़्या है ?"

बाबूजी

जानकीदासजी म्हारै घर कनै रैवै, लोग वांनै बाबूजी बाबूजी' कैया करै। इस्कूल में पढता जिण दिनां आपनै 'बाबू' सबद सूं घणी चिड़ ही। आप कैवता– "बाबू तो ऊंठ नै कैवै।" दसवीं पास हुया, हैडमास्टरजी सागीड़ो साटीफिगट दियो– 'छोरो पढाई में बौत तीखो है, खेल-कूद में उस्ताद है। इण नै चावै किसै ई काम में घाल दो, घटिया साबत को हुवैनी। हूं चाऊं ओ एक दिन घणी जम्मेवारी री खुरसी सांभै अर ईंरो भावी जीवण सुखी रैवै।"

जानकीदासजी सोचता हा कै नोकरी कठै लागू, जित्तै ई हवाई सेना में भरती खातर सरकार रो न्यूतो आयग्यो अर दसवी पास करी जिण री बधाई भी सागै ई! मन में घणो हरख-कोड अर घमण्ड हुयो– म्हारै खातर आज सरकारी जागाया खाली पड़ी है। घर आळां नै चिट्ठी देखाळी तो बोल्या– अरे वा रे डोफा! आ ई कोई नोकरी है? दफ्तर में जे बाबू हुवै, तो तो फेर ई देखां भई आराम री जागा है, बेंत री कुरसी माथै बैठै, पंखो घालै, टाटा छिड़क्योड़ा रैवै।

जानकीदाम नै घर ग्राळा रो माथो घूम्योडो हुवै ज्यूं लागायो। घणो ई कैयो लाई– हूं किलरक को बणूंनी, ण सगळा च्यारां खानी सूं नाड दवाई जद माथै में जची कै जीवड़ा तनै ई बाबू होणो है– ऊंठ ! जद मालम पडी कै एक सरकारी दफ्तर मे केई बाबू भरती करसी, तो जानकीदाम भी गयो, पण ठीक टैम सू दो मिन्ट मोडो। फाटक ऊपर चौकीदार ऊभो हो, घणा बरसा रो ग्गड़ीज्योडो। नवो रंगरूट देखते ई लखग्यो कै भरती खातर मायो दीसे, फेर रौब गाठण मे क्यू कसर राखतो हो।

जानकीदाम रै इस्कूल मे घणा ई इम्तयान दियोडा हा, कदेई फस्ट ग्रावतो, ग्राज भी वीरी ग्रौलाद कै उण सूं ऊपर निकळ जावै। सवाल सगळा खरा, डिक्टेसण बिलकुल ठीक, लेख सागीडो, ग्रनुवाद बढिया, ग्रर ग्रगरेजी बात-चीत मे परखंट। इस्कूल मे तो फस्ट ग्रावणै पर भी माम्टरजी कदेई सौ मे साठ-पैसट सू बेसी नबर नई देवता, पण ग्राज सौ मांय सूं नूवे नम्बर ग्राया सू जानकीदाम फस्ट ग्राय'र घणो हरग्यायो।

जे दसवी पास कर'र कालेज मे भरती हुंवतो, तो पुराणा लड़का भलेई मजाक उडावो, बी ए, एम ए. वाळा,

पण फस्ट-ईयर फूल तो सगळा सरीसा हुवै। दफ्तर मैं जानकीदास एक ओर ई तरै री माया देखी– पुराणा बाबू लोकां तो सोच्यो कै उडतो पंछी आयो है, पण थोड़ा दिन रा भरती हुयोड़ा बाबू भी जानकीदास नै रमतो राम समझ बैठ्या। बाबू लोकां सोच्यो– वै खुद तो मां रै पेट में काम सीख'र आया; उणां नै कैण ई सीखायो नईं, पण जानकीदास मफा भोदो है, डोफो है, इण तरै वै आपस में बात करता।

थोड़ा दिन दपतर मे काम करचा पछै जानकीदास जूना बाबुवा रा कान कतरण जोगो हुयग्यो। घणा हुसनाकां नै तो अवै चिड़ी कर'र उडावण लागग्यो। दफ्तर में जे कोई सामान्य कार्य-क्रम हुंवतो तो बो जानकीदास री सल्ला सूं हुंवतो। अवै जानकीदास पुराणो बाबू है। रगड़ीजतै-रगड़ीजते पत्थर ई घसीज जावै, जानकीदास तो ठेट सूं ई हुसियार हो।

जानकीदास तड़कै वैगो उठ'र पाणी रा घडा लावै गायां रो काम करै, गोवर मेळो करै, थेपड़्यां उथळै, गंवार देवै, कुतर न्हाखै, गाया रै हात फेरै, गायां नै दूवै अर जरूरत पड़ै तो बिलोवणो भी कर लेवै। टाबरां नै न्हवावै, कपड़ा धोवै, पढावै अर जरूरत पड़्यां रोटी-पाणी, बरतण-

चौको कर लेवै। काम-काज री बेळा टाबरां री मां रो वोदो-पुराणो धोती-ओढणो डील रै वार-कर लपेट'र बेधड़क रैवै– फाटण रो डर नईं, फाट्योड़ै रो कांईं फाटसी ? डील ऊपर गिजो'क बंडो भी नईं चायीजै। माथा ऊपर कोई लीरो ल्हांग लेसी, उघाड़ो भी नईं दीसै अर मरदी-गरमी सूं बंचाव भी रैवै।

आप सोचता हुसो कै इसो जानकीदास तो दपतर माळा खातर जोवड होणो ई चायीजै, पण नईं, आ वात नईं है। दपतर री टैम ठाठ न्यारा है, वऊ रा पूर लपेट'र गया काम थोड़ो ई चालै, बठै तो पोजीसन सूं जावणो पड़ै। पूर लपेट'र तो चपरासी भी नईं जावै, वाबूजी कांईं चपरासी सूं ई गया-बीता है ? दपतर जावै कोट-पेंट में। कमीज तो मदेई घरे धोयोडो ई पैरै, कोट छठै-छमास धोबी कनै धुवावै, सियाळै मे नईं, ऊनाळै मे जद पसीनै रै ग्याळ री पापड़ी सूं गाभो करड़ो लकड़ हुय'र बड़करण लाग जावै। पेंट री छिब न्यारी है– धोय'र सुकोय दी, पेर सोवती बेळा बिछावणा हेटै दाबदी। थे-म्हे तो कैसां– घरे घा तो गळा रो झूचो हुयगी, पण जानकीदास कैसी– धमम उतरी हुयगी।

इण बात सूं थार समझ्या हुयोला कै जानकीदास

कोई यावै आदम रै जमानै रो मिनख नईं है जिको उस्तरी सार समझतो नईं हुवै। समझै घणो ई है, थां-म्हां सूं वेसी, पण रूपली पलै तो रोई में चलै। जे धोवी कनै धोवाय'र इकांतरै गाभा पळटणा चालू करदै तो काल टांगड़ा ऊंचा हुय जावै। इण कारण टैम देख'र चालै, सौरख सारू पग पसारै, बगत देख'र नईं विणजै जिको बाणियो ई गिवार।

लारला दिन चितारै जद जानकीदास उदास हुय जावै। एक टैम ही जद धेलो बण्योड़ो रैंवतो, हात सूं लोटो ई नईं भरतो। जद कोई लखपती नईं हो, पण फेर भी हात खरलो हो, कारण कंवारो हो, अबै घर आळी तो है जिकी है ई, पण वधेपो भी मोकळो हुयग्यो, आधी दरजण टाबर तो अवार है अर आये साल पारसळ त्यार! जानकीदास नै डर है कै छव बरसा मे गिणती दरजण तई पूग जासी। जे साचेई दूणा हुयग्या तो जानकीदास कुवो-पाड करसी'क, घर छोड'र लंगोटी लेसी'क, कांई करसी या जानकीदास जाणै, का जानकीनाथ जाणै।

टाबर या नईं देखै कै बापूजी उणा रै ई कारण मन्नू-भिगदर हुवै ज्यूं रैवै। उणा रो गोपणो संभव भी नईं, कारण टाबरा नो वापरै जणम गु बापूजी नै इणा ई

चाले नईं। पचीस-छाईस तारीख सूं ई लैणायत धेग घालण लाग जावै, अर एक तारीख नै आय'र छाती ऊपर जम हुवै ज्यूं ऊभ जावै। बऊ-टाबर दीन-हीन रो मामा देखबो करै, बाबूजी बटवो भड़काय दै, फेर मई भर उधार सूं ई काम चलावै।

बरसां रै साथै केस धोळा हुयग्या, गोडा सीळा पड़ग्या, अर बाबूजी अबै बडा बाबूजी बजण लागग्या तिणखा जे च्यार आना पाली बधी तो खरचो बीस आना बधग्यो। बूढ़ा मा-बाप अबै नदी कनारै रा रूंख है, पण खाली हवा रै भकोरै सूं टूट'र नदी में बैय जावै अर खेल खतम हुय जावै आ बात नईं। एक-एक नै आपो करण सारू कम सूं कम दो हजार रोकड़ी चायीजै। बऊ आपरा गैणा देवै नईं, घर जे अडाणै धर दियो तो माथो पटक'र मरया भी पाछो छूटै नईं। बापोनी है, हात सूं गमावणी भी चावै नईं। मां-बाप ई बयूं, दो बेट्यां अबै बडी जूर हुयगी, परणावण सावै, अर फेर भी दिन बधती रात बधै, रात बधती दिन बधै, जिकी बाबूजी री छाती माथै दो पाड़ हुयै ज्यूं सरावै।

आ बात मानी कै बाबूजी पैली, इस्कूल रै दिनां मे, घणा हुसियार हा, पण जद मार्ट-शाळ री भाव मालम

फरणो पड़ै तो भला-भलां रा तोता मूक जावै। इण हालत में जे बाबूजी चेनाचूक हुयग्या हुवै तो कांई इचरज ? दफ्तर घर सूं आघो है इण कारण बाबूजी साइकल तो राखै, पण साइकल री हालत किसी'क है, आ ना, पूछया; आ कलम जे कोसीस करै तो भी बखाण नईं कर सकै। नो री कलम नो री साइकल री निन्दा नी नईं कर सकै, पण संखेप मे, बाबूजी कनै दो पइयां रो गटारो है जिण नै घीसता, हातां मे घीसता, बाबूजी णी वार जाया करै। जद जमानो ई रूठग्यो, बाळपणं रा साथी दांत ई धोखो देयग्या, तो साइकल क्यूं नी रूठै ? कदेई राजी हुवै जद साइकल खणखण-भणभण, खड़खड़-भड़भड़ करती टैमसर बाबूजी नै दफ्तर पोंचाय देवै।

दफ्तर में बाबूजी घणा चिड़ोकला वजै। कोई छुट्टी री अरजी लावै तो गळै पड़ जावै, फाइल फेंक देवै। इसो बरताव पुराणा बाबुवां मायं नईं हुवै। उणां सूं तो बाबूजी रो रूं कांपै। जद-कदेई कोई पुराणो बाबू भड़जावै, तो आप आतम समरपण कर देवै– इत्ता बरस तो काढ दिया, दो-च्यार बरस ग्रौर रैया है, सावळ काढण दो तो निकळ जासी, नईं तो आज ई अवकास लेय'र घरे बैठ जाऊं।

हूं तो म्हारै धरम सूं बंधो हूं नेई तो बुरो करतो बक
थोनी, थे लोग फेर भी मन करो तो थांरी मरजी है।

[illegible] मांय बाबूजी घणा ई नाराज हुवै।
कोई घरे काम करण नै नहीं आवै, तो नोकरी सूं [illegible]
री [illegible] देवै। [illegible] पुराणो [illegible] है, [illegible]
बिगाड़'र कांई करणो है? जिकै दिन घर सूं लड़ाई क
खायोड़ा हुवै, वीं दिन तो [illegible] रै पूरी आफत
जावै।

कदेई-कदेई आप कोई कागद अठीनै-वठीनै
धराय'र भूल जावै, दफतर में बाबुवां अर चपरास्य
धकण लाग जावै। जद जोवै तो कागद खुद रै कनै
जावै अर बाबूजी घणा लजखाणा पड़े— "अरे भई, क
कदेई म्हारो माथो तप जावै जद हूं थोड़ो गरम हुय ज
पण म्हारै कैयोड़ै री थे रीस ना करया करो।" आ
सुणै जद दफतर समझ लेवै कै वडै बाबू आपरी ग
कारण माफी मांगली।

बाबूजी दोलड़ो चस्मो राखै लिखती वेळा नैड़
जिण री फरेम रद्दी-सो'क हुवै। जद साब री घंटी
तो पैली जरदो थूकै, चस्मो उतारै, अर बढिया फरेम
आधै खातर, दूजो चस्मो नाक मार्थ चढावै। साब री

तो बाबूजी रै नैड़ेई आवै, पण तो ई बाबूजी नै इयां लखावै जाणै जमराज री घंटी आयी हुवै। घंटी आंवते ई दिल री धड़कण बध जावै, हात-पग थोड़ा-थोड़ा धूजण लाग जावै, अर लाठी टेक धरता बाबूजी साब रै कमरै में जावै, मारग में जे कोई आगड़ण री चीजां पड़ी हुवै तो पड़ायन हाड भळवीज जावै। साब रै सामा बाबूजी घणा बोलै नईं, जीभ सूं बेसी हात हिलावै। हात री सैन में जद साब नईं समझै तो बाबूजी नै मूंढै सूं बोलणो पड़ै। कदेई-कदेई आनबोदासजी रै मूकपणै माथै साब अमूज'र झुंझळावण लाग जावै, जद रीस में पूछै– डबी! (गधो), तो बाबूजी कैवै– यस, सर (हां साब)। साब पूछै– मबी! (बादरो), तो बाबूजी कैवै– यस, सर (हां साब)। जद कमरै में साब अर बाबूजी दो-आ-दो हुवै जणै तो 'डबी-मबी' बाबूजी नै खारा नईं लागै। डबी-मबी रो मतलब बाबूजी समझै– 'आनबोदास'। पण जद-कदेई दो रै सिवाय कमरै में तीजो हाजर हुवै, अर भाग सजोग, साब रै माथै रीस रो भूत असवार हुय जावै, उण वगत कोई फाइल काढण रो मिस कर'र बाबूजी आपरै कमरै में आवै परा, जिणै तीजो आदमी जावै ई जावै।

इण तरै बाबूजी जद दफ्तर सूं घरै आवै तो [illegible]

सगती गरच हुय जावै । थक'र चूरमो हुय जावै । डील सगळो सूनो लखावै । मन में तो आवै कै धाणी रै बळद दई दिन-भर खटूं, पण फेर भी पेट रै पाटी बाघ्योडी राखणी पड़ै, इसी नोकरी सूं तो निकमो बैठणो चोखो। घरे आय'र साइकल खूणैं में मेल देवै अर मावै मावै गुड़ जावै । आधो घंटा तई लोथपोथ सूता रैवै, पाणी रो गिलास पीवै, टावर हात-पग दावै जणै सगती बावड़ै अर पाछा जीवता हुवै ज्यूं दीसै ।

बाबूजी री घणी मनस्या ही कै टाबरां नै डाक्टर बणाऊं, अंजीनियर बणाऊं, पढाई करावण सारू विलायत भेजूं, पण अवै ठा पड़ी कै वै मनसोवा फालतू है । आप कलम-घसाई करै ज्यूं ई टावर करता दीसै, पण इण मे जोर कांई चालै । कैई री घर फाड़'र तो रुपिया लावण सूं रैया, केई रो खजानो तो लूंटण सूं रैया ।

आघो सिरकावतै-सिरकावतै भी एक बेटी रो ब्याव तो नैड़ो आय ई गयो । ब्याव में खरचा-बरचा भरपूर हुया, पण जानकीदास री जान नईं निकळी ओ कुसळ मनावो । काळजो वळण में, अर लोपी छीजण में तो कांई बाकी रैयी कोनी । पण जे रुपियै नै पाणी दई नई वैवावै तो बेटी रै सागरै आळा राजी नई हुवै, अर जे उणां सूं

मेंहनै मेळूं ई धामनी गटक जावै तो कमर भर रो टंटो। इण कारण बेटी रै ब्याव में भाई जानकीदास री टाट मोकळी कूटीजगी।

बरात राजी-खुशी पाछी गयी परी जणै जानकीदास नै थाप'र नींद आयी। पण जित्तै तई सगळा टाबरां नै नई परणावै, जीव हेटो नई हुवै। सोच हरदम बण्योडो रैवै। घर में गधै जिनो गोरखो करै, दफ्तर में बराबर पीसीजै ई है, पण फेर भी जिण वगत दफ्तर सूं आय'र आध-पूण घंटा सुसताय लेवै अर छोटा-सा'क टाबरिया आय'र वार-वार लटूंब जावै, उण वगत जानकीदास उणा रो हमजोळी हुय जावै, तोती बोली में बोलै, कूडेई-कूडेई रीसाणो हुवै, फेर पाछो राजी हुवै, रमतिया में जीमण-जूठण करै तद इण दुनिया रै सगळै दुखडा नै पळ-छिन खातर विसर जावै अर इया सोचै कै हूं भी मिनख हूं अर मिनखा जूण रो थोड़ो-घणो सुख म्हारी पांती भी आयो है। पण जानकीदास आ भूल जावै कै इण तरै आपरै टाबरां सागै खेल करणो ई मिनख जूण रो सुख नई है, आपरै टाबरां सागै तो छोटा-मोटा सगळा जीव-जिनावर भी खेल करै, अर घणा-घणा सोवणा।

हां एक दूजी चीज भी है जिण सूं बाबूजी नैं मस्ती आवै, अर वा मस्ती जिनावरां मायं नईं छावै। दफ्तर सूं आयां पछै बाबूजी थोड़ो नसो-पतो करै जिण सूं रोटी भी भाय जावै अर फेर नसै में पड़्या-पड़्या मस्ती में रात काट'र दिन ऊगै जद सागी धन्धै में पाछा जुत जावै।

फदड़पंच

थांरै जचै तो थे बोलो, नई जचै तो ना बोलो, जचै तो बुलावो, नईं जचै तो ना बुलावो, पण जे थारै घर में कोई काम-काज, एढो-गुमनो हुसी तो फदडपंच बिना बुलाए आय'र कर्ण काम-काज में लाग जासी इण री जे आपनै ठा पड़ जावै तो हूं होड करण ने त्यार हूं। घर-गिरस्ती में इसो कोई काम नईं है जिण रो काम-चलाऊ सू वेमी ग्यान आपनै नईं हुवै। जे दूजा मिनख काम-काज करता हुसी तो झट खोट काढ'र आप बिच मे हात घाल देसी। पण सफा ठोठ नईं है, इण कारण लोक इणां रो मिझो भी मानै। कोई पाछो टोकण री हीमत नईं करै— भई थे हुवै ज्यूं देखवो करो, बिच मे स्याणप ना करो। पण जे कदास कोई रोक-टोक कर देवै, उणरो लारो छूटणो सैज नईं। सगळा नै सुणाय'र आप कैवै— 'अबै सदी इसी आयगी, लोक सागी बाप रो ई आकस को मानैनी, थे-म्हे किसी गिणती मे हो ? जलम रा देवाळ है जिका नै ई आजकाल रा टाबर आंट में राखै। माईत जे माईतपणो जतावै तो सीधो गळी रो रस्तो बतावै, घर

कंठ-मिठाई गुणागर नै स्यार रैवै । जिकै देस नै ए
मानुस जनमै वो फेर मरुधर री मनु' नी करै ? म्हारै इसो
दुन तारै रा भाग भग नागै ।

इसै मौकै म्हारै घर-धणी तो ठंडा-मीठा पानन री
मोसीस करै, पर म्हारा मायोड़ा देवै— काम-राज मो
हुगी, घमतो-फिरतो रेडियो घामग्यो । पण जे म्हारा मुंडै
कै मनै घमतो-फिरतो रेडियो कैवै, फेर देखो मन-
रेडियो थांरो बाप, थांरो दादो । रेडियो कंवन वाळै रै
माथै मारूं रेडियो ।

जे कोई इम्मां री बडाई कर देसी, उण रा तो म्हारा
भाग समझणा चायीजै । आप कवै— थारै जिसै मिनख
री मनै आज सूं वीस बरसां पैली घणी जरूरत ही जद कै
हूं मम्बाई जूट असोसिएसन रो सभापती हो । उण बगत
मनै जिका ठीक-सर मिनख मिल्या, वै आज हजारूं रुपिया
बटोरै है । पण मनै चायीजता हा हजारूं आदमी, थारै
जिसा सुपातर । आजकाल री सदी में थारै जिसा टाबर
नीठ-निरावळ ई लाधै ।

मरणै, परणै, सभा-सोसायटी रै कारण घणो-सो'क
तो आप रो टैम रूध्योड़ो ई रैवै । बिना बुलाए तो जासी,
पण जे बुलासो तो मिन्ट एक री फुरसत कोनी— हात

भाल'र थांनै पांच-दस मिन्ट खोटी जरूर कर देमी। कां वास्तै ? आ बात बतावण खातर कै आज आपनै किसी-किसी जागा जावणो है, अर जे नईं गया तो कोरा-कोरा ओळभा आसी, अर देस रै उत्थाण री समस्या में कित्तो भारी नुकसाण पुगसी। थारै जे आगै जरूरी काम खोटी हुवै है तो ई इणा रा अंगेजमेंट तो सुणना ई पडसी। पण कदेई-कदेई मारकेट सफा ढल हुय जावै, अर इसी हालत में आप चुपचाप घर में आराम करै, आ बात मभाव मू बारै है। हात-पग हिलै जित्तै आराम करण री सौगन है। रात नै नींद ऊपरियाकर फिरण लाग जावै जणै ई बिछावणा भेळा हुवै। तो फेर बजार सुस्त हुवै जद आप काई करै ? निकमो नाई पाटिया ई मूंडै। केई सेंधै रै घरे जासी परा, फठीनली-वठीनली बात छेड़सी, मौको देखतै ई भट उण रै केई दूजै सू वैर पलावण री कोसीस करसी। ज्यूं इण सेंधै रै घर में लाय लगावै, उणी तरै आगलै रै घरे जायनै उण रै भी चूसकी देवाळ ई देवै। जद दोनां में तणा-तणी हुय जावै, अर फेर नैणा सू रगत बरसण लाग जावै, उण बगत आपरी सालीरी पूरी हुवै, अर आप पाछा राजीपो करावता फिरै।

इसा तो हुयग्या, पण हाल ढोल में बराबर है।

लड़ाई-झगड़ै में झट बूकिया चडाय'र मैदान ई [illegible]
त्यार रैवै— मनै केई रो डर कोनी, हुती ज्यूं दोनों
मरसां अर मारसां। जाणूं तो हूं कै सामनै नै।
लासूं, पण जे दस धड़ू अर एक साथ सूं तो भो कै
कोनी, लड़ाई में जावै जिका मार सूं मोड़ा ई रो
में तो मार ई पांती आवै, कोई लाडू मोड़ा ई बटै।

नगी ठगो मोग मोड़ी ई दियोड़ै । पण म्हारां मो गरीबां नै पहली नेहलो इनाम बगादर ममको। वे देवो किना तरा मो धर्म मकैरी मायला-जायल मं नांगे थाई में ई नाग जावै। म्हागी मान मो कोई मन्दरी-विगोड़नी मुगो पगं जिका गृ ई मानें। ये वापड़ा गरीब आदमी पेट गोल-गोल र पढ़गो भेगो बरो इगो पढ़गो है बठै गार ?

पदरपच मान्हे गैर री पचायती करै मनवाड़नै-पगवाड़नै गांवा रो मोग भी थापने बुलावे, पर बठै मार तमागू गुप-गुप'र पंचायतो करै, इण तरै, जाणै गांवेई पव परमेसर ई है। पण घर मे बई जद पचायती री मोठो वारै गोल'र थावे। वेटै री वऊ मु इगो थावै ज्यूं कंदगे मिस्री गूं। गम-गम मे घर री भींतां रै तमागू रा हात पूंछ देवना, घटीनै-पटीनै गंगार थूक देवना घर जीमण गातर टैम-कुटैम मांवना, पण बेटै री वऊ किसी मस्ट पीर इणा री हाजरी मे बैठी रैवे ? एक दिन बनै बैठी छोरी नै बिच मे लेय'र वो पदडपंच नै गुणाय दियो– रोटी जीमणी हुवै तो टेमसर श्राया करो, नईं तो म्हारै सूं लिया-लिया ग्रडीकीजै कोनी। म्हारै श्रौर ई घणा ई काम-धन्धा है। मुमरजी मन में सोच्यो– वऊ मठ मे बैठी

मटका करै है, एक दिन जे म्हारै सागै बारै निकळ जावै तो ठा पड़ जावै कै कोंरै घरगो काम है, पण आ वात आप मन में ई सोच'र रैयग्या, मांय रो मांय पीतो गिटग्या। गिटै आपेई— भूख लागै जद किसा थे-म्हे जीमासां ? पाछो तो वीनगी आगै ई मांडगी पड़सी। या जे कोरपां सूखयोड़ा फलका अर पाणी सू बधायोड़ी दाळ भी पुरसगी, तो ई पेट रो देवता तो सान्त हुय जासी।

"रपियै-पइसै री कूंची, मव-बुद्ध उरा नै ई भोळायोडी ही। इसै कंवण श्राळा रा हिया फूट्योड़ा है जिको कंवं कै उग नै दुग देंवतो। जे म्हारी लुगाई नै दुग हो, तो पेर दुनिया मे मुग्वी लुगाई लाधणी श्रोरी है।"

म्हाराज री बात लागै तो सफा साची है, पण पाडोसग कंवं कं लायण रं जामू-रा-जामू उपाड़ देंवतो। कदेई पेरण नै चोखो गाभो दियोनी, ना कदेई लाड-कोड मूं बतळायी। वा तो मरती वगत इण मसाण मू बोलण री मन मे ई नेयगी, अर स्रो श्रक्कड़धज हुवं ज्यू हुयोडो रैवतो। वा मरती मराप देयगी कं कोढिया! तै म्हारी श्रातमा बाळी है तो म्हारं मरया पछं तनै लुगाई रा सपना ई श्रासी, तूं लुगाई-लुगाई करतो मर जासी, पण तनै लुगाई को मिलैनी।

म्हाराज कूडा'क पाडोसी कूड़ा, श्रा तो ठा नईं, पण श्रवार पचावन बरसा री ऊमर मे भी म्हाराज च्यार-पांच हजार रुपिया देय'र भी ब्याव करण नै त्यार है। जे कदास कोई चोखो टाबर श्रापरै ध्यान मे श्रावै, तो भटपट चिट्ठी-पतरी लिख दिया, हजार-पांच सौ श्रापनै भी मिल जासी। पण इण बात रो पक्कायत ख्याल राखजो कै टाबर

ब्याव न कोई ब्याव ! वडो ब्याव बाकी रैयो है जिको म्हे करणे ई लकड़ा में कर आसां।"

म्हाराज रो संसार सूनो हुय जावै, गाल ढीला पड़ जावै, आंख्यां, थोड़ी-थोड़ी, मारनै भेंस जिसी दीसण लाग जावै, अर संस्कार माड़ा है, आ सोच'र म्हाराज छाती माढो भाटो देय'र रैय जावै।

पाड़ोसण म्हारें तीन-च्यार महना सूं सेंधी ही, पण 'राम-राम माजी', 'राम-राम भाई' इण सूं बेसी बोल-बतळावण म्हारै ग्रर माजी रै बिचाळै नईं ही। थोडा दिनां में सेंध वधगी, ग्रर एक दिन माजी मनैं भुम्राजी री पोथी रा थोड-गा'क पाना सुणाया। पाडोसण ग्रापरै जीव री सौगन दिरायी कै भुम्राजी री बात सवड़ै नईं हुवै। मैं हुंकारो भी भर लियो, पण ग्रबै पाडोसण मरगी, मरी नै खासा बरस भी हुयग्या, ग्रर म्हारैं सूं भुम्राजी री बात कैंयां बिना रैयीजै भी कोनी, जद हूं देखूं हूं कै ग्रबै बा सौगन उतर-उतरायगी, इण हालत मे जे हूं भुम्राजी री बात सुणाऊं, तो मनैं कोई ग्राट लखावै कोनी।

पाडोसण बारणो ढक'र, फेर ग्रठीनै-बठीनै, ऊपर-नीचै, च्यारा खानी, भाक, फेर बारणै री भोगळ संभाळ'र धीरै-धीरै कैंवण लागी– "देख, ग्रा बात तीजै कान ई नईं पूगणी चाहीजै।" मैं भरोसो दिरायो, जणै माजी बात सरू करी–

"सिध मे म्हारो ग्रर भुम्राजी रो घर कनै-कनै ई हो। हूं तो ग्रानै है जिसा जाणूं हूं। बठै जणो-जणो ग्रां मे पइसा मांगतो हो, पण वानै निपटावण मे ग्रै भी बडा हुसियार है।

दूध माळो कंयवो– "माजी म्हारो हिसाब करदो, तीन-तीन महना हुयग्या।"

भुआजी– तू घोमोदोलो है, थारै काई परवा है, तीन महना ई तो हुया है, का तीस बरस हुयग्या ?

दूध माळो बडबडाट करतो जांवतो– पइसां बिना गायां रो पेट किया भरां, जे आंवतै महनै पइसा नईं दिया तो मनै अंधी बंध करणी पड़गी।

साग माळो– भुआजी, म्हैं सौ-सौ बार कंय दियो– म्हारै लटाव कोनी। हूं म्हारा पइसा मवार रा मवार लेसू। आऊं जद ई कंयं "काल आए, काल आए" थांरो काम तो कदेई आवै ई कोनी।

भुआजी रै घरे कोई सगो समधण आयोड़ी ही, उण रै सामनै ईजत राखण सारू भुआजी बोल्या–

'अरे गोवन्द आज मिस्री डाक'र आयो दीसै है। थारै-म्हारै बरसा सूं वौवार है, कदेई तूं तगादै रो नाव को लेवैनी। पइसा थारा अखरे-पखरे। अबार ई लेजा भलेई। सौ रो लोट है, खुला लाघसी ?

इण तरै साग आळै नै ठंडो-मीठो घाल'र भुआजी बईर कर देवता।

कपड़े आळो– घर रै बार कर घेरा घालते-घालते

म्हारा तो नखिया धमीजग्या, अर थारै हाल टरकावण सिवाय दूजी बात ई कोनी ? साल म्हारै बाबैजी रो तो हो थो नी । सेठ सदेई ओळमो देवै कै तैं इसी च्यार सौ बीस लुगाई नै कपड़ो उधार दियो पण दयू दियो ?

भुग्राजी तरांटो लाय'र बोल्या– बळ्चो माजनो थारै सेठ रो । च्यार सौ बीस तू, थारो सेठ, अर सेठ रो बाप ! मनै इसो ठा को ही नी कै थे एक कौडी रा मिनख हो । हूं थांरा पइसा एक घडी-पल खातर ई को राखूंनी । लै जाए थारा पइसा एक तारीक नै ।

कपडै आळो– आज तारीक तो दो ई हुयी है । इयां काईं ग्रावतै ई सगळी तिरणखा रो गब्बो करग्या ? भासा-पट्टी सिवाय दूजी बात ई कोनी । परमातमा आगै जीव देवणो है । क्यू कूड़ बोल-बोल'र पापा रा भागी बाधो !

फेर धीरैं-सी'क 'आछी लुगाई सू पानो पड़्यो' कंवतै-कंवतै गाभै आळो जावतो परो ।

परचूण आळो– क्यू माजी, आज दो तारीक है, था आज रो पक्को वैण करद्यो हो, आंख्यां री सौगन खाय'र ।

भुग्राजी कनै जाय'र धीरैं-सी'क बोल्या– अबार आप (धणी) घर में है । जोर सू ना बोल । जे हाको सुण लियो तो कैसी– :"टकै-टकै रा आदमी तगादै आवै ।" हूं

जिस्या थारोई चुगता कर देवूं । थोड़ई-थोड़ई थोड़ो ई नहीं, धोल्या री गोवन खाय'र चैन करतां हो तो मनै किसी म्हारी धोल्या खारी लागै ? थारै पांच-सात रुपियां खातर ई म्हारी धोल्या गमावूं ?

वरतण चोकै आळी– पांच महना हुयग्या 'काल-काल' करतै ।

भुम्राजी– तू किसी लोक है, म्हारै टाबरां जिसी ई तूं है । थारै-म्हारै कोई पइसा रो नातो थोड़ो ई है ।

व० चोकै आळी– ओ तो थारो माईतपणो है पण गाय जे घास सू भाएला घालै, तो खावै कांई ?

भुम्राजी– लै, दो रुपिया ले लै अबार तो, फेर हैंसाब करसां जणै देख लेसां ।

व० चोकै आळी– भूत री ठीकरी में न्हांखदो दो रुपिया । कोई खैरात बांटो हो का किरियावर करो हो ?

भुम्राजी– क्यूं, नकूडो घणो वाजण लागग्यो दीसै आजकाल । आयी जद तो गाय हुय'र आयी, अर अबै म्हारो खसम बणी चावै है ?

वरतण चोकै आळी– म्हारो नकूंडो टोरया तो थे थांरी जाणो । पइसा बूकिया री कमाई रा खाऊं, लोकां रा हड़प-हड़प'र हजम को करूं नी । मनै म्हारा पइसा

दे दो, नईं तो म्हारं मिनखी कोई भूंडी को है नी।

भुआजी– जा गाट ! पटगा देय'र भूनगी काई ? तू आयी जिके दिन ई म्है तो थारो ग्यान गिण नियो के कोई गटचाळ दीसै, पण आप (धणी) नै बंदां नू राग्वनी। मैं म्हारी नूंई नी नूंई धोनो थोरनी, अर 'आपरा' कोनै ग वोनाम थारै सिवाय पईै ई दळघा कोनी। रपिया मागनी नै गनै गरम को आवैनी ? ईजनदार लुगाई हुवै तो इसो काम कदेई को करैनी। तू तो टगणी में नाक डुबोय'र मरै जिसी दान है। धंनी म्हारी जिनस्या रा रपिया अठै धर, पछै मांग थारा पटगा।

घरनप चौकै आळी पूत-नगम री गाळयां काढनी-काढनी गयी। जद कदेई दोरी कमाई रा पइसा याद आवता, तद भुआजी कनै जावती, धणीमारी गाळयां काढिआवती, अर चौगणी मुणिआवती।

म्हाजन– का तो सगळै घर रा म्हारै अठै आय'र सलढघा गावता कै– थे ई काम काढसो, नईं तो बेटै रो ब्याव अटक जासी, ईजत रेत में रळ जासी, अर आज हूं पइसा पाछा मांगू जद थांनै बोलण नै ई फुरसत कोनी। क्यू, थे कोई म्हारै माथै मांगता हा जिको लेय'र हजम करग्या ?

भुग्राजी– थांरो गुण तो म्हारै पेट में है। मिनख ई मिनख रा कारज सारै।

म्हाजन– आ बात तो ठीक है, पण सऊवारो तो दिया-लिया सू रैवैलो। काठ री हांडी तो एकर चढै, घड़ी-घड़ीवार तो चढ़ण सू रैयी

भुग्राजी– इसी बात ना करो। हूं किसी थांरा रुपिया नटू हूं? म्हारो बाबू ग्रबकै लाटरी भरमी। गिरै-दसा चोखी सिरैकार है। बाबू नै जोतस रो ग्यान घणो ग्राद्यो है, कैवतो हो कै ग्रबकै इनाम पक्कायत ग्रासी। एक लाख! ग्रर इनाम ग्राया पछै हूं थांरा रुपिया एक मिन्ट ई को राखूंनी। मोट में हजार रुपड़िया तो है ई। मिनख री दसा घिरता कोई ताळ थोड़ी ई लागै।

म्हाजन– थांरो बाबू तो परमातमा हुसी, पण ईंसू म्हारै दाळ ग्रावै'क लूण? झट कैय दियो– "हजार रुपड़िया।" 'रुपड़िया' कैवते जोर को ग्रावैनी। लोई रो पाणी कर'र दोरा घणा कमायोजै 'रुपड़िया'। लाटरी में ग्रायोड़ा कोनी, हाड रोळ-रोळ'र भेळा करयोड़ा है। रुपिया तो म्हे भी लोकां सू उधार लेंवता ग्रर मोकळा लेंवता, पण कदेई इसो मौको नईं ग्रायो कै म्हाजन म्हांरै घरे ग्राय'र तगादो करयो हुं

एक वार तगादो ग्राय जावै जिकै में ई मरण हुय जावै,
ग्रर थे लोक इसा खोटी नीवत रा, कै थांरै तगादै रो कोई
ग्रमर ई कोनी !

भुग्राजी– "नीवत खोटी ?" ग्रा काईं जाण'र
कैयी। (बेटै-घणी नै धीरै-सी'क हेलो कर'र) देखो, ग्रो
काईं कैवै है। (फेर म्हाजन नै) पण वना, थारो दोस
कोनी। म्हारी दिन-दसा ग्राज इसी ई है। ग्राज म्हारै
तन गे गाभो ई वैरी वण्योडो है, तू ग्रालतू-फालतू बात
सुणावै जिकै में तो इचरज ई कांईं ? म्हारै तो ग्रापजी
रो बीमो करवायोडो है। कम्पनी सू ग्रांवते पाण थार
रुपिया फण्ण दैणा फेंक देमू। जे कूड वोलूं तो माईता
माड्योड़ै मे वैठी हूं।

इसा किता ई तगादै ग्राळा भुग्राजी रै घ
ग्रावता, पण भुग्राजी मूढो देख'र टीको काढता रेवता
भुग्राजी वजार में निकळता तो फूंक-फूंक'र प
धरता। किमै पासी जावणो है, ग्रा सावळ सोच'
जांवता, भुग्राजी ग्रचाणचक कोईं गळी में न
जावता । एका-एक गयां चोर-जार रो डर तो नईं हु
पण लैणायत रो खतरो सामा रेवतो। जे सोच-विचार
निकळता, तो ई घाट-दग सूं तो भेटा हुय ई जावता। प

भुआजी री छाती नैं लरादाद। आं रै चैंरै मायं तगाई री रत्ती भर भी असर नईं आवतो, अर साधारण मिलण-भिटणिया जिसा चैंरै मायं भाव देखाय नैं भुआजी ऊंतावळ अथवा जरूरी काम री मिस करनैं लैणायतां सूं लारो छोडांवता।

एक दिन एक लैणायत घरे आय'र धरणो देय दियो। रुपिया दिया बिना उठूं ई नईं। साथैं एक-दो गुंडा भी लायो। जमी मायं मोकळा सोट पटक्या। गळी में राणोराण लोक मेळा हुयग्या।

पाड़ोस्यां बिच में पड़'र बी दिन लैणायत नैं खाली हाता उठाय दियो, पण फेर भी भुआजी रो मन उण बस्ती सूं काठो धापग्यो। और कठैई जाय'र रैवण रो मनसोबो करता हा। सिंध मे घर हो जिको भी अडाणैं राख्योड़ो हो। बठै अबै भुआजी नैं कांई करणो हो? नूई काया, नूई माया।

इण मौकै पाकिस्तान रो रोळो हुयो अर भुआजी करजो बठै छोडनैं रातो-रात भाग निकळ्या।

इत्ती बात सुणाय'र माजी एक बार फेर सौगन कै भुआजी री बात जाहर नईं हुवै। फेर आपरी ़ी साभी, अर अधर-अध रटुरग्या।

थोड़ा दिना पछै एक दिन फेर माजी आयग्या
ऱ म्हारै घरै बरै ऊभग्या । म्हारै अदीनवार री
छुट्टी बागगा पुरगन समझ'र ई वै आया हा । जदपी
वै छुट्टी मे करण साह मोकळो काम भेळो कर राख्यो
हो, पण घरे आयोड़ा माजी नै बैठण री मनवार
कर्या बिना किया सरै ? माजी इत्ती नै अडीकता हा।
झट पमथाई पड़ी श्रोरी माथै बैठग्या । जद वै बैठग्या
तो हूं कलम मेज माथै मेल'र बोल्यो—"काई हुकम है
माजी ?"

माजी बोल्या—"थारी रळी आयगी, जद मिलण
नै निकळगी ।"

हूं बोल्यो—"आछो काम कर्यो । ठंडो पाणी
लाऊ ?"

माजी कैयो—"पाणी तो हूं अबार पीय नै आयी हूं,
निम कोनी । घर मे श्रौर कुण है ?"

"घर मे तो कोई कोनी । क्यू कुण चाहीजै ?"

"नई चाहीजै कोई कोनी, तू चावै तो भुआजी
री वात थोड़ी श्रौर सुणाऊं ।"

पारको मैल निचोवण री मनस्या तो ही कोनी,
पण माजी री मन राखण सारू हूं रुची देखाळतो बोल्यो-

"हां, हां, सुणावो माजी ।"

माजी वोल्या–"पैली वारणो जड़, पछै वात रू
करूं । जे भुआजी नै ठा पड़ जावै कै आ री बात तो
मैं कैयी है, तो मनै चीर गेरै ।" इया कैय'र डोकरी
खुद उठ'र आडो ढवयो । फेर मनै पूछयो– थारै काम तो
खोटी को हुवैनी बेटा ? हूं तो निकमी हूं जणे इयां ई
आयगी ।"

मैं माजी नै "काम खोटी" रो उथळो तो नईं दियो
पण कैयो– हां, अबै सरू करो माजी ।"

माजी थोडी आंख्यां खेंची जाणे काईं चेतै करना
हुवै । फेर वोल्या– लै आज छगन दरजी री वात
सुणाऊं । म्हारो घर तो आरै चिपता-चिपत हो इण
कारण सगळी वाता री मालम पडती रेवती ।

दरजी घरे आय'र कैयो– "वाबूजी कठै है ? आ
रो बैण धरम री सौगन खाय'र कर्‌योड़ो है । मिनर
खातर तो धरम सू ऊंची कोई जिनस कोनी ।"

भुआजी– बाबू तो दफतर सूं आयो कोनी, प्र
आवण आळो ई है । घडी अध घड़ी नै आय जाए ।

दरजी–पण साईकल तो आ पड़ी है नी । साईक
आयगी, अर बाबूजी आया कोनी, आ ठीक हुयी !

भुआजी सू भट देणो कांई उथळो नई बण्यो। पण इण बात री मालम छगन नें घाने बिना बोल्या- "छगन! तू तावडै मे आयो है, थारो माथो तप्योडो है, लै पखी लै, हवा गा।"

छगन बोल्यो– मनै तो हवा खावते आज दो बरस हुयग्या। धापग्यो हवा खांवतो-खावतो। आज भी थे मनै गोता घाल्वा नावो हो, अर मनै जचै कै वाबूजी पक्कायत घर मे है।

भुआजी बोल्या– "म्हारी समभ लिया पछै हू कदेई कूड बोली कोनी, अर आज इत्ती-सी'क बात खातर कूड बोलसू? जे घर मे हुवै अर कंय द 'है' तो किसी कामी लागै है? बाबू रै गाव री मेम री हालत कावळ हुयगी इण कारण माव खुद भोरा-भोर आपरी मोटर में बैठाण'र बाबूनै लेयग्यो। मनै तो सोच ओ है कै बाबू दिन भर रो भूखो है, जीमण खातर ई आयो कोनी"।

छगन रै भुआजी री बात सावळ जची तो कोनी, पण करतो काई? कमर माथै हाथोडो हाल धरै धीरै-धीरै घर सू बारै निकळग्यो।

भाजी बोल्या– हू एक बात कैवणी भूलगी ही। जद छगन आवतो दीस्यो, तो बीनै माथै सू देख'र ई भुआजी

बेटै नै डागळै भेज दियो अर कैयो 'दरजीड़ै सूं हूं आपेई निवेड़ो कर लेसूं'। अबै जद दरजी गयो परो तो भुआजी बेटै नै हेलो कर'र हेटै बुलाय लियो।

छगन नै टरकायो जिकी जीत माथै बेटो मा री वडाई करण लाग्यो ई हो का बैरी दरजीड़ो फेर आय वळ्यो! "माजी क्यूं दुनिया नै धोखो देवो? अवार तो थे कैवता हा कै घर मे कोनी, अर मैं पूठ फोरी जितै ताळ मे त्यार!"

बाबू सू तो कोई बोल बण्यो नई। पण भुआजी नै बोली में हरावणियो सायद ई कोई जलम्यो हुसी। बै आंख काढ'र बोल्या—बाबू तो पिछोकडै सूं आय'र अबार घर में बड़्यो है। हाल तो चोळो ई खोल्यो कोनी, डील रो पसीनो ई सुकायो कोनी। तनै भरोसो नई हुवै तो जा देखलै वा पगरखी पडी है पिछोकडै मे।

छगन ससपंज में पडग्यो, सायद पिछोकडै सूं आयो हुवै। अर इण ससपंज रै कारण आधै मिन्ट तक बो गुमसुम ऊभो रैयो। भुआजी नै मौको मिलण खातर छगन रै आधै मिन्ट री सांतो मोकळी ही। बै तण'र बोल्या ई भालर था लोका में जात रो असर आयां बिना को रैवैनी। सामलो आदमी भलेई भूखो हुवो, चावैं तपत सूं

पळ-मळांवनो हुवो, थे भट पइसा मांगण नै श्राय जासो।

छगन कंयो– माजी भ्रम करो। सोभा आयगी। जात बखाणनै थानै सरम को आवैनी? मिनख जात सूं ऊंचो को हुवैनी, करम सूं ऊंचो हुवै। थे ऊंचै कुळ मे जलम'र भी जे लोकां रै पसीनै री कमाई माथै हराम रो चित देय'र बैठ जावो तो इसै ऊंचै कुळ सूं आप रै काम सूं काम रावणियो, नीचै समझ्योड़ै कुळ में जलमणियो, लाख ऊंचो है।

थां बू मजाक मे पूछ्यो छगन! सतसंग मे जावै दीसै नू तो।

छगन तड़क'र बोल्यो– म्हारै सतसंग सूं कोई लेखादो कोनी। हूं म्हारा पइसा मांगू हूं। अर जे सीधै रस्तै नईं दिया तो मनै कचेड़ी री सड़क देखणी पडसी।

मुआजो बोल्या– म्हारै घरे आय'र तैं म्हांरी ईजत खराब करी है। लेणा-देणा रो हेसाब भाई-बीरां सूं निकळै, राड करयां काम थोडो ई चालै। मिनखपणो तो थारै मे है ई कोनी। तूं तो हिटकियै कुत्तै दईं पाथरो बटको बोढतो ई हुवै। सामलै मिनख री ईजत रो तो काई ध्यान राखै'क नईं। थारी अर म्हांरी ईजत एक सरीखी तो कोनी।

छगन बोल्यो– वास्ते लागग्यो ईजत रै। थे था

बतावो, पइसां रो कांई कैवो हो ? क्यूं बाबूजी, आव रै बैण रो कांई हुयो ?

भुग्राजी– अबै रुपिया थारा कचेड़ी में ई मिलसी। आ पड़ी कचेड़ी, जा करदे दावो।"

भुग्राजी री बात कैय'र माजी खासा थकग्या हुं ज्यूं लखाया। मैं पूछचो– "माजी थकग्या ?" माजी भींत रो सायेरो ले लियो, फेर बोलण लाग्या, इत्तै में छापै आळै बारै सूं हेलो करयो। हूं छापो लेवण खातर उठ्यो। बारणो खोल्यो तो टाबरां री टोळी, जिकी आपरै नानाणै जीमण नै गयी ही, हाका करती पाछी घर में आयगी।

माजी रो फेर सुणावण रो मन तो रैयो, पण टाबरिया री च्याय-म्यांय, अर फेर भुग्राजी री गुपत बात ! इण कारण माजी लकड़ी माम'र फेर डावोड़ो हात गोडै माथै देय'र ऊभा हुयग्या।

म्हैं कैयो– "आज तो घणी किरपा करी माजी।"

इण बात सूं माजी राजी हुया। ऊभी का'र सगाळू री मिमठी सूधता बोल्या– "मळपा बेटा ! अरके परीनपार नै फेर आंमू।"

उभराणा माजी

ऊमर अस्सी-पिच्यासी, कमर सगळी झुक्योड़ी, चामड़ी सगळी मळां सूं ढीली हुयोडी, चालती वेळा हात नो मोकळा हिलै पण पावडो ग्रोछो धरै इण कारण गेलो कमती कटै। वळ-वळतो तावडो, जिण सूं पगरखी रै मांय भी पग सीजतो हो, पण माजी साव उभराणा, पगरखी रो नाव तक नईं, वोदी, नूई, फाटी-पुराणी।

मैं पूछ्यो– माजी ! इसी भट्टी दई तपती सडक माथै थे उभाणा चालो हो, थारा पग तो पक्कायन वळता हुसी।"

माजी तो आगी चाल सूं चालता रैया, काईं उथळो दियो नईं। उणा रै साथै एक माजी और हा, जिका री ऊमर पैसठ वरसां रै अडैगडै ही, वै बोल्या कै माजी आपरी ऊमर मे कदेई पग मे पगरखी घाली ई कोनी।

म्हारो इचरज वधग्यो। मैं पूछ्यो– "इण री कारण ?"

छोटा माजी बोल्या– जद टाबर हा तो खेल-कूद मे कदेई पगरखी याद ई को आयोनी। वा दिनां गरीब घरा मे पगरखी री पणी चलन भी ही कोनी। गावा रा टाबर गेम जरूर जावता, सो का तो उठियै री

तो थाग सुमरा अर जेठ कोई कायम सायद ई रैया हुसी।

माजी आप बोल्या– "म्हारै सू बडा सगळा सिधारग्या। हूं एक ई अभागण रैयो हूं। म्हारी तो मौनगी चिट्ठी ऊंदरा लेयग्या दीसै है। अर पगरखी रो तै पूछचो, तो हू अवार री चलम मे तो हूं कोनी। म्हारै तो पगा रै उभाणा रैवण सू इसा तळिया वंधग्या कै ठंडै तातै री म्हारै पगा नै कांई ठा ई पड़ै कोनी।"

खूमो बरफ आळो

रंग कोयलै जिसो काळो, कोयलै सूं भी बेसी काळो, काळै नाग जिसो । डील अबै तो कस बायरो है, पण चढती जवानी में डील में करार हो । पट्टीदार गामै रो बंडो अर धोती खूमै री पोसाक । माथै में तेल मोकळो सींचै । सीयाळै में तो घाणी सू कढाय'र खीवड़े सागै ताजो तेल खावै—तिल्ली रो । ईंसू हाडां में बारैमास पाँच वणी रैवै, इसो खूमै रो विस्वास है ।

खूमो पैली तो एक पेवटी में ठंडी बरफ राखतो अर सिंझ्या तईं छव आना, आठ आना कर'र घरे आय'र सुख री नींद लेंवतो । पण मोंगाई कमर भांग दी । अबै आठ आना, छव आना मूं कांईं पार पड़ै ? इण कारण खूमो अबै बरफ रो गाडो करण लगियो । बरफ घस'र घालण खातर भांत-भांत रा सचा रार्खं, पान, चिड़ी अर और केई तरै रा । पइसै रो, दो पइसां रो अर आनै रो । गाडै में च्यारूं मेर चौखट में खण करायोड़ा जिकां में बोतल्यां री लैण । दो-तीन बोतल्या में तो सरबत अर बाकी में रंगीन पाणी ।

खूमो कैवै— दुनिया रंग माथै रीझै, इण कारण

खूमो बरफ आळो

रंग कोयलै जिसो काळो, कोयलै सू भी बेसी काळो, काळै नाग जिसो । डील अबै तो कस बायरो है, पण चढती जवानी में डील में करार हो । पट्टीदार गाभै रो बडो अर धोती खूमै री पोसाक । माथै में तेल मोकळो सीचै । सीयाळै में तो घाणी सू कढाय'र खीचड़ै सागै ताजो तेल खावै—तिल्ली रो । ईंसू हाडां में बारैमास पौंच बणी रैवै, इसो खूमै रो विस्वास है ।

खूमो पैली तो एक पेवटी में ठंडी बरफ राखतो अर सिझ्या तई छव आना, आठ आना कर'र घरे आय'र सुख री नींद लेंवतो । पण मोंगाई कमर भांग दी । अबै आठ आना, छव आना सूं कांई पार पड़ै ? इण कारण खूमो अबै बरफ रो गाडो करण लगिग्यो । बरफ घस'र घालण खातर भात-भात रा सचा राखै, पान, चिड़ी अर और केई तरै रा । पइसै रो, दो पइसां रो अर आनै रो । गाडै मे च्यारूंमेर चौखट में खण करायोड़ा जिकां में बोतल्यां री लैण । दो-तीन बोतल्यां मे तो सरबत अर बाकी में रंगील पाणी ।

खूमो कंवै– दुनिया रंग माथै रीझै, इण कारण

रंगीन बोतळ्या रो देखापो करणो पड़ै । म्हारो काळो रंग भी मूगलो है, इण कारण हूं रंग-रंगीला गाभा पैरूं । गाभो मिनख री श्रेब नै ढकै ।

गाडै रै हेटै एक टोकर लटकै जिको, गाडो चाल्या मूं, आपेई बाजै । टोकर रो टण्णाट सुणतै ई छोरा-छापरा आवैई घरां माय सूं पइसा लेय-लेय'र आय जावै । खूमो खूब फुर्ती मूं छत्ता-पान ग्रोर बणावै, तो ई टाबर ऊतावळ ग्रर खड़भड़ाट करया बिना नईं रैवै । कदेई-कदेई इण खड़भड़ाट में टाबरां रै हात सूं खूमै री बोतळ भी फूट जावै । वो टाबरां रै माईतां नै ग्रोळभो नईं देवै । टाबरां नै धमकाय'र भगाण देवै ।

खूमो टाबरां री उधार भी करै ग्रर सगळा टाबर ग्राप-ग्रापरा पइसा ग्रापेई लाय'र खूमै नै देवै ।

जद मेळा-खेळा हुवै तद खूमो गाडै नै सजाय'र ले जावै ग्रर ग्राप भी सजधज'र जावै ।

सैकरीन रै जमानै में भी खूमो सरबत में खांड घालै, सैकरीन घाल'र मीठो नईं करै । वो कैवै– टाबर म्हारा, जिसा ई दूजा रा । हूं म्हारै हात सूं जैर कोनी छोळ सकूं नी ।

बरफ रो गाडो करता थकै मोकळा बरस हुयग्या, पर गाडै नै धूक'र धकेलण कारण खूमै री कमर भी

मारजा

मारजा मू वडा अर छोटा सगळा भाई परणीजग्या पण मारजा हाल कंवारा है। हाल भी ऊमर घणी कोनी, चाळीस-टकनाळीस हुवैली, पण छोरचां रा माईत जाणै सगळा आधा है। मारजा जिसो हिस्ट-पुस्ट, हट्टो-कट्टो कमाऊ जवान, बारी आख्या हेटै ई आवै कोनी। पण जिकै दिन फेरा री रात रो जोग है, वो दिन बिना बुलाये कोई आय'र मारजा री गरज्या करमी।

नगरपाळका नया सरकार री इस्कूलां सैर में मोकळी हुवणै पर भी मारजा री पोसवाळ सागीड़ी चालै। सौ डेढ सौ छोरां सूं कम मारजा री पोसवाळ में कदेई नईं रैवै।

छोरा री फीस मारजा न्यारी-न्यारी कर राखी है खाली बाणीको— एक रुपियो, बाणीको-हिन्दी— दो रुपिया, जे साथै अंग्रेजी, तो तीन रुपिया। ऊंची इस्कूला रा परधान गुरु भी मारजा री तिणखा सू ईसको करै।

मारजा री इण सफळता रो कारण है मारजा री मैनत। बारै मास दो बगत इस्कूल लगावै। केई छोरै री हीमत नईं कै प्राथंना री बेळा हाजर नईं हुवै। जे कोई मोड़ो आवै, तो माईत नै सागै लेय'र आवो, एकलो आयो मारजा माफ नईं करै।

सगळा पाड़ा लिखणा अर बारखड़ी बांचणी सगळा छोरां सारू जरूरी। ऊठा, दूणा, सवाया, सेरा, पूणा, सगळा पाड़ा छोरां री जीभ माथै चढ्या है। बडा-बडा सवाल, जिका नै इस्कूलां रा छोरा पाटी-बरतणै अथवा काणी-पेमगळ सू करै, मारजा री पोसाळ रा छोरा दड़ादट मूंडै बतावै, चिमटी बजावै जितै में !

मारजा कोरा मारजा ई कोनी, गवैया भी है– मीरां, तुळसी अर कबीर रा मोकळा पद उणां नै याद है। महनै में दो एकम अर दो आठ्यां, इण तरै च्यार छुट्यां रासै। छुट्टी रै दिन सतसग मे जावै अर बठै मारजा रो घणो आग हुवै। पण मारजा जिसा पढावण मे हुसियार है, बिसा गावण में कोनी, तो ई लोक मारजा कनै गवावै। जे नई गवावै तो मारजा रीस कर लेवै– म्हे तो कोस भर सूं चलाय'र आवा, मे गिणां न आंधी, छैयां गिणां न तावड़ो, ब्याव-गिणां न सावो, एढो गिणां न टांकड़ो, भूख गिणा न तिस, मरणो गिणां न परणो, अर थे म्हारै कनै गवावो ई कोनी ! बात आ है कै मारजा रै गळै मे प्यास कोनी, अर घास बाढता हुवै ज्यूं मारजा लखावै इण कारण मिनख तो मसखरी खातर भलेई मारजा कनै गवावो, लुगाया मे भाव-भगती बेसी हुवै। बै भजन माथै

ध्यान देवै, कंठ मीठो हुवो चावै धाडो।

एक दिन मैं मारजा नैं पूछ्यो– "क्यूं, व्याव रो काई जुगाड़ हुयो'क नई ?" मारजा बोल्या– जोतस कूडो कोनी। आज मूं बीम बरसां पैली एक पिंडत म्हारी जलमपतरी देख'र कैयो कै व्याव रो जोग तो तेवनरी में ई कोनी। बी वगत तो मनैं पिंडत री बाणी मूरखाई री लगायी, पण आज हूं देखूं हूं कै म्हारै बराबर कमावणिया समाज मे इण्या-गिण्या मिनख है फेर भी म्हारो व्याव हुवणो नो आघो रैयो आज तई कोई मागो तक को आयो नी। ई मू मालम पडै है कै जलमपतरी मे जोग कोनी। अर जोग मूं परवार तो कोई कम्म हुवै कोनी।

मारजा रै मगपण नई ढूकण रो कारण सायद उणां री मनकी सभाव भी होणै सकै है। मारजा रो छोरा नैं हुकम है कै जद मारजा मसाणां मे न्यारं गयोडा हुवै तो छोरा भी बठै आवै। अर माचेई मसाणा रै पमवाडली बगेची मे निरी वार मारजा रा छोरा हाका करता सुणीज्या करै।

मारजा रै भायां मारजा नैं पाल दिया कै थे आ मूरखाई ना करो, पण मारजा मरजी रा राजा है, वैं कैवै कै "जद टावरा रा माईत नाक मे मळ घालै कोमी, तो बै टोकण आळा कुण ?"

मसाणियां अचारजजी

इकोलड़ो डील, मगरगरो कद, माथै में मामा धोळा केस, लांबी चोट, ठोडी माथै कोई-कोई केस, पण मूछ्यां वडी-वडी, ऊमर पैंतीस-छत्तीस, लिलाड माथै बड़ी मारी टीकी, पैरण नैं चोळो, धोती अर देसी पगरखी। बीकानेर रेलवाई दफ्तर में अचारजजी बाबू है। घर रो भार आपरै ई माथै है, इण कारण ई मूगाई में दोरो-मोरो काम चलावै। नांव है वल्लभदत्त।

गळी-गवाड, पास-पड़ोस, में कठैई कोई मौत हुसी, तो लोक अचारजजी नैं पक्कायत तेडो आसी। वेरो पड्यां पछै अचारजजी पुरस्योड़ी थाळी भी छोड दै अर पग में पगरखी घाल्यां विना ई मुडदै रै घर खानी भाजै। पण फेर भी आप आट में वीस-पचीस रुपिया घालणा नईं भूलै, कारण, कदेई-कदेई मुडदै खातर लकड़ा रो जुगाड भी आपनैं आट सूं करणो पड़ै। जे लारला देवै तो आप लेलेवै, नईं देवै तो आप मागै कोनी।

मुडदै री सीढी कसण में आप बेजोड़ है। किसी

न्हाम खातर किता जाडा वास लावणा, किता आधा गाता जचावणा, किता आंटा लगावणा, इण विद्या रा आप आछा जाणकार है। जाणकार हुवै आपेई– ओ इसो काम है जिकै नैं साधारण लोक तो ऊभा-ऊभा देखता रंवै, अर प्रचारजजी नैं ओ भूडो काम महनै मे आठ-दस वार करणो पडै। इण रो असर ओ हुवै कै कदेई आप दफ्तर मोडा पूगै अर कदेई आपनैं समूळी छुट्टी लेवणी पड़ै। इण कारण सादगी छुट्ट्या तो मुड़दा बाळण में ई पूरी हुय जावै, ब्याव-सादी खातर लेवण सारू नीठ निरावळ आपरी छुट्टी बरती हुसी। मसाणा मे तो आपरा दरसण हुंवता ई रंवै, ण ब्याव-सावै अथवा दूजै एढै-टाकड़ै माथै आपरी सूरत तीखै नईं, इण कारण लोका आपरो नांव थरप राख्यो है– प्रचारजजी मसाणिया।

अरथी बाधण रै सिवाय चिता वणावण मे भी आपरी खास हुंसियारी देखणी में आवै– किसै मुडदे खातर, किसै रोग रै रोगी खातर कित्ता मण काठ लागसी, आप मोळै धाना ठीक बता सकै है। पण कदेई-कदेई इसो भी मौको आवै जद साथिया रो टोटो हुवै। इण हालत मे प्रचारजजी रो निमळो ढाचो मुड़दा ढोवण री भी अनोखी

मिनखा देखाळै । मुड़दा ढोवण रै ममाचा मायनै केई बार, मसाणां सूं मागा पाछा टाल सूं, मड़ूड भी ढोवणा पड़ै, पण, फेर भी, मुड़दै नागर पाग बेटै गो न्याय छोड़दै, इणो मायरो नेम दीसै !

इणी निस्वारथ सेवा कारण आळी री देस मे धाप'र तोड़ी है, इणी कारण आपारी आजादी गायळ पनपै कोनी । जठै पडगो दीसै बठै, जुध्य-गीत री ल्हारां मायै गीधा दई, लोक मंडरावण लाग जावै । बीकानेर री अस्पताळ मे रतनगढ रै एक सेठ री मोटियार बेटो पूरो हुयग्यो । अचारजजी नै समाचार पूग्या । अस्पताळ आया तो देखै— मृतक री सौळै-गनरै बरसां री बैन जिगे सूं मायो पटकै, पण मुड़दै रै चलाणै गाळू धीरै कनै पइसा रो थळ नईं, इण कारण गळै री चौलड़ी सोनै री सांकळ काढ'र बी अचारजजी आगै मेल दी । काठी छातो आळा अचारजजी रा नैण भी भरीजग्या । छोरी रै माथै हात फेरतै थां सांकळ पाछी करदी, अर चलाणो आप री आंट सू करयो । आ बात न्यारी है कै छोरी रतनगढ जांवतो अचारजजी रो ठिकाणो लेयगो, अर बी मणिआडर सूं रुपिया भेजाय दिया, पण जे कदास इणां री ठौड़ केई दूजें

रै हात चोलड़ी साकळ पड़ जांवती, तो फेर पाछी रसीद काढ'र कुण देवतो ?

आ सेवा करता अचारजजी नै पन्द्रै-सोळै बरसां सूं बेसी हुयग्या हुवैला। अर अखार तक बाळचोड़ा मुड़दा री जे मैं गिणती रासता, तो सायद ओ भी एक रिकार्ड कायम हुय जांवतो। पण अचारजजी नाव खातर, रिकार्ड खातर, सेवा को करैनी। मिनख है, इण कारण मानखै री सेवा करै।

व्यासजी

कद सरासरी सूं ओछो, पण डील बंधेजदार। ऊमर पचावन सूं आगै, साठां नेंडी पूगगी, पण हाल, जे मूछयां मूडाय'र कैय दै कै टावर कंवारो है, तो ओपै। व्याव तीन करया, पण व्यासजी रै भाग मे लुगाई टिकण रो जोग कोनी। अबार भी छडा है, तीनूं री तीनूं दग्गो देयगी।

व्यासजी जवानी में कळकत्तो कमायो, पण अबै, लारला बोळा वरसा सू अठै ई एक छोटी-सी'क दुकान करै, अर टैम काटै। भगवान री दया सू बेटा कमाऊ है अर पोता-पोत्या सू घर भरयो है।

व्यासजी भोर मे वैगा उठै अर भोरा-भोर कबूतरां रै पींजरै पूगै। सगळै पीजरै नै बाळस्या-बाळस्या पाणी ऊंधाय'र कंचन री जात कर देवै, फूस-फरड़ो, टीच-टाच खूणे-खचूणै भी रैय नईं सकै। फेर आप बेमार कबूतरां तथा बचिया नै छोटै पीजरै मांय सू बारै काढै अर छोटो पीजरो भी साफ करै। रोगी कबूतरा रै घावां माथै दवा-दारू रो भी परबन्ध करै।

पीजरै री सफाई रै अलावा कबूतरां रै चुग्गै रो भी

ग्राप मोच राखै । दो-दो, च्यार-च्यार ग्राना मांग'र ग्राप
दाणां ग्रातर पइसा भेळा करै । परमारथ काज एक डबल
ग्रातर हान पमारण मे भी ग्राप लाज नईं करै ।

ग्राप ग्रापरै धड़ै रा सिरपंच है ग्रर पंचायती री
वणैंची रो मगळो काम ग्रापरै माथै ग्रोढ राख्यो है । एढै-
नुक्तै मायै चाहीजै जिका बरतण-भांडा गिण'र देवणा,
पेर पाछा गिण'र लेवणा । कोई टूट-फूट नईं गयो हुवै
ईंरी भी ग्राप निगे कर लेवै । न्यात रै जीमण-जूठण मे ग्राप
काम-काज रात्र भी मगळा मू पैली पूगै इण कारण
स्यामजी रै पूग्या पैली ग्राइ नईं गळै ।

जीमण मे कामा-भाणा भी ग्रापनै करणा पड़ै—
ग्राम-च्यात ग्रर बारू-बमीणा रा । ग्राप कागवा री
गेमै, ग्रर उणा रा बाजव कामा करै ।
यण-पीवण रै काम मे तो ग्रौर भी मोकळा
न बटाय लेवै पण ग्राप एक इसो भी काम
रो है जिण मे बुजकोई हात नईं घालै । ग्रर
पण पंड रो काम । इण पड मे लपाण, मिणिया,
या, मुगटा, नारेळ, खोपरा, छड़छड़ीलो, चम्रण,
पाटी धन्तगमै मे चाहीजै जिकी मगळी चीज्या
पैली मा चीज्या ग्रारर बजार मे घटौनै-दटौनै

इण ठौड़ टाबरां नावणी पड़ती पण इण में आराम्य मोड़ो हुय जायतो।

इण फंड रै कारण आप रात नै बठैई, बिन मसाणां नै गैयै, बारै नहीं निकळ सकै, ना निरवाळी नींद ई ले सकै कारण ओ फंड कोई जात विसेस रो तो है नहीं, कोई भी आग'र आप नै भर नींद मांय सू जगाण'र ऊभाण सकै है।

इण फंड रै अलावा मसाणां में लकड़ां री बगेची रो भार भी आपरै माथै है। पीपळ, नेजड़ रै इन्टाक रो ध्यान राखणो पड़ै।

व्यासजी री बोली ऊनावळी है। जे कोई काम आप रै मन-भावतो नहीं हुवतो दीसै तो आप बठैई जोर-जोर सू बकरण लाग जावै, पण पेटै पाप कोनी। कोठै हुवै जिकी होठै दरसाय देवै।

अबै देखणी आ है कै समाज री सेवा में रात-दिन एक करणिया व्यासजी खातर समाज काई करै। व्यासजी नै माण-सतकार री भूख कोनी। वै आ चावै कै बारी आंख्यां रै सामनै बारै सगळै काम नै संभाळणियो आगै आवै। हाल तो व्यासजी जवाना नै छेड़ै बैठावै है, पण जे उणां नै सोच है तो ओ ई है कै लारै सू काम कुण

सँभाळसी ?

इण रै सिवाय व्यासजी रै एक सोच और है। सरकार कड रो काम तो दोरो-सोरो चाल ई सी, पण उण नै सी वरस पूग्यां पछै छोरा नै मोफत में कुण पढासी। घर रा लखपती कोनी, पण फेर भी विद्या रो दान मोफत देवै।

व्यासजी कनै जे थे चंदो मागण नै जासो तो पाधरो कैसी– देवण-दिरावण नै तो म्हारै कनै कांई है कोनी, ग्रर सरीर सूं सेवा चावो, तो जित्ती बण सकै, बा करण नै हूं त्यार हूं।

परमातमा व्यासजी री जवानी समाज रै भाग सूं बणायी राखै !

इन्द्रा

सांवळो वरण, वडा-वडा नैण, नैणां मायं नम्रो अर नैणा में अनोखी पवीतरता। पूरो कद, डील में हिस्ट-पुस्ट, चैरे मायं तेज— सन्त-महातमावां रै हुवै जिसो। लखपती री बेटी, मील-मालक रो धण, बत्तीस-तेतीस ऊमर, नांव इन्द्रा।

घर में, सासरै अर पीरै, भोर में सगळां सूं पैली उठै। नौकर आपरै घर सूं आवै जित्तै उणा रो आधो काम इन्द्रा आपरी मरजी सूं कर देवै। बिछावणा उठाय'र वारी सावळ जेट चिणै। मांचा ठौड़सर मेलै। कमरा झड़कावै। अंठा, बासी, वासण माजै, राजी-राजी, हरखां-वती, जाणै इण काम में उणनै आणद री प्रापती हुवै।

सासरै में देराण्या जेठाण्या, अर पीरै में बैनां-भोजायां जद बासी डील फिरत्यां हुवै, उण वगत तक मे इन्द्रा बासी काम पछै न्हावा-धोवा कर'र पीरै में मां-बाप, अर सासरै में सासू-सुसरां री सेवा में हाजर हुय जावै। उणां रै खातर चाय-दूध रो परबन्ध करयां पछै ठाकुरजी री ...। में बैठै। मां-बाप, सासू-सुसरां नै जीवता देवता

मान'र इन्द्रा वांरी सेवा करै । जीवता देवतावां री पूजा पैली, मूरत्यां री पछै ।

ठाकुरजी री सेवा मे इन्द्रा घणी लवलीण हुवै, इण कारण जद वा पूजा मे बैठी हुवै, तो कोई भी बीनै बतळाय'र विघन नई घालै । ठाकुरजी रै सामी वा टळं-टळं आमूंडा ढळकावै अर तल्लीण हुयोडी चितराम री हुवै ज्यूं बैठी रैवै ।

मिनराणी रै पालनै थका इन्द्रा रसोई मे मायेरो देवै । रसोई करण मे वा पाक-शास्त्र्यां नै छेडै बैठाणै; पण मुळकाई इसी कै साधारण मिनराणी नै कैवै— मिनराणीजी मनै थारै जिसी रसोई करणी कद आसी ? बारै सूं मैमान आसी, तो बीरै मायेना घर रा दूसरा लोग तो मूंडो भुलावण नै रमसी पण वा भागती, मैमाना नै पलकयां माथै चढावती आदर देसी । मैमान भलेई कदेई मिल्योडो ई ना हुवो, वा मिलता पाण इसी घुळ-मिळ'र बात करसी जाणै बरसा सूं पिछाणती हुवै । उणा री सुविधा अर सोरप रो सगळो ध्यान राखसी अर आपरा काम आमा मेलनै बारा काम करसी, चित-मन सूं ।

इन्द्रा रै गळै मे इसो कुदरती लोच अर मिठास है

कै वखाण में नईं भावै । श्रीरो एक पेटंट गीत है–

"ईश्वर की गति मैं क्या जानू,
एक भजन करना जानूं ।"

पण सचाई आ है कै इन्द्रा सुर री गत अर भजन करणो, दोनू काम मांतरी भांत जाणै । जद था वीजै कंठा सूं भजन सुणै तो आपेई उगाग नैण मूंदीज जावै अर सुरता भगवान सू जुड़ जावै ।

इन्द्रा लोडी है, आगली रो एक बेटो है जिकै नै गोदी री ऊमर सू लेय'र अबार तई इन्द्रा पाळ'र बडो करयो है । माई मां री दुभात इन्द्रा रै नैड़ी ई अड़ी कोनी । आपरी बेटी सूं इण बेटै रो लाड सवायो राखै ।

भड आळो बाबो

मनै बांगी जवानी याद कोनी. ठेट सूं किडकावरी बातो ई याद है । लिलाड़ बड़ो-मारो अर माथै ऊपर धात री बण्योड़ी एक भारी-भारी बडी, ऊंची, ऊपर सू सांकड़ी टोपी जिण माथै भान-भात रै रंगा मे अनेक देवी-देवतावा रा नाव अर चित्तर माडयोड़ा ।

कोट माथै मोकळा तुकमा लगायोड़ा जिकां मे गगा-माई गंगायै रै सिवाय तोळियासर, कोडमदेसर भैरूंजी री मूरत तथा रामदेवजी अर बाबाजी रा पगलिया हुवता । इना सगळा चादी रा ।

हाथ मे एक बडो-सारो केसरिया-मखमल भरो, जिण रो डंडो भी मोकळो वजनी हो ।

बाबै नै देखते ई छोरा-छोरी केवता— ''भई आळो बाबो आवै, बो हो भई आळो बाबो आवै ।'' सगळा टाबर बाबै नै चाव सू देखता ।

गणगौर अथवा बीजा मेळा मे बाबो सोनै रा तुकमा लगावता, घणी बडोड़ी टोपी पैरता अर हाथै इडं भाळो भरो धारण करता जिण सू मेळै मे सगळा नै आनन्द दड बाबजी रै आवो मेळै मे आया है ।

अंधारे-अंधारे चीज-वसत रै काढै-मेलै में कामेरी नै ऊनाळै अर चौमासै मे बिच्छू खाया करै। कामेरी पीड़ री पक्की है, तो ई दात भीचतां-भीचतां उणरो रोज पाडोस्यां रै कानां तई पूग जावै। मइनै मे एक-दो वार जैरी रो डंक लाग लागै, पण कामेरी नै दिवलै री चूंचकी रो हुकम कोनी। कामेरी सासू आगली बऊ है।

आभै मे लाली फट्या पैली कामेरी आपरी गाय रो काम निवेड़ लै। बंधी रो दूध देय'र आवै, अर आपेई ऊंच-ऊंच'र पाणी रा घड़ा लावै। कामेरी मैनतण, अर पक्की पिणिहारी है।

वाणियां रै घरे बिलोवणो करै अर रसोई करै। घरे आंवती छाछ री तपेली भर'र लावै, अर रुजगार सूं घर रो काम चलावै। कामेरी कमावणी है।

सेठा रै घर मे सौ भात रै मिनखां मांय कर निकळै, पण कदेई उणरै आचरण माथै छाटो नई लाग्यो। कामेरी चरितवान है।

आपरै घरे कामेरी रसोई करै। सासू-सुसरा री चाकरी करै। उणां रा गाभा धोवै, अर वानै पइसै भर घी सूं रोटी घालै। कामेरी धरम-परायण है।

दिन मे मोल रा पापड़ बटै, धान-चून आदा करै

पोडो-पणो टाको-टेभो करै। श्रावनी-जांवनी, गळी सूं गोवर भेळो करै। कामेरी कामेटी है।

मिस्या फेर घरे रसोई, मेटॉ ग रसोई, श्रर गाय री काम करै, फेर पापड़ां में लाग जावै। सूर्यां मूं पैली भी पीसणो पीसै। बीच मे तीन-च्यार वार, दस-दस मिन्ट सातर उठै। चिडी री जायो गळी मे हुवै कोनी। श्रर बा तीन-च्यार कड़ाया पोठा भेळा कर लेवै। कामेरी थेपड़्यां रो पिरावड़ो चिण राख्यो है। वा थेपड्यां बेचै, श्रर चाहीजै तो घर में बाळे। कामेरी घटगी है।

जद तीज-तिवार या होळी अथवा चौमासो हुवै तो कामेरी जूना-जूना लोक-गीता री भड़ लगाय देवै। बीस लुगायां मे कामेरी रो कठ साफ सुणीजे। कामेरी गीतारी है।

साल में दो वार, होळी-दियाळी, विना मजूर री मायता, उंची-ऊंची त्यापा, निसरण्यां रोप'र कामेरी सिजले मूं पोत'र घर नै दई री जात करदे। कामेरी पोतारी है।

कामेरी नै हाल में कलम झालणी को श्रावैनी, पण एडे टांकड़ै हाता मे सेवी रा मोर इसा गोवणा माडै, जाणै मोरिया मूंडै बोलसी। कामेरी मडारी है।

मा-सा

आई वाणियै रै घरे जलम लियो, पण जलमपतरी मे जोग घणो ऊंचो होण रै कारण सामरो किरोड़पती सेठ रै घरे हूयग्यो। रंग गऊ वरणो हो, पण सेठ कैयो म्हारै कूटरी सू मतलब कोनी, आ जिण कुळ मे जासी वीरी घणी विरधी हुवैली। माचेई, सेठ रै कुळ मे इण री कूख सू बेटा-बेट्यां, अर फेर पोता-पोत्यां, दोईता-दोईत्यां सू घर भरीजग्यो अर लोक इण नै मा-सा, मा-सा कैवण लागग्या।

गरीब बाप रै घरा जलम्या कारण मां-सा नै गरीबी रै दुख रो पूरो अनुभव है, अर इणी कारण आप दुखी रै दुख सूं पसीजै। जाचक री रपियै-पइसै, गाभै-लत्तै, धान-चून सूं सायता करै। अड़कवाऊ माग पेस करणिया भलेई खाली आवो, और तो सगळा आधी-पड़धी आस पूरीज्योड़ा पाछा धिरै। जागा-जागा लगायोड़ो पइसो आपरी दानी पिरकरती री साख भरै।

घर में नोकर-चाकर केमेया है, पण मां-सा नै घड़ी एक आराम करण नै वेळा नईं लाधै सोवळै परवार में

कोई मांदो है, कोई जापे में है, कोई पैलड़ी मसाणरा मां
है, कोई परदेस सूं आयोड़ो है, कोई परदेस जावण वाळो
है, कोई अस्पताळ में भरती है, पण इसो कोई नईं जिण
री साळ-संभाळ मां-सा निज हुंस नईं लेवैं । आपरै हात
सूं पाटा-पोळी, आसायन रै सोगै, वईद हुवण वाळा रै
सीदो-चूंठो, आपरै हात सूं करै, अथवा आंन्यां सामनै
त्यार करावै ।

धोबी आसी तो कपड़ां रो हैसाब आपनै देखणो
पड़ै, जड़ियो आवै तो हीरा-पन्ना काढ'र देवणा पड़ै,
आंख्यां रै आगै जड़ाई करावै, सोनार नै सोनो तोल'र
देवै, दरजी नै गाभा काढ'र देवै । अै सगळा काम एकै सागै
हुंवता रैवै, मां-सा री निजर हेटै, कोई आ हीमत नईं करै
कै थोड़ो गोटाळो करू, कारण मां-सा री आंख्यां में लूण
घालणो सैंज कोनी । पण जे कदास कोई लूण घालण री
चेस्टा करसी, अर वीरी मा सा नै मालम पड़ जासी तो
भी वीनै माफ कर देसी । इण कारण मां सा रै घर में
नोकर तथा काम करणिया वेगा वदळीजै कोनी । सागी
मिनख-लुगायां टिक'र काम करै ।

तड़कै सूं लेय'र रात तक इण तरै मां-सा काम मे
. रैवै । सगती सूं परवार किस्त रै कारण थकावट

गावें अर आपरै बैठे बैठे थोड़ी अपवरी आय जावै, मूठी मानर सूं इकतोटी रैवे इण कारण बनै बैठे जिको ट मालम नई पड़ै।

जे पलावट मेंटण गाम आय मिन्ट-दो मिन्ट आडा अर उण वगत मिलण गाम कोई गायारण मिलाव ई आय जावै, तो दगवाड़ै बैठे जिका आयोड़ै नै पाछो उण मानर कंय देवै– "अवार आराम करै, आंत थोड़ी है, पेर आया।" पण मा-सा रै काना में मै द पड़ता पाण भट बैठा हुवै– मैं नां बलाय'र आमा, ह मिलू नई आ किया हुवै ?

आयगा अर साधु-सन्ता रो आप पूरो भाव राखै। वा माथै उणां रा चरण धोय नै सरधा सूं भोजन गावै, पछै पग रै नाण ऊभ'र। तिलक काढै, दिखणा ो, हूळस'र वागे कुसळ-मगळ पूछै।

मा-सा सूं दुसमणी रावण आळो तो कोई धरती थै नीठ लाधै, पण तारीफ आ है कै वीने भी मा-सा आपरो दुसमी नई समझै। धरती माथै मां-सा रै केई सूं र भाव है ई कोनी। मा-सा री बोली में इमरत है। डो हुवो या छोटो, सगळां सूं नरमी अर मिठास सूं वात रसी। रीस तो आपरी ऊमर में सायद ई कदेई मा-सा

नै आयी हुवैली ।

आपरो नित-नेम, पाठ-पूजा तो सदेई करै ई है, पण
जे भजन मुणन रो संजोग वण जावै तो आप घर रा
सगळा काम छोड देवै, इत्तो आपनै भजनां सूं प्रेम है ।

इत्तै काम-धंधै रै वावजूद धार्मिक-ग्रन्थ देखण सारू
भी वगत काढ लेवै । भगवान री दया सूं चेतो घणो
जवरो है– एक वार वाच्योड़ी वात पत्थर मायली ली
हुयगी । इण कारण जद कदेई सतसंग री चरचा चालै
आप गूढ सूं गूढ वाता सरळता सूं कैय जावै ।

आ ग्रन्था रै पढण सूं आपरो आतम-ग्यान
विस्तार खायग्यो । गिरस्ती में रैय'र भी आप मोह बंधण
में वंध्योड़ा हुवै जिकी वात कोनी । करम करणो चाही
फकत इणी वास्तै आप करम करै । करम आंरै अधीण
अै करमा रै अधीण कोनी ।

जँवारोजी

"राम राम सा ।"

"कांई राम राम सा, कोई टावर ढूकावोनी उस्तादां ।" जंवारोजी बोल्या ।

"टावर ?" मैं अचूवै सूं पूछ्यो– "आपरी बाई खातर या माई खातर ?" जवारोजी बोल्या– "थानै ठा कोनी, म्हारी लुगाई चलगी नी ।" मैं माफी मागी अर यतळावण करी । जंवारोजी बोल्या– "मरी नै अढाई-तीन महना हुयग्या । थांरै तो घणा लोका सू मेळ है ; थारी जबान हिल जावै तो गरीवा रो भलो हुजावै ।" मै पूछ्यो– "आपरी ऊमर कित्ती है ?" वै बोल्या– "गावळ तो याद कोनी, पण पैंताळीस तो हुवैली । थे घर रा हो । थारै सामनै झूठ कैयां काई फायदो । आप आळै नै तो हुवै जिसी बात कैय देवणी चाहीजै । दूजा नै तो हूं म्हारी ऊमर बत्तीस-तेतीस सूं बेसी बताऊं कोनी । लोक तो कैवै– 'थे बत्तीस-तेतीस रा दीसो ई कोनी, तीसां रै माय हुवै ज्यू लागो ।' पण इत्ती पोल धिकावणी भी ठीक कोनी ।

इत्ती बात करी अर जंवारोजी पांसी मे अळूभग्या ।

मैं पूछ्यो– "थांनै खांसी कद सूं आवण लागगी ?" वै बोल्या– "आज पैलड़ी वार ई आयी है, और तो कदेई सूं-सूं करण रो ई काम कोनी ।"

हूं बोल्यो– खट हुयनै ई आ इती जोरदार हुयी है, जद थानै खांसी सूं खतरो है, झटपट केई वैद-डाक्टर नै देखाळो, नई तो खांसी पाजी बेमारी हुवै । कैवत में कैवै है नी–

कळै रो मूळ, हांसी,
रोग रो मूळ खांसी ।

जंवारोजी बोल्या– "घबरावण री कोई बात कोनी, इयां तो मनै आठ-दस बरसां सूं आवै, पण म्हारो आ बिगाड़ काई को सकैनी ।"

"पण जद खांसी आवै तो थारी पासळयां सगळ फूल जावै, आंख्यां निकळ'र बारै पडण लाग जावै, अर कैवो बिगाड काई को सकैनी ?"

"हां, जे बिगाडती तो आज थानै बातां करण खातर जंवारो लाधतो कोनी । कदेई बीरी सीढी निकळ जांवती । आ तो पळ्योड़ी खांसी है, जंगळी कोनी ।"

मैं पूछ्यो– "काम-धन्धा कांई हुवै है आजकाल ?"

'काम-धंधे रो आपानै करणो कांई है । दाळ-रोटी

निंदे बो प्यार घटो है। माईता रै दूधां भरी नळाया र्‌यो। घणो ई छोड्‌ग्या है बापड़ा। म्हारी ऊमर मे तो, जे ऊभो हुय'र खाऊं नो ई, खूटै कोनी। अर ना कोई लारै आवै जिकी रै कोई कमी रैवै। आसी जिकी राजस करसी। एक लाख रोकड़ी बक में जमा है, भलेई कोई पास बुक देख सकै है।"

मैं पूछ्यो– "बो घर बेच्या पछै दूजो किमी जागा चिणायो है ?"

'अबार हूं चिणाऊ कोनी। घर चिणासू ब्याव हुया पछै। जे चिणायनू, अर आवै जिकी रै दाय नई आवै, तो फेर नुवै घर में तोड़फोड करावो। इसो अलडो गुड भीत्या रै लगावण नै म्हारै कनै कोनी। जरूरत माथै तो एक री जागा पाच लगावण मे भी जीव दूखै कोनी, पण फालतू एक कोड़ी मनै बरदाम कोनी।"

"जे ब्याव रो विचार है तो थोड़ो डीळियो मावळ वणावो। माथै री जट उतरावो, दाडी रो घास वढावो, मिनखाचारै रा गाभा पैरो, पगरखी पळटो। पगा मे ब्याऊ फाट्योड़ी देख'र ई सामलै रो मन फाट जावै।" मैं कैयो।

"पइसा कठै सू लाऊं ?" जंवारोजी बोल्या।

"एक लाख रो पछै काई अचार घालसो ?"

"लाख मांय सू एक पाई ई छेड़ूं कोनी। बा रकम तो ग्रागो जिकी नै पूरी री पूरी मूंपणी है।"

"मिनखाचारै तो थे एक लाख रै व्याज सूं ई रैय सको हो। बंक रै व्याज सू ई दो ग्रढाई हजार री माल पड़ती हुवैली।"

जंवारोजी बोल्या– थे व्याज री बात छोडो। घणो ग्रासी तो सोरा म्हे रैसा, थारै तई पांती ग्रावै कोनी, जे थोड़ो ग्रासी, तो दोरा म्हे रैसां, थानै फोडा घालां कोनी। थे तो ग्रसली बात माथै ग्रावो, टावर बतावो, टावर।"

हूं बोल्यो– "मिनखां खातर तो टावरां रा घाटा कोनी, ग्रर जिनावरा नै ग्रापरो टावर देवै, इसो हियै रो फूट्यो, ग्रांख्या रो ग्राधो कोई विरळो ई माईत हुसी।" म्हारो वाक्य पूरो हुया सू पैली ई जंवारोजी मनै छोडग्या। म्हारै कठोर बोला माथै मनै मोकळो पसतावो हुयो, पण तरकस सू नीसरयोडो तीर सायद पाछो ग्राय जावै, मूंढै सूं निकळयोडा वायक पाछै वावड़ै कोनी।

लारलै मइनै हूं दूध लेवण नै गयो तो देख्यो– जंवारैजी रै घर ग्रागै तप्पड़ बिछायोड़ो, ऊपर पाल ताण्योड़ो ग्रर एक पिंडतजी कथा बांचता हा– सायद गरुड़-पुराण। बैठक माथै हाल तई पिंडतजी रै सिवाय

भोर कोई नई हो। मैं पिंडतजी सूं जंवारैजी रै ब्याव बाबत म्हारे सूं हुयोड़ी बात री चरचा करी। पिंडतजी बोल्या– ग्ररे भाई, जंवारो बड़ो मजाकी जीव हो। कीरी नो लुगाई मरगी, पर कुण दूसर ब्याव करै ? जवारो तो मरतो बेठा नई परगन कवारो हो। जवानी में मांगा भी घाया हा, पण वो तो ग्रा ई केंवतो–

जवारो रैगो कवारो।

—✦—

लाधू

फूटरो-फर्रो, मानो-ताजो, गोरो निचोर, मोट्यार जवान, जे आछा कपड़ा पैंरया हुवै, तो लाधू राजा रो कंवर हुवै जिसो दीसै, पण कुण कपड़ा पैरै, अर कीरी वात ! एक वार कमीज गळै मे घाल्या पछै धोवण खातर भी वारै काढै कुण ? मिनान रो तो नाव ई ना लो। जद मैल री थर सू गळ'र, अर पैरीजते-पैरीजते घसीज'र खाथा कनै मू' कट'र कमीज हेटो पड जावै, सायै ई धोती फाट-फूट'र बाघा माय कर नागो दीसण लाग जावै, तद लाधू रा गाभा वदळीजै। न्हावै, संवार करावै, पट्टा छंटावै, नवो वंडो पैरै, नवी धोती पैरै, नवी पगरखी पैरै।

लाधू पांच लाख री हवेली रो एकलो मालक है, पण मोवै गळी में है— ऊनाळै मे पाणी री टूट्या रै इस्टेंड री ठडी जागा में, अर सियाळै गळी मे बिछचोडै पाटै हेटै, जठै गळी रा कुत्ता कूडाळी मार'र लाधू रै सट'र आखी रात गरमास पूगावै। घर में लाधू च्यार-छव महना सूं एकर नीठ बडतो हुसी। घर में मन किया लागै, धरा तो

पण गळी में रैवण रो ओ मतलब कोनी कै वो भूख काटतां हुवै अथवा मांग र खावता हुवै। जिकी भी दुकान मांथै जाय'र ऊभगो अठै ईं मन-मायरा चीजां उधार मिल जासी। पइसा खातर कोई भी दुकानदार ऊतावळ नईं करै कारण लाधू रा बाप सेठ रतनरामजी मरता लाखूं रिपिया रोकड़ी छोडग्या। वैं लाधू रै सुसर रै कबजे में है। लाधू सुसरै सूं रीसाणो है, पण नाईं सुसरो साल में एक वार लाधू नै ब्याज री रकम माय सूं आधी आपरी बेटी खातर राख'र आधी रकम भेजै है। लाधू रै हाथ में रकम आवते पाण सगळा दुकानदारां नै मालम पड़ जावै, अर लाधू सगळां रो, पइसै-पइसै रो हैंसाब कर देवै। तारीफ आ कै लाधू नै साल भर रो सगळां रो हैंसाब बराबर मूंढै याद रैवै।

उधार चूकाया पछै ई आप नवा गाभा अर नवी

पगरखी पैरै । पगरखी पैरधा सू पैली, आगली जूती फाटण रै कारण, लाधू रो पग उभराणो रैयोड़ो हुवै, अर अबै पगरखी पैर'र लाधू आपरा सदेई रा चक्कर काढै । मरू में पगरखी थोड़ी लागै, फेर फाला उपड़ै अर फूटै, पछै पग फलफलीज जावै जद लाधू पगरखी री एडी मरोड़'र मरदानी सू जिनानी बणाय नाखै अर खोड़ावतो-खोड़ांवतो चालै । इसी पगरखी किना'क दिन हालै ? इण कारण लाधू साल मे घणा-सा'क मइना उभराणो ई फिरै ।

आगला टावर हाता माय सू खूस्यां पछै, "लाध्यो, लाध्यो" कर'र नीठ लाधू वडो हुयो, अर सेठजी री आन पूरीजी कै म्हारो काम सभाळ लेमी । काम संभाळण री माईत तो मन मे ई लेयग्या । हां, माईता मरघा पछै थोडा बरसां तई, जद लाधू बीनणी समेत घर मे रैवतो हो, मास्टर घरे बुलाय'र पढण री भी चेस्टा करी । पण विद्या रो जोग लाधू रै करमा मे पूरो नईं हो, इणी कारण जद मास्टर पढावण नै जावतो तो लाधू रै अड़चण पड़ जांवती । जद दानखानै में सूत्यो हुंवतो तो बीनणी कनै सूं कैवाय देंवतो– "मास्टर साब ! अबार तो आप सूत्या है, काल आयां ।" कदेई जद मास्टर घरे जांवतो तो लाधू घर में मां रै जायैं जिसो हुंवतो । जद बारणैं रो खड़को

लाल बावो

"पवनसुत हडूमान री जै" इयां जै बोल'र लाल-बावो पवन-वेग सूं, एक टीड़ सूं दूजी टीड माथै जाय ऊभतो। गाभा सगळा लाल– टील रो कुड़तो लाल, जिको लाल विरजस मे घालमोड़ो हुंवतो। माथै ऊपर मोर मुगट, लारलै पासी हड़मानजी दई पूंछ री बणाव। अमवाडै-पसवाड़ै दो वडी-वडी, भारी-भारी टोकरयां, जिकी बावै री चाल साथै टणण-टणण वाजती।

म्हे टावर थका तो बावै नै साचेई हडमानजी जाणता ई हा, पण बूढा-ठाढा भी बावैजी नै हड़मानजी रै समान जाण'र हात जोड'र सनमान करता। बावै रै हात में आधो कमण्डळ आटै खातर हुंवतो जिण मे छोटा-मोटा सै आपेई बिना मागे आय'र आटो घालता। कमण्डळ भरीजतां ताळ नई लागती अर आटो झोळी में ऊंधाय'र बावो फेर फदाक मार'र उड जांवतो। इण तरै बावो एक दिन में कित्तो आटो भेळो करतो, आ तो ठा नई, पण फेर भी एक दिन रो अन्दाजो मण सू घाट तो कोनी।

अबार सू थोडा वरसा पैली फेर बावै नै देख्यो।

बावै रै सरीर में लारली सगती कोनी, लोकां रै मनां में लारली भगती कोनी। अबै बणाव तो सागी है, पण मूळणियं दईं खण-खण चाल सू बावो नीठ मारग मापै। बिना माग्या घालणिया अबै रैया कोनी अथवा जे पैली आळा कायम है, तो ई समै सार्थं स्याणा हुयग्या। अबै बावो बापडो मांगै है, तो ई पेट लिवाडी नीठ हुवै।

जद बावो जवानी मे इत्तो आटो भेळो करतो हो, बा दिना भी बावैरी लुगाई बावै नै लकडी मू कूट्या करती ही, पोठा चुगावती, थेपडघा थपवावती अर पाणी मगवावती। अबै बावै रा हलण थकग्या। बा करवस्या जे हाल जीवै है तो राम जाणै साई बावै री बाई दगा करती हुवैली।

भोपीजी

पांगळां नैं पग देवै, मूलां नैं हात, आंधां नैं आंख्यां, बेकारां नैं नोकरी देवै, कंवारा रो व्याव करावै, वांजड़्यां नैं वेटा देवै, रोग्या नैं निरोगा करै, कचेड़ी रा मुकदमा जीतावै, गम्योड़ी चीज्यां लधावै, इम्तयान में पास करावै, मन रो सगळो सोच मेटै, अर सकळ मनो-कामना सिद्ध करै– हरखू दादी !

दादी एक छोटै गांवड़ियै में रैवै अर बठै भी उण रा भगत पूगै। पण पूजा गुण री हुवै, नईं तो थां-म्हां नैं तो कुत्तोजी ई पूछै कोनी। गावड़ियै रै जगळ में भी दादी मंगळ कर राख्यो है। दिन ऊगै जिकी बगत सू, दिन आथवै इत्तै तईं आवरण-जावण आळां रो तातो बंध्योड़ो रैवै। जे हजारूं नईं, तो सैंकड़ूं रोजीनै पक्कायत आवै अर लाभ उठावै। आप सोचता हुसो कै आवै जिका एकला लाभ उठावै। नईं, वै किसा दादी कनै खाली हातां थोड़ा ई आवै। तो कांईं लावै ? ओ कोई लागमो कोनी; सरधा सारू– "पत्रं, पुष्पं, फलं, तोयम्।" पण कोई साचेई पत्तां अर पाणी सूं काम थोड़ोई चालै। दादी कनै लाभ री आस

गैरे'र म्हारी जिण दादी नै भाजी नो कस्यो-क ? न
दादी नै भी गाजै जमना री उम्मरन ई कोनी। आ
मावोड़ी चीज ल्यैवे ई कोनी— भगवानना-पगवाड
गाजिया भावो। चीज-बगत गामें।

म्हारै शायद आ मानतो में नईं आयी हुवै कै दा
मरद मनोकामना सिद्ध करै। आ मानती तो केई देवै
देवता में ई होणे मर्क है। तो काई दादी कोई देवी है
नईं, आपा रै दई हाट-मास रो डील है, चौख्या आपा
मामा वेगी आयो ई है। मनै ठा नईं आप कित्ता बरसा
हो, पण दादी रै ऊपर कर भम्मी ऊनाळा मू धाट
निवळयानी। तो भी आ बात जरूरी कोनी कै भम्मी बर
आपा मू इण तरै री अनोखी मगती आम जावती हुवै
कारण घणाई लोग इणा देख्या है जिका इत्ती औस्थ
लेय'र भी आई मिनख्या जिसा रैया। हा, एक बात और
दादी में आ सिद्धी कोई आज ई आयी हुवै, आ बात भ
कोनी। इण तरै लोगां री भलाई करते पूरा तीस बरस
हुयग्या।

दादी विधवा तो ठा नईं, कित्ता बरसां पैली हुयी
ही, पण म्हैं तो समझ पकड़'र दादी रै केसरिया-कसूमल
अर हाती दांत रो चूड़ो पैरयोड़ा ई देख्या, अर थोड़ा दिन

पैली तईं दादी नैं मुवागण ई जाणतो । पण दादी नैं बायां धिरियाणी रो हुकम हो जिण सूं बैं राडो बेस नईं राखता। बायांजी रो ई दादी रैं इस्ट हो, अर इण रैं परताव सूं ई बा सगळा रा कारज सारती ।

दिनूगैं-सिझ्या, दोनूं टैम दादी बायाजी रैं धूप खेंवती । मिन्दर रैं आगलैं चौंक में नर-नारयां रा गट मच जावता— सगळा आसामुखी । पन्द्रै-बीस मिन्ट तईं खूब धूमधाम सूं आरती हुंवती, आरती पूरी हुंवते ई— बाया धिरियाणी री जै— बोलीजती, अर बस, बाया री छैयां दादी मे बड जावती । अस्सी बरसां री डोकरी, जिण सूं लकड़ी रैं सायेरैं बिना एक पांवडो ई नईं धरीजतो, अबैं छोटैं टाबर दई उछळण लाग जांवती ।

दादी अबैं परचो देवणो सरू करती । नमूनैं खातर—

एक लुगाई— खमा, घणी खम्मा !

दादी— थारैं बेटैं नैं ताव आवैं है नी ए ?

सागण लुगाई— खमा, आवैं, कस्ट काटो धण्यां रैं।

दादी— ताव आंवते तीन मइना हुयग्या ?

लुगाई रो गळो गळगळो हुयग्यो । मन में सोच्यो— अठै तईं ठा पड़गी, जद अबैं आछो करणो कांईं बडी बात है । बोली— "हुकम धिरियाण्यां, अबैं तो आछो करो ।

इण तरै आठ-दस जणां नै दादी रोज परचो देवती जिण मांय सूं छव-सात तो पक्कायत साजा हुवता। जिणां रा कारज सरता, वे तो दादी रै नेम सू आंवता ई, पण और भी कित्ताई जणा नै घेर'र लांवता, इण तरै दादी रै अठै सागीड़ो मेळो मंड्योड़ो रेवतो।

ये जे पूछो तो हूं दादी रो पक्को ठिकाणो भी बताय दूं, कोई बात पूछणी हुवै तो, पण अबै उणा रो ठिकाणो मालम करणो है फालतू, कारण बूढा माजी तो सात-आठ महनां पैलो बायांजी री जोत मे जोत मिलाय दी। अबै उणा री विधवा बेटी मिन्दर मे धूप खेवै है, पण वीसूं कामड़ो पार पडणो मुसकल है।

आज भी हरखू दादी रै मरयां री ठा नईं होण रै कारण आघै-आघै सू जातरी आवै, पण जद ठा पड़ै कै भोपीजी जोत में समायग्या, तद निरास हुय'र पाछा घरे जावै।

काळू

काळू कारखानै मे काम करै । है तो भलो ग्रादमी, पण लोक बीनै श्री च्यार-सौ-बीस कंय'र बतळावै ।

मिनखा सरीर है, काम-काज हुंवता ई रैवै, पण ग्रफसर छुट्टी नई देवै । इण हालत में ग्राप ग्रचाणक जोर सू हाको करतै,—'ग्रोय रे, मरग्यो रे'' कंय'र, हात ग्रथवा पग भालै वैठ जासी । पसवाड़ै काम करणिया भाग'र मायता खातर ग्रासी, ग्रर हवा पाणी करसी । ग्राप ''ग्रोय मावड़ी ए, ग्ररे वाप रे, हाय राम रे'' करतो-करतो ग्रफसर रै हात रो पुरजो लेय'र ग्रस्पताळ पूगै । सगळी ग्रस्पताळ नै माथै सूणी कर लेवै । बीजे मरीजा नै छोड़'र पैली डाक्टर-कम्पोडर काळू नै संभाळै । काळू पीड बतावै जिकी जागा पाटा-पोळी कर देवै, ग्रर काळू नै ग्राठ-दस दिना री वेमारी रो माटीपिगट मिल जावै ।

डाक्टर जे कंय देवै– चोट तो दीसै कोनी, छुट्टी री काई जरूरत है, तो काळू वारा लत्ता लेय लेवै– चोट री तो लागै जिकै नै ठा पड़ै । ब्याऊ फाटै जिकै नै ठा पड़ै कै पीड़ किसी'क हुवै । थानै पीड़ नई दीसै, तो मनै घडी

अस्पताळ जावण दो, पी. एम. ओ. तो जीवं है ।" इण तरै हाका करयां सू अस्पताळ रो डिसीप्लिन बिगड़ै इण कारण डाक्टर लोग काळू रै अस्पताळ पूगते ई कंवे जित्ता दिना रो साटीपिगट आंख्यां मीच'र देय देवै ।

कारखानै सू छुट्टी माथै, घरे आय'र पाटा-पोळी खोलै, अर काळू घर रा सगळा काम करै, कसरत करै, कुस्त्यां लड़ै अर मौज करै । दिपटी माथै चोट लाग्यां सूं पइसा तो घरे बैठ्यां मिल ई जावै ।

एक दिन म्हारै एक साथी रै घरे काळू आय'र बोल्यो– "पांच रुपिया चाहीजै । म्हारी मां जलम आठ्यां रो एकत करसी । डोकरी अबै कित्ता'क दिनां री ? जे परबन्ध नईं हुयो, तो मन में कांईं जाणसी ?" साथी बोल्यो– "हाल तो आठ्यां आडा दस दिन पड़या है ।"

"दस तो पड़या है, पण कोई ऊभा लकड़ा बेज थोडा ई घलै है ।"

"ठीक है, तू फेर आए ।" कंय'र बीनै काढ दियो ।

काळू साथी रै घर री फेरी सरू करदी, साथी पांच रुपिया देय'र लारो छोडायो ।

एक दिन पाड़ोस में एक माजी कनै झूकतो गयो– माजी, काकोजी (बाप) मरग्या, आज चौथो दिन है, भार

[illegible] है। [illegible] सू [illegible] देव दे [illegible] रुपिया रो चाईजै कोनी। ब्याज री रकम में [illegible] जाती। सेठजी कैवे– "कोई हजार रुपिया लेजा पण ब्याज रो [illegible] रुपियो लागसी।' इतो मोटो ब्याज म्हारा सू देईजै कोनी। कोई चोरा [illegible] कोनी। रुपियै गई ब्याज में फरक नईं पड़ सकै। ब्याज भी तो ब्याज रुपिया ब्याज हुँ [illegible] देखण नै ब्याज है, पूरै मादरै मडने रो ब्याज।"

माजी री जिन्दगी रै तीन ताळा हा। उणा वनै सू बिना प्रजाणगत कोई रुपियो नईं निकळवा सकतो। पण काळू दिन-दिन में घ्राग्या घ्रानी फार'र इसी गरीबी देखाळी कै डोकरी च्यार रुपिया गाय मेल'र च्यार सो काढ'र देय दिया।

काळू रै बाप रै तेरवे दिन माजी चौरै घरे पुग्या। काळू नै तो वै गावळ जाणता, कारण मिन्दरा में जागणां में भजन गावतो देख्योड़ो हो अर सैंधो हुयोड़ो हो, पण उण रै बाप नै कदेई देखण रो मौको नईं पड्यो। जद काळू रो बारणो भांग्यो, तो माय सू एक जणै भ्राय'र भाडो खोल्यो। माजी बोल्या– "काळू कठै ?"

"बारै गयोड़ो है।"

"थे कांई लागो हो वीरै ?"

"हूं कांई को लागूं नी।"

"म्हारै कनै काळू च्यार सौ रुपिया उधार लेयग्यो कै म्हारो बाप मरग्यो, अर बाप रै बारै दिनां पछै पूगता कर देसू। आज बाप रो तेरवो दिन हुयग्यो।"

"बाप रो तेरवों दिन हुयग्यो ? बाप तो हूं सामो ऊभो हूं, जीवतो-जागतो।"

"थे काळू रा बाप हो, थां तो कैयो नी 'हूं कांई को लागूं नी।"

"हां, म्हारै वींसूं बोलचाल कोनी।" माजी माथै रै हात दियां आपरै घरे गया।

चकमो देवण में काळू आपरै अफसरां सूं भी चूकै नईं। एक दिन साब रै बंगलै जाय'र रोयो– "म्हारै तो बापूजी रो सरीर वरतीजग्यो, काठ-खफण रो ई सराजाम कोनी।"

साब नै काळू री गत मालम ही– बोलयो "आव रो म्हारै सागै मोटर में बैठजा, हू चाल'र लकड़ा नंखायदूं।" काळू कैयो– "मनै तो आप पचास रुपिया रोकड़ी देवण री किरपा करदो, साथै हाथां सू तो हूं जात-बिरादरी में भूंडो लागसू।"

माव पूछयो– मनै था बताव कै थारो बाप कितवें फेरं मरयो है ? वयू थापड़े डोकरे रै वाय डांग'र लारै लाग्यो है ? जीवण दै वनी दो दिन ?"

काळू देख्यो– माव नाराज्यो। बोल्यो– श्रद्धया लगनीक माफ करधा, थौर वठैई कोसीस करसूं।

एक दिन काळू म्हारै घरे श्रायग्यो– "श्रवार रा श्रवार वीस रपिया चाहीजै।" जाणै कोई म्हारै गाथै मांगतो हुवै ज्यूं। हूं पैनी काळू रा कारनामा सुण चूक्यो हो, इण कारण म्हारै सभाव सू पग्वार मैं कैयो– "काळू! भलेई रीस कर, चावै रोसो कर, हूं तो साची-साची बात कसूं– देख, जे तूं गऊकार हुवतो, तो तनै थारो घर छोड'र वीस रपियां खातर म्हारै घर लई एक कोस री मजल करण री जरूरत नई पडनी चाहीजती ही, श्रर जे तूं कैवै– हूं चोर हू– तो चोर नै देवण नैं म्हारै कनै रपिया कोनी।

काळू कारखानै री दिपटी काढै, डंड-बैठक निकाळै, कुस्ती लड़ै, दाव पेच लगावै पण वैरी लेणायतां रै डर सू घी रो एक छांटो भी पेट मे म्हांरा नई सकै। रात री दस-इग्यारै वजी जद कै, श्रावण श्राळा रो खतरो नई हुवै; काळू श्रांवतो गाभै मे सुकाय'र घीवगाम लावै, घर

"थे कांई लागो हो वीरं ?"

"हूं कांई को लागू नी ।"

"म्हारं कनै काळू च्यार सौ रुपिया उधार लेयग्यो
कै म्हारो बाप मरग्यो, अर बाप रै बारै दिनां पछै पूगत
कर देसूं । आज बाप रो तेरवों दिन हुयग्यो ।"

"बाप रो तेरवों दिन हुयग्यो ? बाप तो हूं सामो
ऊभो हूं, जीवतो-जागतो ।"

"थे काळू रा बाप हो, थां तो कैयो नी 'हूं कांई को
लागूं नी ।"

"हा, म्हारं वीसूं बोलचाल कोनी ।" माजी माथै रै
हात दियां आपरै घरे गया ।

चकमो देवण मे काळू आपरै अफसरां सूं भी चूकै
नईं । एक दिन साब रै बंगलै जाय'र रोयो– "म्हारै तो
बापूजी रो सरीर वरतीजग्यो, काठ-खफण रो ई सराजाम
कोनी ।"

साब नै काळू री गत मालम ही– बोल्यो "आव रो
म्हारै सागै मोटर में बैठजा, हूं चाल'र लकड़ा नंखायदूं ।"
काळू कैयो– "मनै तो आप पचास रुपिया रोकड़ी देवण
री किरपा करदो, साथै हाल्यां सू तो हू जात-बिरादरी में
भूडो लागसूं ।"

माव पूछ्यो– मनैं थ्रा बताव कै थारो बाप कितवैं
रे मरघो है ? बपू वापड़ैं डोकरैं रैं वाय डांग'र लारैं
त्यो है ? जीवण दै वनी दो दिन ?"

काळू देख्यो– माव नटग्यो। बोल्यो– बख्या
गीर माफ करघा, ग्रौर कठैई कोनीम करसूं।

एक दिन काळू म्हारै घरै श्रायग्यो– "श्रबार रा
प्रबार बीस रुपिया चाहीजै।" जाणैं कोई म्हारै मायैं
मांगतो हुवैं ज्यूं। हूं पैली काळू रा कारनामा सुण चूक्यो
हो, इण कारण म्हारै सभाव सूं परवार मैं कैयो– "काळू!
मनैई रीस कर, चावै रोसो कर, हूं तो साची-साची वात
कैसूं– देख, जे तूं गऊकार हुंवतो, तो तनैं थारो घर
छोड'र बीस रुपियां खातर म्हारै घर तई एक कोस री
मजल करण री जरूरत नईं पड़नी चाहीजती ही, ग्रर जे
तूं कैवैं– हूं चोर हूं– तो चोर नै देवण नै म्हारै कनै
रुपिया कोनी।

काळू कारखानैं री दिपटी काढै, डड-बैठक निकाळै,
कुस्ती लड़ै, डाव पेच लगावै पण वैरी लेणायतां रैं डर सूं
घी रो एक छांटो भी पेट में म्हार नईं सकै। रात री
दस-इग्यारै बजी जद कै, श्रावण भाळा रो खतरो नईं हुवैं,
काळू श्रावतो गाभै मे लुकाय'र चोकगणाम लावै,

माखरा, दूध, मळाई अथवा घी गूं हाड चीकरगा करै ।

काळू सोवै एक घर में, जोमै दूजै में, वैठै तीजै में, भर ठिकाणो वतावै चौथै रो ।

कदेई-कदेई मारग वेवनै री लोक साइकल झाल लै, अथवा घड़ी मे हात घालै । वानै झांसापट्टी दे देवाय'र काळू जँ रामजी री कर जावै ।

कारखानै सू आयां पछै काळू अंगरेजी फैसन रा गाभा– हैट, बूट, पैंट, टाई डटावै, अर पाळट्यां-घाळट्यां में विना नूतै ई ढूक जावै । वठै जाय'र चोर दई गाय-पीय'र आय जावै जिकी वात नईं, आला अफसरा दईं नोकरां माथै हुकम भी लगासी । आपरी ऊमर में काळू एक-दो वार ई टोकीज्यो हुवैलो, और तो सदेई बेदाग निकळै, कारण आछा कपड़ा पैर्यां पछै वडो अफसर हुवै ज्यू दीसरा लाग जावै– स्यान सिकल सावरियै सावळ दी है, अर मूछ्या भी सफा-चट मैदान !

मथजी

ग्रागो बौजगार डील, गोरो रंग, लाबो वट तीखो नाक, माठा हात— ग्रटगट बग्गा री ग्रोग्या में मथजी रै हात मे दोट्टी रो गेडो पकड़ायत ही, पण वे उण री मावेरी नईं मेवता । ग्राप मोकळा बरस मथाई मे गोने-घाटी री दिसावरी करी । जद दो-मथाई बग्गा री मुसाफरी कर'र घरे ग्रावता तो मिलण नै ग्रावण ग्राळा रो तांतो बध जावतो । ग्राप साथै रमान रा छुवा-रा-छुवा लावता जिकी मिलण नै ग्रावण ग्राळा मे बाट देवता । जिका धुळ मे नेहा लागता, वानै टोप्या, पगरख्या, गाभा देवता । मथाई सूं इग्गी वेळा जित्ता पइसा हात मे हुवता, वा माय सूं घणा-मा'क तो ग्रा जिनस्या मे खरचीज जावता, घरे बैठ'र खावण खातर घणी पूजी ग्रापरै कनै नईं हुवती । इण कारण ग्रठै ग्रायां पछै थोड़ा दिन तो ग्रापरा खरचा सावळ चालता, पछै हात मे कसालो ग्राय जावतो ।

पण कसालै मे तो ग्राप कदेई रैयोडा कोनी । माईनां रै राज में गायां-भैस्या घणी ई दूजती ही जिण सूं दूध री कड़ाई घर मे चढी-री-चढी रैवती । जवानी मे भी एक रुपियै री तीन सेर रबड़ी रो गूणियो नित हमेस लावण

रो नेम, फेर घर में सगळां में बांट'र खावणी । जवानी में आप बूटी भी मोकळी पीवता जिए मार्थ मीठो खायां बिना नसा नई ऊगता ।

दिलाली में आप एक दिन में हजार-हजार रुपिया कित्ती ई वार कमाया हुसी । आपरी ऊमर मे मघजी लाखूं रुपिया कमाया, पण भेळा करण री विद्या नई सीखी इण कारण इणां रा छोटा भाई भी न्यारा हुयग्या ।

जद आछी कमाई हुंवती तो आप झट बजार में जाय'र कुत्ता नै तीस-चाळीस रुपिया री जळेब्या अर गाय-गोधा नै घास नखांवता, मिदरां में रुपिया चढांवता, गरीबा नै गाभा दिरांवता ।

आप आयें साल लाटरी भरता अर, जे निकळै तो, सगळां री पाती रो हैसाब आगूच लिख'र राख लेंवता अर सगळा नै वताय देवता, पण आपरी ऊमर मे एक बार, भी लाटरी नीसरी नई ।

अटसट री ऊमर में भी आप रा दांत बतीसूं कायम हा । नीम अथवा वावळियै रै दातण रो आपरै नेम हो जिए नै आप ऊमर-भर निभायो, इणी कारण दांत पड़नो तो आघो रैयो, हिलकणो ई किसो'क हुवै !

आम्या नै आप घी रो ताजो काजळ पाड़'र माज्योड़ी

[illegible] नाम नै आप
[illegible] नै [illegible] दियो।
[illegible] देख लेवता
नै घणा नाराज हुवता। [illegible] रै [illegible] ई
ई घणी [illegible] करावता।

ऊनाळो हुवो अथवा सियाळो, आप भोर में वेगा
ऊठ'र घूमण नै जावता। दरवाजै वारै बगीची में न्हावा-
धोवा कर'र घरै आवता। आप नेमी– धोमी गु शरीर री
देख भाळ खासू राखता।

पती री साग– पातरा, पानामेथी अर चन्दळियो–
आपनै घणो रुचतो। आप दाळ भी रोजीनै जीमता, अर
एनका सीग मार्थ अकरा मेक'र जीमता। पपीतै रो पणो
करता, अर थोगो भी गावता। ऊनाळै मे आमरस दोनूं
टैम चालतो।

वाणीकै मे आप वडा अर गोळ-गोळ आखर
लिखता। पाढा अर लेखा आपनै चोखी तरै याद हा
सतरंज अर चौपड रा आप जूना अर नामी रमार हा
आपरा चेला मोकळा लाधै।

चौमासै मे आप नरसग सागर रै तळाव माथै डे
दियोडा राखता– तळाव में सावण घस'र कोई पाणी

सूगलो नईं करै है । जे कोई सावण री हीमत करतो, वीनैं मघजी दाकल देय'र बंध कर देवता । दाकल सूं नईं रुकणियो गाळयां सू थमतो ।

आपनै तिरणो घणो आछो आंवतो । घंटा-दो-घंटा आप आराम सूं पाणी माथै पड्या रैवता । चौमासां में आप कित्ता ई डूबता लोका नै झाल-झाल चोटा वारै काढ्या अर वारा प्राण बंचाया करता ।

मघजी ऊमर में भांग री मोकळी नसो कर्‌यो । एक वार मम्बाई जांवती बेळा आपरै कनै जगात आळां पाव-भर बूटी पकड्ली, अर वै कानूनी कारवाई करणी चांवता हा । मघजी वांनै समझाया कै श्रो तो वांरै रस्तै-रस्तै रो मावो है, इण सू वेसी कोनी । पण जगात अर नसं रै मैकमै आळा कद मानण लाग्या ? मघजी बोल्या- "जे थांनै भरोसो नईं हुवै, तो हूं थारै सामनै ई म्हारी खुराक लेय लूं ।" इया कैय'र वै दो मुट्ठा भर'र सूकी भांग चावग्या । तीजै मुट्ठै में मैकमै आळा हात जोड़ दिया- "अछ्या वावा, वस करो ।"

जद बूढापै मे मम्वाई सू घरे भ्राय'र वैठग्या, अर आवत रुकगी पण खरचा नईं रुकया, तो आपनै पइसा माथै करणा पड़ता जिका गैणा-गाठा बेच'र उतारीजता ।

सेठ रै धरा नू [illegible] मघजी रै घर में [illegible] गैंणां रो जेवर हो।

जद आखरी टैम आयी, तो आपनै ध्यान में दीसै ज्यूं दीसगी। घर रै आगै एक पिंडतजी भागोत री कथा बैठायी। मघजी घर आळा नै कैय दियो कै "कथा पूरी हुवै जद थे गावै नै घणोठो लोटो, एक रपियो, अर एक नारेळ चढाय दिया।" घर आळा बोल्या– "थे थारे हात सूं चढाय दिया।" पण आप फरमायो कै "पूरणाहुती तईं म्हारो शरीर कायम नईं रैवैलो।" घर आळा हस्या, पण बात कैयी ज्यूं होगरी।

नारली घडी आयी तो आपनै आंगरा में सुवाण्या। जद पूछ्यो 'काईं मन मे है', तो बोल्या– "भगवान रै विराट सरूप रा दरसण करणा चाऊं, आ ईं मन मे है।" घर आळा समझ्या नईं तो आप बोल्या– "गीताजी री पोथी मे है।" गीताजी री पोथी खोल'र विराट सरूप आपरै आगै कर्‌यो, आधा-पड़धा हात उठाया, जोडन साल्, अर पोटू मे निजर गडोये-गडोये प्राण-पंखेरू उडग्या।

मघजी आप तो कोनी, पण थारी दातारी रै कारण आज भी मोकळा लोक उणा नै याद करै।

लिखमीनाथजी

टावरपणें में आप एक हुशियार टावर दीसता हा। इस्कूल रै दिनां भी आप आडै विचारयी दई नई रैया—कळकत्तै विस्वविद्यालै सू आप दसवी किलास पास करी, पिरथम सिरेणी मे ! जद काम काज लाग्या तो लूटी जमैंवारी रा काम आप सभाळ्या अर वांमें गजब री खिमता देखाळी।

आपरा आखर छापै नै छेडैं बैठाणता। हिन्दी, अंगरेजी, गुजराती, बंगला सगळ्यां में जाणै मोती पोया हुवै।

गाण-विद्या में पग्लै पार पूग्योड़ा हा, संगीत रा डाढा पारखी हा। राग-रागणी रै भेदां सार बारीकी सूं समझता। गळो आपरो बिगड़्यो हो, अथवा ठेट सू ई खराब हो आ ठा नईं, पण तो भी आप गांवता। जागणां में पूगता। आपरै विना जागण अलूणा लखांवता। पेटी-बाजो आपरो प्यारो साज। ढ़ल्यो-भाग्यो, रद्दी-सद्दी, किसो ई बाजो आपरै आगै मेल दो, बाजो नाचण लाग जासी, इसी आपरै हातां री करामात ! सोनै में मंढावण जोगा

आपरा हात । हीरा जड़ावै जिमी आपरी आंगळ्यां ।

सुर रै साथै आपनै ताळ री भी भरपूर ग्यान । आंगळ्यां उछळै अर बाजो बजावण रै साथै ताळ भी, खाली, भरी दरसावै ।

साहित में भी आप री मोकळी रुची । आप साहित अर कला री कई संस्थावां नै जलम दियो, पण वै आपरै साथै ई गयी परी । आप कवी रै रूप मे भी परगट हुया, मोकळा भजन बणाया, पोथा-पोत छपवाया, पण वांरो परचार घणो नहीं हुयो ।

ढळती जवानी में आपरै माथै मे केई बिचार उठ्या जिण सू आप अपणै आप नै निलमीनाथजी समझण लागग्या । खाली इत्तो ई नहीं, द्वापर-जुग रै और भी केई लोगां रा नांव आप धरय्या, जिण मे महाराजा गंगासिंहजी नै आप अरजुन बणा राख्या हा । इण रै अलावा कंस, सिसपाल, सकुनी, दुरियोधन, रुकमणी, सतभामा, राधा अर कुबजा भी आप थरप राखी ही । द्वापर रै पात्रां रा लोग जे आं नावां सू रैया हुवै तो कोई इचरज कोनी पण लोगां इणां री बात माथै पूरो ध्यान नई दियो । होणो सकै कै जे इणां री बात लोग ध्यान सू सुणता तो हाने आपरी अमोलक दान लोका सू भिजन बरण मे नई ग्लादक्नो

पड़तो, अर थें दुनिया खातर कोई काम री वातां बतांवता ।

वां जद कैयो– "हूं लिखमीनाथ हूं" तो दुनियां कैयो– "गैलो हुयग्यो दीसै है ।" दुनियां री इण भायखा रो उणां रै माथै असर पड़ भी गयो, अर वै पैली आळा सागी नईं रैया ।

"राम सा पीर री जै" सू आप चिगण लागग्या– भई हूं साख्यात लिखमीनाथ बैठ्यो हूं, तो फेर और केई री जै बोलण सू काईं काम ?

एक वार आप नरसंगजी रै मिन्दर गया । बठै वाजो हात मे लेय'र सुर छेड्या, अर वारै सू अवाज आयी– "राम सा बावै री जै ।" आप वाजो बंध कर दियो । जद आप पाछा सुर छेड़्या तो फेर बावै री जै । आप उठ'र वारै गया । पण जै बोलणिया सगळा छाकटा ! पाटा माथै इया पड्या खर्राटा लेवै जाणैं घोर नीद में है । आप फेर वाजो सरू कर्यो अर फेर "जै" । अबै आप बकणो सरू करधो । गळो बैठग्यो । लोकां वारै जाय'र पाटै माथै सोवण रो मिस करणियां नै समझाय'र बोला राख्या । पछै आपरो गावणो हुयो ।

जागण मे सुणाया आपनै मैणो दैवती– इसा ई

हैंसा हुसी निरमोलालजी । ई मर्गं रै उपरां मैं म्हार
गीत रचाव'र माया जिण री एक-दो ओळ इण तरै है—

चैन नहीं अब मेरे वारे,
नैन नहीं मेरे रतनारे,
अधर नहीं मेरे अरुनारे,
गनिया कृष्ण कैसे स्वीकारे ?

पण फेर भी माग्या कर्नै सू मनोजण री आपरी तरवळ इंछ्या ही । एक दिन आप जागण में मोर मुगट, पीतंबर, वंसरी, कुंडळ धारण कर'र पधारया । बंसी बजावणी तो आवती ई ही । लोका झुडेई-झुडेई हात जोड्या, पगां पड्या, जै बोली, अर आप राजी हुयग्या । वठै केमरो मंगायीज्यो, अर आपरो फोटू उतरग्यो । फोटू 'मीरा' छापै मे छप्यो, अर नीचै लिख्यो हो— नकली कृष्ण ।

"नकली कृष्ण" री बात सू आपनै घणो दुख हुयो । आप छापै रै सम्पादक नै इण आसै रो एक पत्तर भेज्यो— आज सू पांच सौ बरसा पैली मीरा रो जलम हुयो, अर बा म्हारै सू हळको प्रेम करणो चावती । बी चवड़ै धारै गीत गाया—

मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरो न कोई,

जाके सिर मोर मुगट, मेरो पति सोई ।

मुर्ने आम मनैं आपरो धणी बणायो, पण मैं मीरां री आं बातनू बातां मार्थ ध्यान देवणो ठीक नईं समझ'र उण सूं धणी-पतनी रो नातो नईं जोड़्यो । मीरां मरती मन में मैयगी । अबै पांचसो बरसां पछै जद मीरां म्हारो कृष्ण रूप देख्यो, तो थांरी सारसी बळन पाछी तेज हुयगी अर थां एक पत्रिका रै रूप में म्हारी निन्दा करी है, धिरकार है मीरां नैं !

जागण में एक बार भजन गायीजतो हो—

मन मोहन मोहन आकर के

मुरली-धुन मधुर सुना दीजे ।

आप घर सूं पधारया तो इण भजन रा बोल कानां में पड़्या । पाछा घरे गया, मुरळी लेय'र आया, फेर बोल्या- "अबै म्हारा मुरळी बजावण रा दिन थोड़ा ई है, पण ये लोक हाल मनैं मुरळी खातर तंग करो । थांरो भजन सुण'र पाछो ठेट घरे जाय'र मुरळी लायो हूं । लो सुणो मुरळी ।"

आप कैया करता— गांधीजी नैं अर जवाहरलाल नै, सगळां नैं ठा है कै लिखमीनाथ रूप में म्हारो अवतार हुयग्यो, पण वै हाल ग्यान गिनारो नईं कर रैया है । ना

धोवण भाभी .

ऊमर बरस चाळीस-इकताळीस, जबाड़ां रा हाडका दीसै, सफा मुड़दी हुवै ज्यूं लागै। बीरो धणी म्हारै सूं बडो हो, अर म्हारै सागै पढतो इए कारए धोवण मनै देवर मान'र गूंगटो काढै।

गाभा लेवण नै तद ई आसी जद पइसां री जरूरत हुसी। पइसां खातर आय'र धरणो देसी तो फेर सोटां री मारी भी उठै नईं। जे समझावां– 'काल ले जाए', तो कैवै भट्ठी घालणी है, सोढो कोनी, सावण लावणी है, कोयला खूटग्या, पौडर ई लागग्यो। सगळी चीज्यां जद एकै सागै खूट जावै फेर लायण रो बिना पइसां काम कियां चालै। पइसा लिया पछै फेर ठैरए रो काम कोनी।

इत्ता बरसां मे धोवण कदेई कपड़ा धोय'र जी सोरो करयो हुवै जिकी बात कोनी। कदेई कोई कपड़ो टीच सूं खराब लाघसी, केई री उस्तरी सावळ को हुवैनी, केई रो रंग भट्ठी माथै उडग्यो अर केई रै दूजै कपड़ै रो रंग लागग्यो। जद वा गाभा धोय'र लावै तो सावळ देखणा पड़ै, कोजां गातर ग्रोळमो देयणो पड़ै, घणा कोजा हुवै जिका

गाढ़ा देवणा पड़े । धोवण आपरी जाग में तो कोजा धोयोड़ां नै बीच में लुकाय'र लावै, पण मगळा संभाळ्या कठै लुकै ?

ओळभो देवां तो कैवै– हूं तो धोय'र लिआयी जिका ई घणा समझो, तीन दिना सूं ताव में पडी ही । जे और केई ग गाभा हुंवता तो लावती ई कोनी । थारा तो लावणा पड़े । थारो डर लागै ।

कोजा धोयोड़ा देख'र रीस तो घणी आवै, अर जचै कै अबै धोवण फोरसा, पण म्हारी धोवण खाली धोवण तो है कोनी, बा तो धोवण भाभी है, गाभा धोय'र देवै जिको भी एक म्हारै माथै पाड चढे है ।

एक बार धोवण री मूगली धोवाई सूं उपघ'र मै कपडा देवणा बध कर दिया । पण म्हारो एकलै रो सारो थोड़ो ई है । धोवण घरे आय'र बकण लागगी– "हां, अबै बडा आदमी बणग्या जद म्हारा कपडा दाय थोडा ई आवै । अबै नवी धोवण धारसो भई. म्हारै जिसी अपणैली ग धोयोडा थानै आछा थोड़ा ई लागै ।"

बा पुराण बाचती रैयी. पण मैं पाछो उथळो नई दियो ।

धोवण ऊभी हुय र गूदड़ा माथै सूं उतार-उतार, गुजा खाली कर'र आपेई गाभा भेळा कर लिया । बीरी इसी अपणायत आगै पछै है काई बोलतो ?

पण धोवण रा गुण म्हारै पेट में है। टाबरां री मां तो बिना खुंजा संभाळै धोवण नै गाभा देय देवै, जे काम रा कागद-पत्तर हुसी तो पाधरा धोवण रै घरे पूग जासी। पण धोवण भाभी म्हारै गाभां रा खुंजा ध्यान देय'र आपरै हाता सूं सभाळै, अर खुंजा में रैयोड़ो कागद-पतर, पइसो-टक्को घरे लाय'र पुगावै। बीजी धोवण सूं इसी आसा पुरण राख सकै ?

इण रै सिवाय म्हारै घर में धोवण नै दियोड़ा गाभा रो हैसाब भी नईं रैवै। कित्ता दिया, कित्ता आया, कित्ता धुपणा हा, कित्ता उस्तरी खातर हा, आछी तरै कोई याद राखै न चौपनियै में टूकै। पण धोवण भाभी रै परताप म्हानै याद राखण अथवा टूकण री जरूरत नईं पड़ै। इसी बिलल्ली-सी'क दीसै जिकी लुगाई सगळै सैर रा गाभा मूंढै याद राखै, आ किनै इचरज री बात है ? जे कदास भाभी री जागा कोई बीजी धोवण हुंवती, तो आज तईं मे गोळ घाल'र चौगणा पइसा धोवाई मे लेंवती, अर म्हारै हैसाब में पोल देख'र गाभा गवळगट करती जिका पाखती मे।

भाभी कपडा कोजा धोवै, पइसां खातर तकरार करै, अर मोकळो माथो पचावै, पण फेर भी आपरै टाबरां रै अर म्हारै भाग री दस बरस वैठी रैवै तो घणो आछो, इयां हूं मन में कंया करूं।

पण धोवण रा गुण म्हारै पेट में है। टाबरां र मा तो बिना गुजा संभाळे धोवण नै गाभा देय देवै, जे काम र कागद-पत्तर हुसी तो पाधरा धोवण रै घरे पूग जासी पण धोवण भाभी म्हारै गाभां रा गुजा ध्यान देय'र आपरै हातां सूं सभाळै, अर गुजा मे रैयोड़ो कागद-पत्तर, पइसो-टक्को घरे लाय'र पुगावै। बीजी धोवण सूं इसी आसा कुण राख सकै ?

इण रै सिवाय म्हारै घर में धोवण नै दियोड़ा गाभां रो हैसाब भी नईं रैवे। कित्ता दिया, कित्ता आया, कित्ता धुपणा हा, कित्ता इस्तरी खातर हा, आछी तरै कोई याद राखै न चोपनियै में टूकै। पण धोवण भाभी रै परताप म्हानै याद राखण अथवा टूकण री जरूरत नईं पड़ै। इसी बिलल्ली-सी'क दीसै जिकी लुगाई सगळै सैर रा गाभा मूढै याद राखै, आ कित्तै इचरज री वात है ? जे कदास भाभी री जागा कोई बीजी धोवण हुवती, तो आज तईं में गोळ घाल'र चोगणा पइसा धोवाई मे लेवती, अर म्हारै हैसाव में पोल देख'र गाभा गवळगट करती जिका पाखती में।

भाभी कपड़ा कोजा धोवै, पइसां खातर तकरार करै, अर मोकळो माथो पचावै, पण फेर भी आपरै टाबरां रै अर म्हारै भाग री दस बरस वैठी रैवै तो घणो इयां हूं मन में कैया करूं।

जे कोई कैय देवै– "नईं सा, ओ काम इयां तो को हुय सकै नी।" तो फेर देखो तमासा–"इयां को हुय सकै नी? ओ अफसर रो हुकम है अर तू कँवै हुय सकै कोनी! बडै अचूंबै री बात है। पैली सोच तो लिया कर कै तूं बात कीसूं करै है। अबार तूं अफसर सूं बात करै है। फेर कदेई म्हारै कनै आवै जद ख्याल राखे।"

इत्तै उपरान्त भी जे कोई डरतो-डरतो कांईं पाछो कैयो चावै, तो आप बात बंध कर देसी ? अछ्या, ठीक है, जा थारो काम कर। तनै समझावतां-समझावतां म्हारो तो गळो खराब हुयग्यो, अर तूं हाल समझ्यो ई कोनी। माथै मे कांई है थारै? अक्कल तो नैड़ कर ई निवळयोड़ी कोनी।"

पण जे कोई बाबू धडाधड पाछो पुरसणियों हुवै, तो वीरै माथै भागचन्द ठस्सा नईं जमावै।

भागचन्द आपरै दफ्तर नै कदेई-कदेई निरखै भी है। निरखण में बारीक बातां तो बाबुवां री हुसियारी रै कारण भागचन्द रै पल्लै माडी ई पड़ै, पण भागचन्द मोटी-मोटी कसरयां तो काढ सकै है, अफसर है नी– "कमरो बीत मूगलो पड़्यो है– मीत्यां रै जाळा जम रैया है। अरे, कुत्तो भी आपरी धुरी साफ राखै; थे तो मिनख हो।

"ई रजिस्टर रो गत्तो टूटग्यो । दूसरो बंधवावणो चाहीजै । थे लोक उकत मु काम को नेवोनी । हूं जे इत्ती-इत्ती बातां बनावतो रैम, तो म्हारो काम कुण करसी ? बाबू तो अफसर रो काम करण मूं रैया !

"आतै माह जे मै दफ्तर मे इसो मिडावो-पिडावो देख लियो तो हूं एक आधै ने घरे बैठाया बिना नई रैऊलो । हूं थारो अफसर हू, मालम है थांनै ?"

पण भागचन्द रो लाड जागल आळा बोनै पटाय भी मावळ राख्यो है । वै ऊँगे-मूई पाटी पढाय'र बडा-बडा काम भी चिमठया मे कढवाय लेवै । एक बार नोकरी मे भरती करती वेळा आप बाबू लोका रै टाबरा नै फेल कर कर'र काढ दिया । सगळा भेळा हुय'र साब कनै गया— "हजूर ! आपरै राज मे म्हारा टावर जे भरती नई हुसी, तो फेर वांनै भरती करणियो धरती माथै कोई जलम्यो ई कोनी ।"

"पण भई, मैं तो कागद अबै इजै अफसर कनै भेज दियो । म्हारै तो हाल माय सू बात निकळगी । पैली थे केवता तो कोई मुसकल बात को ही नी । थे भी कूंभकरण रा काका हो, अबै थांरी आख ऊघडी है जद बात हातां उतरगी । वो अफसर जे मिसल पाछी देय देवै तो पूछो ।"

बाबू थोड़ी देर में आय'र बोल्या– "साब ! आपरो हुकम कुण टाळ सकै है । वै तो चावै है कै साब रो हुकम मानीजै । साब मालक है । करता-धरता है ।"

"अच्छया ? तो जावो सिगला निपाओ ।" अर फैल करयोड़ै सगळा कागदां नै पास कर दिया ।

जिम्मेदारी री जागा माथै काम करतां थकां भी एक अफसर में जिकी गंभीरता चायीजै, उण रो आप में घाप'र टोटो है । आप जलम्या जिकी वगत बेमाता कनै गंभीरता सायद खतम हुयोड़ी ही इण कारण पांती नईं आयी । बडै अफसरा कनै जावण सू पैली भागचन्द बाबू लोकां नै धमकावै– "देखो, जे बडै अफसर मनै रगड़यो, तो हूं थानै रगड़ूलो ।"

जद कोई बाबू माथै नाराज हुवै तो रीस में आय'र कैय देवै– "अच्छया, तू जा । हूं आज सू थारो मूंडो ई देख्यो नईं चाऊं । अर जे हूं तनै भूल सूं बुलवाय भी लूं, तो तू आए मत, आ तनै छूट ।"

आ भागचन्द सोचै कोनी कै बाबू नोकर है अर वो भी नोकर है, अर बाबू लोकां रा मूंढा देख्या बिना साब लोकां रा काम चालै थोड़ा ई है, पण बिना सोचे भाटो न्हांख देवै, अर सागी दिन, पाच-दस मिन्ट छेड़ै ई बाबू नै

पाछो बुलाय लेसी । ई सूं मालम पड़ै कै पेटै पाप तो कोनी पण आपरै अणभांवता अर खुभता बोलां सू भागचन्द मोकळै बाबुवां नै आप सूं रीसाणा कर राख्या है। भागचन्द रै मामामाम तो सगळा हाजी, हम्मैजी करै, पण पीठ पाछै उण री खुड़ी नई खोनरतो हुवै इसो बाबू कोई दीस्यो कोनी ।

आपरै श्रोगणा मार भागचन्द समझतो नई हुवै जिसी बात कोनी । पढ्यो-लिख्यो है, मूरख तो है ई कोनी । कसर है तो कोरी आ, कै जवानी मे टाबरपणै री बातां करै जिण माथै गायेना मूढामूढ गैलो बगाणै, छोटकिया छानै छानै ।

केई वार धमूज'र पाप कंवै– "अरे ! हूं ई कोई धपसर हूं ?"

भागचन्द वैमी सभाव रो मिनख है। दफ्तर रै मोका माथै तो भरोसो कोनी सो कोनी पण बंगलै रै नोकरां माथै भी सक-सूबा सागीड़ा हुवै, इण कारण पांच-दस दिनां सू बेसी कोई नोकर भागचन्द रै बगलै मे टिकै नईं । पगार भी बीजा अपसरां सास आप रुपियो दो रुपियो इधको देवै, पण फेर भी लोक आपरै अठै नोकरी गारू मांवता सकै । कारण, वै जाणै कै पांच-दस दिनां सूं

"अबै तूं आ बताव के तैं बीस री छुट्टी क्यूं मांगी ? जे हूं मंजूर कर देवतो तो पांच दिन तई घरे बैठ्यो माख्यां मारतो ? अर मनै जचै कै पन्द्रै मूं घटाय'र जे हूं दस री करदूं तो भी थारो काम चाल सकै है।"

बाबू बोल्यो- "जे देवणी है जद तो पूरा बीस दिनां री देवो, माडा उगणीस री भी नईं, अर नईं, तो काठी राखो, म्हारै छुट्टी बिना अणसरयो जावै कोनी।"

साब पन्द्रै दिना री छुट्टी मंजूर कर'र अरजी मेज सूं हेटै न्हांख दी। बाबू चुपचाप लेयग्यो।

भागचन्द चिनी-मी'क बात नै भी ल्हीसाड्या बिना नईं छोडे, पण आ घणी आछी बात है कै वो इसो जिद अर बकवास आपरी लुगाई आगै नईं करै। लुगाई है गुलाब रो पुसब। जे दूजा दई वो लुगाई रो माथो खपावण लाग जावै, तो वा पक्कायन बेहोस हुजावै। लुगाई री वो ईजत करै, लाड राखै, लारै-लारै लिया फिरै, अर बीरी बात नईं टाळै।

थोड़ा दिना री बात है—दपतर रो बागवान साब रै बगलै आय'र दोब काटण लागग्यो। साब नाराज हुय'र नै काढ दियो- "अरे, गधो है तू ! ओ मुरधर में दोब आंख्यां देखण नै ई कठै पड़ी है। म्हे तो

मेंनत कर-कर मीठ ऊगायां, अर तूं जड़-जड़ वाढण लागग्यो !"

बागवान देख्यो सम्ता छूटग्या। माफी मांग'र टुरग्यो। बारै निकळतै ई मेंम मिलगी। पूछ्यो-"क्यूं भई, काट'र मावळ करदी दोव ?" बागवान नैं सुणीज तो गयो, पण अणजाण बण'र सिलाम कर'र साईकल माथै सूं बिना उतरे ई झट आगै निकळग्यो।

जद मेंम बगलै मे वडी तो देख्यो घास रा बूजा पैली ज्यूं ई ऊभा है। मेंम बडबड़ायी- "बागवान सफा गघो है, इणी काई दोव काटी !" साव कैयो वो मूरख तो मगळी घाढण ग्राळो हो, जे हूं घर मे नईं हुंवतो, तो वो लान रो नास कर नाखतो। जड़-जड़ वाढण लागग्यो।"

मेंम वोली- "दो-तीन दिना सू कोसीस कर'र म्हैं ई तो बीनै दोव काटण नैं बुलायो हो, अर था पाछो काढ दियो !"

"अच्छ्या ? आ हुयी ? तो हूं अवार रस्ते में पकड़ूं। पाछो लाऊ।"

"अवै तो वो आपरै घरै पूग्यो हुसी, रस्तै मे थोड़ो ई लाधसी।"

जे भागचन्द मे थोडी-सीं'क गभीरता अर घर री अकल हुंवती, तो इसा मिनख जोया नईं लाधता। पण दोम-मुगत मिनख धरती माथै कठै पड़्या है !

हरियो

वरस तो बीस-इकीस आयग्या, पण अकल हाल वरसां रै बराबर मइनां जिसी ई आयी कोनी, अर अवै आवै ई निरताऊ। इसी मालम पड़ै कै हरियै री अकल रै कोठै माथै कोई सिल्ला पडगी जिए सूं नूई' अकल तो उण में परवेस पावै नई', अर साल-सवा साल में जित्ती आयगी बा पडी-पड़ी सिड़ै है। किया हरियै रो ब्याव हुसी, अर कियां वो जवानी अर बूढापो काटसी, मनै रात-दिन ओ ई फिकर रैवै।

पैलपोत तो कद में ओछो रैयग्यो, फेर दांत बारै नीसरघोड़ा, बोलण में टट-पट, रंग तो काळो है जिको है ई। माईता रै सात बेटा मांयलो एक। जे एकल्पो हुवै तो फेर ई कोई गैणा अर घर देख'र छोरी लारै कर देवै। हाल तो हरियै रै ब्याव री ऊमर निकळी कोनी, पए सार्ग पूरो-सूरो सांसो ई है।

इत्तो वडो हुयग्यो, पण हरियै नैं हाल बीस तई' गिणती ई आवै कोनी। दस तई' भी सायद ई आंवती हुसी। जद कुवै सू पाणी लावतो हुवै, अर कोई पूछ लेवै—

ग्ये हरिया ! किता पढ़ा लियग्यो ?" तो म्हारे बंमी–
नीर।" जे पैलड़ी म्हायो हूंगो तो बंमी– "पैलड़ी म्हायो
" पग जे दूजे, तीजे, चोथे अथवा पाचवें घटिये म्हायो
दें अर कोई पूछ रे "म्हो किनवो', तो बंवे "तीजो।'
नाम जाणें या तो वींनें याद नहीं रेवे थूं किता लियग्यो,
ना म्हाई गिणती मे मगरा ई टोट है।

पण म्हारगी जाण मे हरियो भी दूजां नै भोदा
लगाया चावें। म्हारा बंधा घरे– 'म्हौर तो कोई नोकरी
दूरी कोनी अद म्हागर हार'र घर मे इस्कूल खोली है।
तीन-पचीस छोरा म्हावें है। म्हापा रो तो काम मजे मे
चाल जावे।"

एक दिन मैं पूछ्यो– "तू काई पढावें छोरां नै ?"

"छोरा नै सब पढाऊ– हिन्दी, अगरेजी, वाणीको,
पाढा, लेखा, घटा।"

मैं पूछ्यो– "तनै हिन्दी री बारखड़्या तो सगळी
आवती हुसी ?"

हरियो सीधो घणो। बोल्यो– "घणी-सी'क तो आवे
है, कोई-सी'क आवे कोनी, पण बारखड़ी बिना कोई काम
रुके थोड़ो ई है।"

फेर पूछ्यो– "पाढा तो तनै सगळा आंवता हुसी ?"

उथलो दियो– "पाछा सगळा आवै, तियँ-एकँ-इकती, तियँ-दूवँ-वती, पाछा मनै सगळा आवै ।"

सपतै रै सात दिनां रा नाव भी हरियै नै लंगसर याद कोनी, आगा-पाछा हुवै तो हू सकै है । एक दिन बोल्यो– "आज दादैजी नै चिट्ठी लिखी है, काल जोधपुर पूग जासी ।"

मैं पूछ्यो– 'आज काई वार हुयग्यो', तो बोल्यो– 'आज हुयग्यो मंगळवार, काल सोमवार नै जोधपुर पूग जासी ।' अर जे साच पूछ्यो हुवै तो बी 'मंगळवार' कंयो जिकै दिन मुकरवार हो । पण हरियै रै सगळा वार सरीसा है । मुकर, मंगळ एकूकार ।

वार पूछ्या पछै मैं पूछ्यो– "चिट्ठी कंण लिखी दादैजी नै ?"

"चिट्ठी मैं आप लिखी, म्हारै हात सूं ।"

"कियां लिखी ?"

"मैं लिख्यो– 'कागद-पत्तर थारो आयो । अठै खुसी, हू अबार नानाणै जीमण जाता हूं । रात नै वठेई सोता हूं । थे म्हारै खातर एक घड़ी भेजना ।"

हरियै नै मैं पूछ्यो– "हिन्दी रा आखर तो तूं थोड़ा घणा ओळखतो हुमी ?" बोल्यो– "आखर नो हूं दो दिनां

नै तो आंखो ई बरदास नईं करै। इण कारण जद पुनियै रा गोळा भरीजण लाग्या, तो हरियो बांग देय'र जोर-जोर सूं रोवण लागग्यो– "ए मायड़ी तैं मनैं क्यूं जायो ए ? मायड़ी हूं जगतो ई क्यूं मरग्योनी ए ?"

सगा-सगधी सगळा ऐंतरा-वैंतरा हुयग्या। पण हरियै रा बडा भाई बीनै झाल बांथा में भर एकै कड़गै लेयग्या।

गोळा भरीज्या पछै माईनां झांसो दियो– "वा रे टोफा ! सगाई पैली पुनियै री हुयी तो काईं हुयो, बीनणी पैली तनैं परणासा।" हरियै आं बोलां री गांठ बांधली। जद पुनियो फेरा खायण नै गयो, तो वठै फेर हरियै राफड़-रोळा करी, ग्रर मरग्रत-सिकन्दी पाय-पवाय'र वैंरी नै नीठ राजी करथो।

"हरियो" ग्रठै सतम हुवण ग्रायो हो, पण हरियै री ऊमर वडी है। ग्राज दिनूगै म्हारै घरे ग्राय'र मचन्दैणो वारणो खोल्यो। मैं सोच्यो इसो ग्राज कुण ग्रायग्यो। ग्रागै देखूं तो हरियो, हात में पाणी रो खाली कळसो। मनैं देखते ई बोल्यो– "डाक्टर साब ग्रायग्या।" हूं समझ्यो कोनी, मैं पूछ्यो– "हैं ?" तो बोल्यो– "मामी ग्रायगी।"

जद मैं पूछ्यो– "मामी डाक्टर है काई', तो बोल्यो– "हूं डाक्टर साब ई कैऊं हूं।"

"थारै सातर मामी काई' लायो ?

"लायो तो काई' कोनी।"

"चोळो, टोपी, चप्पल, काई' तो लायो हुसी, तू तो मामी रै आवण रा इत्ता कोड करतो हो ?"

हरियो म्हारै नैड़ो सिरक'र कानिया-मानिया ज्यू बोल्यो– "मामी मीठो खुवायो।"

इत्तो कैयो'र, सायद मीठै रै नाव सू, हरियै रै डावै हाथ माथै कीड़ी चढगी। पैली तो हरियै फूक सू उडावण री कोसीस करी, पण मीठो खायोड़ै हरियै रै हाथ सू जद कीड़ी चड़चिप हूवण लागगी तो वो जीवणै हाथ सू वळमै री देय'र कीड़ी नै धाम पुगाय दी।

फेर हरियो बोल्यो– मामै रो बेटो म्हारै सू मो घणो रासै। मनै कैवै– 'हरिया, तू आयग्यो ? आव, बैठ, जीम भाएला।' म्हारै सू मो है, मो। मो है, तन, धन, मन, संसार।"

हरियै रो लारलो बोल सपस्ट तो कोनी, पण इसी मालम पड़ी कै वो कोई बौत ऊंचा विचार परगट करणा चांवतो हो, पण लाई सावळ कर नईं सक्यो।

लैरी

आप मन मे तो जाणो कै लैरी अणनाथ्यो मांड हुवै ज्यू मच रैयो है, पण जे ऊपर सू केय देवो– आजकल तो थकग्यो दीसै लैरी– तो लैरी आ भूल जासी कै बूकिया मुगदर जिसा माता अर काठा है, साथळ्या हाती री टाग्यां सू घाट नई, पेट रै आगै जाणै एक भरखो बांध राख्यो हुवै, अर छाती अणमांवती चरबी सू लटवयोड़ी पड़ी है। लैरी कैसी– थकां आपेई बीरा, गावण नै खुराक कठै ? बिदाम-पिस्ता रो तो नांव ई लेवणो पाप है। घी-दूध में खोट सिवाय दूजी बात कोनी। बौपारी भलेई किता ई इमानदार हुवो, भेळ करयां बिना रैय ई नई सकै। गोरमिन्ट टैक्स लगा-लगाय'र बौपार्‌या सू धन भेळा करै; जद वे आपांनै चूसै। और कांई करै बापड़ा ? पेट आडी पाटी तो बांधण सू रैया। पण आ बौपार्‌यां रै डंडा पड़सी। अठै नईं, तो ठाकुरजी रै घरे। आ जनता नै घी री जागा जैर खुवावै। आजकल बीरा ! निरी बार आंख्या बळण लाग जावै– ओ सगळो खोटियै घी री मिलावट रो परभाव है।

ने आप कैसी— पीलूराम री शरीर माजनर है, मजोकी है मो मुलांमुनी मोटी ई हाली, सो भी मैंनी पतो उपजो दिन दिन गई रैहै— "छगनी पीलूराम ! सुगना माली पीलूराम रा सो । इण मोठ-बाजरी रो चावौजै कनी ? के बजार में मासो मो दुकानदार रा दाट मोटा, मर मौजत मोटी । मेवग रा थाट म्यारा घर देवण रा न्यारा, फेर मोत में मारं जिसी पाग्गी में । इसी मोठ-बाजरी मू मो पूड़ पावणो चोखो, पण गाड धूड़ पळे मू हेटी उतरै कोनी, बजराक प्रा पळै है । हूँ माप कैऊं, जे धूड़ खायां पार पटतो, मो नोकरी करतो म्हारै बावैजी रो मेटर !"

इण वात रै दूजै दिन ई जे आप कैसी— "मबार तो सरीर त्यारी माथै है नैरो, कांई बात है, डंड-बैठक मारै दीमै है ?", तो आप काल आळी बात नैं विसर जासी कै काल कांई-कांई रोवणा रोया हा । आप भट कमीज री बांयां ऊंची चढाय लेसी, अर डूकिया निरखण लाग जासी । डूकिया करड़ा कर'र मच्छी चढासी । सीनो बारै काढसी, आपरै सीनै सामी जोसी, फेर सामलै रै सीनै सूं, मन-मन मे, मिलाए करसी । फेर कैसी— "अखाड़ै में उस्तादजी भी आ ई बात कैयी कै आजकल त्यारी माथै है, अबै कोई दंगल ठैरावणी है ।"

लेरी कदेई-मी'क ई हां में हां म्लावें नई जद तो कंयं जिकी बात रो काट करणो सीख्योड़ो है । जे कैमो-ईं डालडा रो गरीर री गिल्या गार नांगी– "तो आप डालडे री इगी पैरवी गन्ध करणी जाणं गोल एजेन्ट आप ई है– अरे, डालडे में विटामिन है, अो गोनचय डब्बे में विना भेळ-सेळ रो मिलै, ईं गू घी री सगळी कम्या पूरी हुवै अो तो सुद्ध बनास्पती घी है, नुकसाण रो तो इण में लवलेस ई कोनी ।"

जे हिरण बांडा हुवै जिसी डाफर बाजती हुवै, गी सूं मानखै रा हात-पाग सिरता हुवै, न्हाया पछै टाबरियां रा दांत कट-कट बोलता हुवै, अर पाणी बरफ बण'र जमतो हुवै, इसै मौसम में भी आप कैसो– लैरी, आज तो सरदी मोकळी आयगी, तो लैरी कैसी– कठै सी है, सोवणी मौसम है– इया कंय'र कोट उतार देसी । थोड़ी ताळ में कमीज खोल देसी, अर एक गिंजी में घूमण लाग जासी । कोई खोलावै, तो गिंजी भी खोलणो कोई बडी बात कोनी, निरी वार खोल्या करै ।

मम्बाई-कळकत्तै में विना लिफट आळै माळै अथवा माड़ी में जावण सूं आप नै ताव चढ जावै । अो डील, अर बै पगोथिया । एक-एक पगोथियो गढ जीतण रै

बरावर है। पणो रस्तो तो इण बात रो है कै मोकळी वाडधा री नाळ इत्ती साकडी हुवै कै जद मैंरी चढतो-उतरतो हुवै, तो नाळ मे बीजो मिनख-लुगाई नईं मावै। सगळो रस्तो मैंरी खातर खाली छोड़णो पड़ै। ऊपर नीचै लोग भेळा हुयोडा देख-देख'र हंसता रैवै। दूबळा ग्ररदास करै- 'भगवान! जे ईं चरबी मांय सूं थोड़ी म्हांरै खानी कर देवतो, तो म्हे भी मिनख दीसण लाग जांवता, ग्रर मैंरी रो बोझ सूं लारो छूटतो।' नाळ खतम हुयां पछै जाणै मैंरी हियाळै री चढाई करली हुवै ज्यूं सगळा रै सामो जोवै। माघा सियाळै में भी पसीनै सूं ग्रालागार हुजावै। सास फूल्योडो ग्राध-पूण घंटै सू जांवतो पाछो सागी ठिकाणै ग्रावै, तद ग्राप कामरी वात सरू करण जोगो हुवै, हाफणी मे कांई तो कैवणियो कैवै, ग्रर कांई सुणनियो सुणै?

इण कारण जिका घरा ग्रथवा दफ्तरां मे लिफट लाग्योडा है, बठै जे घटा भर भी ग्रडीकणो पड़ै तो मैंरी नै कबूल है पणनू हियाळै री चढाई कीमू हुवै?

मैंरी जद मार्च मार्थ बैठै तो देखण वाळो जाणै कै ईंग, ऊपळा, पागा, माथै ई जासी, पण मैंरी ग्राज लई कदेई दावण ई तोड़ी कोनी। हां, जाडी मूं जाडी ईस्या

वेत री तड़ी दई सुळण लाग जावै । लेंरी नै ठा है– टाळो ईस, अर बैठो बीस । हां ईस बो टाळै पक्कायत है । लैंरी जिसा बीस बैठण रो तो भवान ई पैदा को हुवैनी । लैंरी जिसा दो सूं बेसी मांचै माथै मावै भी तो कोनी !

नैरी प्रापरी ऊमर में कदेई वाईसकोप देखण नै नईं गयो । घपूं भी गयो, इण री समझणा पडारां नै बतावण री जरूरत कोनी ।

नैरी नै भा मालम है कै जिकी चरबी जवानी में इसा फोड़ा घाले, बा बूढापै में कित्ता बेला बीतासी । इण कारण सारनैं दो महनां सूं नैंरी घी-दूध, मीठणाग, गगळा छोड़ गम्या है । भोर मे दो कोस तई घूमणो भी भाल्यो है । वैदजी कंवै कै जे नेम सूं भां बातां गैं रकमो रागसी, तो पक्कायत नैरी एक दिन मिनखापारै सागण साग जासी ।

पर्दां-मायलो

कुण जाणै कै थारा म्हारै काळज री कोर काढ'र हँसी-खुशी वणी ? कुण जाणै तू सावड़ री हवा-सरी हाली ॥ घणी पवन साथ म्हारी मई हुवी ? कुण जाणै कै तूं मान बोल री गोवन याद ही तो ?

कुण जाणै हरख-कोड सू, गाजै-बाजै सू पारो ब्याव हुयो तो ? कुण जाणै "दगो गगळा रो लाड, छोड'र वाई गिध थानीए, मेयग्यो टोळी माय सू टाळ, कोयलड़ी हद बोली ए" गावते-गावते मां री गळो भरीजग्यो हुवै पर वी गीत अधवीच में छोड दियो हुवै तो ?

कुण जाणै सासू-सुसरा सासरै रो सिणगार कर समभी हुवै तो ? कुण जाणै नान्हो-सो देवरियो एक पग रै ताण ऊभो हाजरी भरतो हो तो ? कुण जाणै सायबजी रै हिवड़ै रो हार वण्योड़ी ही तो।

कुण जाणै पाड़-पाड़ोसण्यां री आपत रो अधार ही तो ? कुण जाणै गळी में डोळा-विणज करणिया रै डोळां में ठंड पुगांवती तो ? कुण जाणै तूं काई ही, कुण जाणै तू कुण ही !

मैं तनै दिल्ली में नावल्टी बाईसकोप री सामली पट्टी माथै देखी । दिल्ली रो इसो बळ-बळतो तावड़ो, जिण रै डर सूं दुपारै सड़क माथै मूंडो काढतां काळजो कांपै, तैं सैण कर लियो हो । भाटां सूं चिण्योड़ी पट्टी लाय दई जगै, वठै तू विना टाट-बोरी, गीदो-गूदड़ो, राली-सीरख ढाळै, घरती बैठी रैवती, ऊपर छैयां-ग्राड रो नांव नई । तावड़ो सीधो थारै सगळै डील माथै पडतो, कारण डील ढकण सारू गाभा भी थारै कनै हा नई । पट्टी म्राळी ! मनै इचरज भ्रो है कै इसी गरमी सू भी तू मरी कियां कोनी !

दिल्ली में सियाळै रो सी भी लोकां सू छानो कोनी । चैस्टर सू लैस हुयोड़ा मैमसाव सायबजी सूं सट'र हालै है तो ई सरदी सूं भेळा-भेळा हुयोड़ा, अर तूं पट्टी म्राळी ! विना गाभै, सफा उघाड़ी इसै सी में इयां बैठी रैवती जाणै थारो डील काठ रो है ! काळो ठूंठ है, प्राण वायरो !

थारै सामली पट्टी माथै मोची रबड़ रै टायर री चपल्यां वणांवता अर नाकामल टुकड़ा-कातरिया उठती बेळा वठैई छोड जांवता । तूं वांनै भेळा करती, अर आधी रात हुयां वांनै जगाय'र धूणी रै सायैरै रात रो सी काटती । टायर रो धुश्रों थारी आंख्यां में जांवतो, पेट में जावतो, फेफड़ां मे जाळा जमांवतो, पण पट्टीम्राळी तोई !

कातर लेजांवती जिकी कठै गयी ? पण पट्टी माथली ! कोई तनै ओळख नई सक्यो, अर ना मनै उथळो दे सक्यो। मनै मोकळी जूजळ आयी कै तूं जीवी जित्तै मैं तनै क्यू नी पूछ्यो ! जे पूछतो, तो शायद तू सगळी बात सावळ बताय देवती कै तू कुण ही, अर थारी इसी दसा कियां हुयी। पण जद मैं पूछ्यो कोनी, तो ओ दोस म्हारो है। खैर थारै सू तो हूं इत्ती ई माफी चाऊं कै थारो नांव मैं पट्टी माथली राख्यो इण री रीस ना करे, चावै तूं इण लोक में है, अथवा परलोक में।

सवड़का-कोस

कातर लेजांवती जिको कठे गयो ? पण पट्टी माथली ! कोई तनै ओळख नईं सक्यो, अर ना मनै उथळो दे सक्यो। मनै मोकळी जूजळ आयी कै तू जीवी जित्तै मैं तनै क्यू नी पूछ्यो ! जे पूछतो, तो गायद तू सगळी बात सावळ बताय देंवती कै तू कुण ही, अर थारी इसी दसा कियां हुयी। पण जद मैं पूछ्यो कोनी, तो ओ दोस म्हारो है। खैर थारै सू तो हूं इत्ती ई माफी चाऊं कै थारो नांव मैं पट्टी माथली राख्यो इण री रीस ना करे, चावै तू इण लोक मैं है, अथवा परलोक में।

सवड़का-कोस

ई

ईसको = घापको, ईर्षा

उ

उकत = सूझ-बूझ

उदबुदो = घनोलो

उभाणा } = जिणा रै पगां में
उभराणा } पगरखी नईं हुवै।
उरबांणा।

उरळो मोरो

ऊ

ऊंटडनाप = ऊंठ जिता

ऊंटा = साढी तीन रो पाढो

ऊतावळ - मायावळ, ताकड़

ऊंदरा = मूसा

ऊंवाय लियो = उडेळ लियो

ऊवड़ी = खुली

ऊजळा राम-राम रालै = माथै सूं हात जोड़ै

ए

एकंडाण = लगातार

। = खास मवमर

ओ

ओमी - प्रमंभव

ओडी लपड़ी

ओडाळीज जावै = ढकीज जावै

ओपै = फबै, जचै

ओर = इत्यादि

ओळखीज जावै = पिछाण्या जावै

ओळभो = उपालंभ, ओळमो

औ

औस्या = ऊमर

क

कंठ-मिठाई = अर्द्धचन्द्र, गळो मालए

कचीड = मार

करार = ताकत

कळसिया = छोटा लोटा

कळदार = रुपिया

कम-वायरो = निमळो, कमजोर

काकर = कियां, कीकर, कूंकर

कांण = ईजत

कासो = जीमण खातर परुस्योड़ी थाळी या चीज

छिटका=छितरा, छींटका (रसिया)
छेईं=दूर, भागो

ज

जट=केश
जटका=टक, बध कर
जदपी=यद्यपि
जबरो=जबरदस्त
जलम-षाट्या=जन्माष्टमी
जलम रा देवाळ=पैदा करण वाळा
जानी=बराती
जावक=बिल्कुल
जामफळ=गुलाबजामुन
जामू=लोल
जीव सोरो=चित्त प्रसन्न
जुगाड=परबन्ध
जेट=तह
जोकड=विदूषक, हसावणियो

झ

झरवा=मिट्टी रा बर्ड मूंढे रा ठांव
झलै=सैंण हुवै
झिगत=बंस, माया-खप्पो

ट

टटो=श्राफत
टांको-टेभो=सीवणो, सिलाई
टाळो राखूं=माफ करूं, छोडूं
टीच=बीट
टीपाटीट=गैरी
टुणकलो म्हांस देवै=धीरे-सी'क कोय देवै
टूकली=निवलो, मांडली
टूकै=मांडै
टोकर=बडी घड़ी
टोगड छोरा=लूंठा छोरा
टोटो=तोड़ो, कमी
टोपो=बूंद, छांटो
टोळी=झुंड, झूमको

ठ

ठरडीजणो=घीसीजणो
ठरका=रौब
ठा=मालम
ठोकै भाग रैवै=खाली हाथ जावै
ठोठ=अणपढ
ठोला=आंगळी रै हाड सूं टोकणो

ड

डंको पीटै=सोभा करै

डबल=पइसो

डाकण=लुगाई जिण री घास लागै

डाव=दांवपेच

डुम=मुक्को

डोफो=डफोळ, मूरख

ढ

ढाढो=पसू, जिनावर

ढूं चा=साढी च्यार रो पाढो

त

तड़ीड़=घटीड़, भांगळघा सूं माथै रै ठोकणो

तपेली=देगची, पतैलो

तप्पड़=टाट

तमास्त-हमास्त=थारै-म्हारै जिसो

त्यामां=तिपायां

ताती=धळती, ऊनो

ताळ=देर, धार, उवार

तीन-घड़ा=सीरै-दाळ-चावळ या मूंग-चावळ आदि रो बडो भारी जीमण जिण में हजारूं बामण जीमैं, जीमायीजै

तेडो=बुलावो

तेतीसा मनावण्या=भागग्या

तेवतरी में=कोई हालत में

तौळियासर=एक गैरू

थ

थभलियो=छोटो थभो

थुई=ऊठ री पीठ माथै उछळोड़ो भाग

थुथकारो=चाख उतारण खातर न्हाख्योड़ा थूक रा छांटा अथवा किया

थेपड़या=कंडा, गोबरथां

द

दड़ाछंट=बिना अटके

दड़ियो=सऊर

दळियो=एक साधारण रंधीण, फालतू बात

दगो देयगी=मरगी

दाकल करदी=धमकी देयगी

दाय=पसन्द
दायजो=दहेज
दिपटी=ड्यूटी
दूधां भरी तळायां=घणो सुख
दोरा=तकलीफ में

ध

धड़ो=जात रो एक भाग
धाड़ेती=डाकू
धिरियाणी=मालकण, स्वामिनी
धुपाऊ=धुलाऊ

न

नवको होवै=निपटै
निमळो=कमजोर
निरवाळो=निश्चिन्त
नीठ-निरावळ=कठिणता सूं
नेती-धोती=कपड़ री डोरी आदि जिण सूं नाक, गळो अर पेट साफ करीजै
न्यार=घड़ै रै सोनां रो कीमत
न्याल=निहाल

प

पगलिया=छोटा पग
पढार=पाठक
पत=टेक
पथरणा=बिछावणा
परचूण=खुदरा
परचो=देवी-देवता रा बोल
परबार=ऊपरकर, अलावा
पलमी=भेद
पांगळो=पंगु, पगां बायरा
पांवडो=पग, कदम
पाछो पुरसणियो=उथळो देवणियो
पाड़=पहाड़
पाधरो=सीधो, झटपट
पारकी=पराई
पालते पगां=नंगा करणं पग री
पिछोकड़ो=घर रो लारलो पासो
पिरकरती=स्वभाव, आदत
पीलो पिटवा=करको टुटको पीलपा
पीसीजै=पचै, दुख उठावै
पुहब=पुष्प
पूरो हुवणो=मरणो
पेट रोवणो=भूखा मरणो
पेट लिकाड़ी=गुजराण

पैलपोत=प्रथम-बार
पो=प्याऊ
पोठा=गोबर
पोसाळ } =पाठशाळा
पोसवाळ }
पौंच=ताकत
पोळायी=सरू करी

फ

फदाक=छलांग
फिटन=फिटिंग
फुटरापो=सुन्दरता
फूटरो=सुन्दर
फेरा खावरा नै=ब्याव करण नै
फेरी=परिक्रमा
फोडा=तकलीफ
फोरसां=बदळसां

ब

बघेजदार=गठीलो
बईर=रवाना
बटको=चख
बडो ब्याव=मौत
'र=भुस'र

बरणाट=भष-भष
बरतीजायो=खतम हुयग्यो
बांवळियो=बबूल, बवूळ
बाई=बेटी, बैन
बाधा=तीणा
बाडो=करण-कट्ट
बाढणो=काटणो
बापडी=बिचारी, लायण
बावलियो=बाप
बायक=बोल, बैण, बचन
बाय डांग'र=बुरी तरै
बायरो=विहीन, विहूणो
बायाजी=एक देवी
बारला=बाहर आळा
बारणो=दरवाजो
बालो=प्यारो
बावडै=पाछा घिरै
बासी डील=बिना न्हांया
बिखो=दुख
बिचै=बनिस्बत
बिडगी=कानां में लूंग अटकयोडा
राखण री चकरी

बिरधो=बढोतरो, वृद्धि
बिलल्ली=मणसमझ
बीनणी=बऊ
बुरको लेंवता=घूमता
बूकियो=बाहु
बूथो=ताकत
बेकळू=बाळू रेत
बेज=सीणा, छेक
बेढवी पूडघा=मेवयोड़ी दाळ घाल'र बणायोड़ी पूड़घां
बेमेधा=बणगिणत
बेसी=घणा
बेली=बळधा री बध गाडी, रथ
बोला-बोला=चुपचाप

भ

भवर बाई साब=राजा री पोती
भचीड़=टक्कर
भचन्देणो=खड़कं सूं
भणी=पढ्योड़ी
भवा उड्योड़ी=हवा उड्योड़ी
भवे=खातर
भाग्यो=दड़बड़ायो
भाटो=पत्थर
भायो=बेटो
भिड़ते ई=झट
मिळताऊ=मिलणसार
मुंवाय दू=घूमाय दूं
भूंडो=खराब, माड़ो
भूत री ठीकरी में=चौबारै
भेळा=सागै
भोगळ=(बारणो ढकण खातर पागळ

म

मठ में बैठी मटका करै=घर मे बैठ बात बणा
मरजादा परसोतम=मर्यादा पुरुषोत्त
मसाणा=श्मसान
मसराइज्ड=मर्सराइज्ड, मखमली
मांटी=बीनणी खानला लोक
मांय मेलग्या=खायग्या
मां रै जायै जिसो=नागो
माईत=मां-बाप
माजनो भदरावै=ईज्जत्त बरावै
माणसो=मिनख, लोक

पैतपोत=प्रथम-वार
पो=प्याऊ
पोठा=गोबर
पोसाळ } =पाठशाळा
पोसवाळ }
पौंच=ताकत
पोळायो=सरू करी

फ

फदाक=छलांग
फिटन=फिटिंग
फुटरापो=सुन्दरता
फूटरो=सुन्दर
फेरा खावणा नैं=ब्याव करणा नैं
फेरी=परिक्रमा
फोडा=तकलीफ
फोरसो=बदळसो

ब

बपेअदार=गटीलो
बईर=रवाना
बटको=बस
बडो ब्याव=मोत
बर'र=बत'र
बरणाट=भच-भच
बरतीजग्यो=खतम हुयग्यो
बावळियो=बबूल, बंबूळ
बाई=बेटी, बैन
बाधा=लोणा
बाडो=करणा-कट्ट
बाढणो=काटणो
बापडी=विचारी, लाचार
बावलियो=बाप
बायक=बोल, बैण, बचन
बाय डाग'र=बुरी तरै
बायरो=विहीन, विहूणो
बायाजी=एक देवी
बारला=बाहर माळा
बारणो=दरवाजो
बालो=प्यारो
बावड़े=पाछा फिरै
बासो डोल=
बिखो=दुख
बिचै=
बिट

लादरा=धारही, बिचारी
लारै भावै जिवो=सुगाई
लावर=काठी भीणी खोड़णी
लिखमीनाथ=विष्णु, लछमीनाथ
लिगार=लेसक
लिलाड़=ललाट
लीरो=चीथरो
लुगड़ो=घोळो
लुळनाई=नम्रता
लूंकड़ी=लोमड़ी
लूंठा=जोरदार
लूंवो=लटकण
लूला=जिका रा हात बेकार हुवै
लेणायत=उधार दियोड़ा रुपिया पाछा मागण आळो
लोट=नोट
लोढ़ी=छोटी बऊ
ल्होमाइनो=फालतू विस्तार करणो

व

विसै=विषय

स

संगळिया=साथी
सगपण=संबंध
सटको मारणो=बात संवारणी
सट्टै=बदळै में
सफा=एकदम
समटावणो=समटणो, ब्याव पछै देज-लेज री प्रथा
सरधालै=मुर्ने-धाम
सरसा=मोरा, प्रसन्न
सानरी भांत=बोत आछी तरै
सांसो=आपत
साख भरै=सबूत देवै
सागीड़ो=घणो चोखो, सिरैकार
साटीफिगट=प्रमाण-पत्तर
सापतो=पूरो
सामलो=सामनै आळो
सायेरो=सहारो
सारु=खातर
साळ-संभाळ=देख-रेख
साव=जावक, बिल्कुल
सावळ=आछी तरै
सिणिया=एक तरै रो फूल
सीरख=सोड़

लायण=बापडी, बिचारी
लारै आवै जिकी=लुगाई
लालर=काळी झीणी ओढणी
लिखमीनाथ=विष्णु, लक्ष्मीनाथ
लिखार=लेखक
लिलाड=ललाट
लीरो=चीथरो
लुगदो=गोळो
लुळनाई=नम्रता
लूंकड़ी=लोमड़ी
लूंटा=जोरदार
लूबो=लटकण
लूला=जिकां रा हाथ बेकार हुवै
लैणायत=उधार दियोड़ा रुपिया पाछा मांगण वाळो
लोट=नोट
लोड़ी=छोटी बऊ
ल्होगारनो=पातळू विस्तार करणो

व

विसै=विषय

स

सगळिया=सापी
सगपण=संबंध
सटको सारणो=बात संवारणी
सट्टै=बदळै मे
सफा=एकदम
समठावणी=समझूणी, ब्याव पछै देज-लेज री प्रथा
सरवाळै=खुलै-आम
सरवां=सोरा, प्रसन्न
सांतरी भांत=बोत आछी तरै
सामो=आफत
साख भरै=सबूत देवै
सागीड़ो=घणो चोखो, सिरैकार
साटीपिगट=प्रमाण-पत्तर
सापतो=पूरो
सामली=सामनै वाळी
सायरो=सहारो
साह=सागर
साळ-संभाळ=देख-रेख
साव=बाबत, बिल्कुल
सावळ=आछी तरै
सिणिया=एक तरै रो घूस
सीरख=सोड़

सीरो=हलको
सूगली=घृणास्पद
सूरवार=नुकसान
सैंचनण=तेज
सैंधो=परिचित
सैंपूर=तेज
सेतरा-वेंतरा=स्तंभित
सोट=डांग, लाठी
सोवणा=सुन्दर, फूटरा
स्याणप=चतराई
स्याळ=सूवयोड़ो पसीनो, सियाळ

ह

हगाम=धंग
हठारो=पड़िया, निरट
हवेली=हेली, अट्टालिका
हाबी-हुंबी=जी-हजूरी
हाथा=हत्था
हाट, हाटडो=दुकान
हारम=दाबर
हालरियो-हूलरियो=बेटो
हेटै=नीचै
हेलो करणो=आवाज दो

: राजस्थानी प्रकाशन :

१. राजस्थानी व्याकरण
२. राजस्थानी गद्य : उद्भव और विकास
३. अचलदास खीची री वचनिका
४. हमीरायण
५. पद्मिनी चरित्र चौपई
६. दलपत विलास
७. डिंगळ गीत
८. पवार वंश दर्पण
९. हरिरस
१० पीरदान लालस ग्रन्थावली
११. महादेव पार्वती वेल
१२. सीताराम चौपई
१३ सदयवत्सवीर प्रबन्ध
१४. जिनराजसूरि कृति कुसुमांजलि
१५. कवि विनयचन्द कृति कुसुमांजलि
१६. जिन हर्ष ग्रन्थावली
१७. धर्मवर्द्धन ग्रन्थावली
१८. राजस्थान रा दूहा
१९. वीर-रस रा दूहा
२०. राजस्थानी नीति दूहा
२१. चंदायण
२२. राजस्थानी व्रत-कथाएं
२३ राजस्थानी प्रेम कथाएं
२४. दम्पति विनोद
२५ समयसुन्दर रासत्रय

नी रिसर्च इन्स्टीट्यूट
(राजस्थान)